हरियाली अमावस्या प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करने का पर्व

-केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान

मेरीखेती

अगस्त 2026 I मूल्य: ₹49

www.merikheti.com

विषय सूची

सम्पादकीय

सलाहकार मंडल

खेत खलिहान	06 - 12
बागवानी फसलें	14 - 24
मशीनरी	24 - 47
कृषि सलाह	47 - 53
पशुपालन-पशुचारा	53 - 60
सम्पादकीय	60 - 62

विज्ञापन के लिए संपर्क करें :
91-9899991906, 91-8800777501

संपादकीय

अगस्त का महीना – खरीफ फसलों की देखभाल, आधुनिक खेती और किसानों के लिए नए अवसर

अगस्त का महीना भारतीय कृषि के लिए बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है। यह वह समय होता है जब खरीफ फसलें खेतों में अच्छी तरह विकसित होने लगती हैं और किसानों की मेहनत का पहला परिणाम दिखाई देने लगता है। जुलाई में हुई बारिश के बाद अगस्त में खेतों की नियमित निगरानी, खरपतवार नियंत्रण, पोषक तत्वों का संतुलित प्रबंधन और कीट-रोगों से फसलों की सुरक्षा सबसे बड़ी प्राथमिकता बन जाती है। यही वह समय है जब किसान द्वारा लिया गया प्रत्येक सही निर्णय आने वाली उपज और मुनाफे को सीधे प्रभावित करता है।

इस वर्ष भी देश के अधिकांश हिस्सों में खरीफ फसलों की बुवाई लगभग पूरी हो चुकी है। धान, मक्का, सोयाबीन, कपास, मूंगफली, बाजरा और दलहनी फसलें अब बढ़वार की अवस्था में हैं। ऐसे में किसानों को केवल मौसम पर निर्भर रहने के बजाय वैज्ञानिक खेती की ओर कदम बढ़ाने की आवश्यकता है। मौसम में लगातार हो रहे बदलाव, अनियमित वर्षा और बढ़ते तापमान ने यह स्पष्ट कर दिया है कि पारंपरिक खेती के साथ आधुनिक तकनीक का समावेश अब समय की मांग बन चुका है।

अगस्त में सबसे बड़ी चुनौती खेतों में खरपतवार की होती है। वर्षा के कारण फसलों के साथ-साथ खरपतवार भी तेजी से बढ़ते हैं, जो पौधों से पोषक तत्व, पानी और धूप के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। यदि समय पर इनका नियंत्रण नहीं किया जाए तो उत्पादन में उल्लेखनीय कमी आ सकती है। किसान यांत्रिक, जैविक या रासायनिक किसी भी उपयुक्त विधि का चयन करके खरपतवार नियंत्रण करें, लेकिन यह कार्य फसल की अवस्था के अनुसार और विशेषज्ञों की सलाह के अनुरूप ही किया जाना चाहिए।

इसी प्रकार अगस्त में कीट एवं रोग प्रबंधन पर भी विशेष ध्यान देना आवश्यक है। अधिक नमी और उमस वाले वातावरण में फफूंदजनित रोगों के फैलने की संभावना बढ़ जाती है, जबकि कई प्रकार के कीट भी तेजी से सक्रिय हो जाते हैं। किसानों को नियमित रूप से खेत का निरीक्षण करना चाहिए और किसी भी समस्या के शुरुआती लक्षण दिखाई देने पर तुरंत उचित उपाय अपनाने चाहिए। समेकित कीट प्रबंधन (IPM) अपनाकर रासायनिक दवाओं के अनावश्यक उपयोग को कम किया जा सकता है, जिससे उत्पादन लागत घटती है और पर्यावरण भी सुरक्षित रहता है।

पोषक तत्वों का संतुलित प्रबंधन भी इस समय अत्यंत महत्वपूर्ण है। केवल यूरिया पर निर्भर रहने के बजाय मिट्टी परीक्षण के आधार पर नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटाश और सूक्ष्म पोषक तत्वों का संतुलित उपयोग करना चाहिए। जैव उर्वरकों, गोबर की खाद, वर्मी कम्पोस्ट और अन्य जैविक संसाधनों को भी खेती का हिस्सा बनाना आवश्यक है। इससे मिट्टी की उर्वरता लंबे समय तक बनी रहती है और फसल की गुणवत्ता में भी सुधार होता है।

इसके साथ ही पशुपालन, डेयरी, बकरी पालन, मत्स्य पालन और मधुमक्खी पालन जैसे सहायक कृषि व्यवसाय किसानों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। केवल एक फसल पर निर्भर रहने के बजाय यदि किसान मिश्रित खेती और बहुआयामी कृषि मॉडल अपनाते हैं, तो प्राकृतिक जोखिमों का प्रभाव भी कम होता है और पूरे वर्ष आय का स्रोत बना रहता है। यही कारण है कि आज कृषि विशेषज्ञ "एकीकृत कृषि प्रणाली" को भविष्य की खेती का आधार मान रहे हैं।

जल संरक्षण भी अगस्त महीने का एक महत्वपूर्ण विषय है। मानसून के दौरान वर्षा जल का अधिकतम संरक्षण भविष्य की सिंचाई आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करता है। खेत तालाब, फार्म पोंड, वर्षा जल संचयन, ड्रिप सिंचाई और स्प्रिंकलर जैसी तकनीकें जल उपयोग दक्षता बढ़ाने के साथ-साथ खेती को अधिक टिकाऊ बनाती हैं। आने वाले समय में जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए जल संरक्षण प्रत्येक किसान की प्राथमिकता होनी चाहिए।

श्री दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

कृष्ण पाठक
फाउंडर, मेरीखेती

डॉ एम सी शर्मा
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति आईवीआरआई इज्जतनगर

प्रो. ए पी सिंह
पूर्व कुलपति, वेटरनरी विश्व विद्यालय, मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ हरि शंकर गौड़
पूर्व कुलपति एसबीबीपीयूएटी, मेरठ, साइंटिस्ट, गलगोटिया विश्वविद्यालय

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त) उत्तर प्रदेश

डॉ उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर, राजस्थान

डॉ. अनिल कुमार सिंह
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा

डॉ एसके सिंह
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार

डॉ रितेश शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन (एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)

डॉ सी बी सिंह
एक्स – सीनियर साइंटिस्ट, IARI, पूसा

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

पूसा बासमती 1882: सूखे में भी बेहतरीन उत्पादन देने वाली भारत की पहली सूखा-सहिष्णु बासमती किस्म

देश में बदलते मौसम, अनियमित मानसून और लगातार गिरते भूजल स्तर ने धान उत्पादक किसानों के सामने नई चुनौतियां खड़ी कर दी हैं। विशेष रूप से बासमती धान की खेती करने वाले किसान पानी की कमी के कारण उत्पादन में गिरावट और आर्थिक नुकसान का सामना कर रहे हैं। ऐसे कठिन समय में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई), पूसा द्वारा विकसित पूसा बासमती 1882 किसानों के लिए एक नई उम्मीद बनकर सामने आई है। यह भारत की पहली मास-व्युत्पन्न (MAS-Derived) सूखा-सहिष्णु बासमती धान की किस्म है, जिसे खासतौर पर उन क्षेत्रों के लिए विकसित किया गया है, जहां बासमती धान की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है और समय-समय पर सूखे जैसी परिस्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं। पूसा बासमती 1882 की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह किस्म पानी की कमी या सूखे की स्थिति में भी अपनी उत्पादन क्षमता को काफी हद तक बनाए रखती है। इसके साथ ही, यदि इसे सामान्य सिंचित परिस्थितियों में उगाया जाए, तो यह किसानों को अधिक उपज प्रदान करने की क्षमता रखती है। इसी वजह से इसे वर्ष 2022 में केंद्रीय किस्म विमोचन समिति द्वारा अधिसूचित किया गया, जिसके बाद यह तेजी से किसानों के बीच लोकप्रिय हो रही है।

इन राज्यों के किसानों के लिए उपयुक्त है यह किस्म

पूसा बासमती 1882 को मुख्य रूप से उत्तर और उत्तर-पश्चिम भारत के पारंपरिक बासमती उत्पादक क्षेत्रों के लिए विकसित और अनुशंसित किया गया है। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बासमती उगाने वाले किसान इस किस्म की खेती करके बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। इन क्षेत्रों की जलवायु और मिट्टी को ध्यान में रखते हुए वैज्ञानिकों ने इस किस्म को विकसित किया है, ताकि किसान बदलते मौसम की परिस्थितियों में भी अपनी फसल की उत्पादकता

बनाए रख सकें।

कम समय में तैयार होने वाली अधिक उत्पादन देने वाली किस्म

पूसा बासमती 1882 खरीफ सीजन की एक उन्नत बासमती किस्म है, जो औसतन 135 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसकी सामान्य औसत उपज लगभग 46.9 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जबकि अनुकूल परिस्थितियों, उचित पोषण प्रबंधन और समय पर सिंचाई के साथ यह किस्म 59.7 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उत्पादन देने की क्षमता रखती है। यह किस्म मुख्य रूप से सिंचित परिस्थितियों में खेती के लिए तैयार की गई है, लेकिन अचानक पानी की कमी होने पर भी इसकी उत्पादन क्षमता अन्य सामान्य बासमती किस्मों की तुलना में काफी बेहतर रहती है।

आधुनिक तकनीक से विकसित की गई है यह बासमती किस्म

पूसा बासमती 1882, लोकप्रिय बासमती किस्म पूसा बासमती 1 का ही एक उन्नत और आधुनिक संस्करण है। इसे विकसित करने के लिए वैज्ञानिकों ने आधुनिक प्रजनन तकनीकों का उपयोग करते हुए इसमें qDTY 1.1 नामक विशेष क्यूटीएल (QTL) जीन को शामिल किया है। यह जीन पौधे को विशेष रूप से उस समय सूखे का सामना करने की क्षमता प्रदान करता है, जब फसल अपने प्रजनन चरण में होती है और उसमें बालियां निकल रही होती हैं। सामान्यतः यही वह अवस्था होती है, जब पानी की कमी होने पर धान की उपज पर सबसे अधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

सूखे में लगभग दोगुनी उपज देने की क्षमता

इस किस्म की प्रभावशीलता को जांचने के लिए वैज्ञानिकों ने कृत्रिम सूखे की स्थिति वाले रेन आउट शेल्टर में इसका परीक्षण किया। परीक्षण के दौरान पारंपरिक पूसा बासमती 1 की औसत उपज केवल 496 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर दर्ज की गई, जबकि नई पूसा बासमती 1882 ने लगभग 987.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की शानदार औसत उपज दी। यह परिणाम दर्शाता है कि यह किस्म सूखे की परिस्थितियों में भी लगभग दोगुनी उपज देने की क्षमता रखती है। यही कारण है कि इसे जलवायु परिवर्तन के दौर में बासमती किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण तकनीकी उपलब्धि माना जा रहा है।

सामान्य परिस्थितियों में भी अधिक उत्पादन

पूसा बासमती 1882 केवल सूखे की स्थिति में ही बेहतर प्रदर्शन नहीं करती, बल्कि सामान्य सिंचित परिस्थितियों में भी यह अपनी मूल किस्म पूसा बासमती 1 की तुलना में लगभग 10.26 प्रतिशत अधिक उत्पादन देती है। इसका मतलब यह है कि जिन किसानों के पास पर्याप्त सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है, वे भी इस किस्म को अपनाकर अधिक उत्पादन और बेहतर आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

किसानों के लिए क्यों फायदेमंद है पूसा बासमती 1882?

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन, अनिश्चित वर्षा और लगातार घटते भूजल स्तर को देखते हुए पूसा बासमती 1882 किसानों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। यदि फसल के दौरान अचानक पानी की कमी हो जाती है, तब भी यह किस्म अपनी उत्पादन क्षमता को बनाए रखने में सक्षम रहती है, जिससे किसानों की लागत डूबने की संभावना कम हो जाती है।

कम समय में तैयार होने, कम पानी में भी बेहतर प्रदर्शन करने और अधिक उपज देने की क्षमता के कारण यह किस्म बासमती उत्पादकों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। यही वजह है कि पूसा बासमती 1882 को आने वाले वर्षों में बासमती खेती के लिए एक टिकाऊ, लाभकारी और जलवायु-अनुकूल विकल्प के रूप में देखा जा रहा है।

MASSEY FERGUSON

TAFE 65 YEARS

MASTER OF PUDDLING

7052 L

SPLASH PROTECT FENDER

FULLY SEALED 4WD FRONT AXLE

20% LESSER WEIGHT COMPARED TO TRADITIONAL 4WD TRACTORS

बंपर पैदावार के लिए धान की बुवाई को लेकर कृषि विभाग की खास सलाह

धान की खेती भारत के किसानों की आय का मुख्य स्रोत है, देश के अधिकतर स्थानों पर धान की खेती की जाती है। इस बार बंपर पैदावार के लक्ष्य को देखते हुए कृषि विभाग ने धान की बुवाई को लेकर कुछ अहम सुझाव और सावधानियां जारी की हैं। यदि किसान बीज बोने से पहले खेत की तैयारी और बीज का उपचार सही तरीके से करें, तो उन्हें न केवल अच्छी उपज मिलती है, बल्कि फसल बीमारियों और कीटों से भी सुरक्षित रहती है। समय पर और वैज्ञानिक तरीके से बीजोपचार एवं बुवाई करने से न केवल उत्पादन बढ़ाया जा सकता है, बल्कि फसल की गुणवत्ता भी बेहतर बनाई जा सकती है। आइए जानते हैं कि किन बातों का ध्यान रखकर किसान धान की खेती से अधिक उपज प्राप्त कर सकते है

धान की खेती के लिए खेत की तैयारी

धान के बीज बोने से पहले खेत की जुताई अच्छे से करनी चाहिए। इससे मिट्टी नरम होती है और बीज अंकुरण में मदद मिलती है। इसके बाद खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए प्रति एक कट्ठा (करीब 3 डिसमिल) क्षेत्र में 1.5 किलोग्राम डीएपी (DAP) और 2 किलोग्राम पोटाश डालें। इससे पौधे को शुरुआती विकास के लिए जरूरी पोषक तत्व मिलते है। साथ ही, खेत में सड़ी हुई गोबर की खाद, 10 किलोग्राम वर्मी कंपोस्ट और 2 से 3 किलोग्राम नीम की खली मिलाने से मिट्टी की जैविक गुणवत्ता सुधरती है और हानिकारक कीटों से सुरक्षा मिलती है। इन सभी सामग्री को मिलाने के बाद खेत को समतल कर लें और उसमें छोटे-छोटे बेड (क्यारी) तैयार करें, जिनमें बीज बोए जाएंगे।

बीज का उपचार क्यों और कैसे करें?

खेती में बीज उपचार बहुत अहम होता है। इससे बीज फफूंद, कीट और रोगों से सुरक्षित रहता है और अंकुरण दर बढ़ती है। धान के 30 किलोग्राम बीजों के लिए 100 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड और 6 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन को पानी में मिलाकर 5-6 घंटे के लिए भिगो दें। इसके अलावा, बीज को कीड़ों से बचाने के लिए 250 मिलीलीटर क्लोरपाइरिफॉस (20% घोल) का छिड़काव भी जरूरी है। उपचारित बीजों को किसी छायादार स्थान पर प्लास्टिक शीट पर फैलाकर गीले जूट के बोरे से ढक कर रखें।

घास और खरपतवार से ऐसे करें बचाव

धान की नर्सरी में उगने वाली घास और खरपतवार फसल को नुकसान पहुंचा सकती हैं। इनके नियंत्रण के लिए पाइराजोसल्फ्यूरान ईथाइल नामक घुलनशील चूर्ण का प्रयोग करें। इसे पानी में घोलकर बालू में मिलाएं और इस मिश्रण को खेत में नर्सरी से पहले छिड़क दें। इससे खरपतवार अंकुरण नहीं होगा और फसल को पर्याप्त पोषण मिलेगा।

ककोड़ा की खेती कैसे करें : जानें खेती का सही तरीका, होगा अधिक मुनाफा

ककोड़ा की खेती कैसे करें

ककोड़ा, जिसे विभिन्न क्षेत्रों में खेख्सा भी कहा जाता है, कद्दू वर्गीय एक बहुवर्षीय लता है। यह पौधा भारत के जंगलों, पहाड़ी इलाकों और शुष्क क्षेत्रों में स्वाभाविक रूप से पाया जाता है। इसकी खासियत यह है कि यह बिना विशेष देखभाल और प्रबंधन के भी अच्छी उपज देता है। यही कारण है कि इसे अर्ध-पारंपरिक और वाणिज्यिक खेती, दोनों के लिए उपयुक्त माना जाता है। kakoda ki kheti, किसानो के लिए आय का अच्छा स्त्रोत हो सकती है। इस फसल का एक और विशेष गुण यह है कि इसके मादा पौधों से लगातार 8–10 वर्षों तक उपज मिलती रहती है। यानी एक बार पौधे की स्थापना कर देने के बाद लंबे समय तक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। इसके फल का प्रयोग सब्ज़ी, अचार और विभिन्न औषधीय उत्पादों के निर्माण में किया जाता है।

ककोड़ा के औषधीय गुण

ककोड़ा केवल खाद्य फसल ही नहीं, बल्कि एक औषधीय पौधा भी है। आयुर्वेद में इसके अनेक चिकित्सीय उपयोग बताए गए हैं।

- यह कफ, खांसी, पाचन संबंधी विकार, वात-पित्त संतुलन और हृदय रोगों में लाभकारी माना जाता है।
- इसकी जड़ें बवासीर, मूत्र विकार और बुखार के उपचार में उपयोगी होती हैं।
- मधुमेह के रोगियों के लिए यह फायदेमंद है क्योंकि यह रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने में मदद करती है।
- यह शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाता है।
- इसकी पत्तियां और फल दोनों ही औषधीय उपयोग के लिए काम आते हैं, इसलिए इसका महत्व और भी बढ़ जाता है।

ककोड़ा की खेती का आर्थिक महत्व

ककोड़ा की बाजार में अच्छी मांग रहती है। ताजे फलों की कीमत लगभग ₹90–100 प्रति किलोग्राम तक मिलती है। यदि किसान इसके फलों का प्रसंस्करण (processing) कर सुखाए हुए फल, अचार, या अन्य मूल्यवर्धित उत्पाद बनाएं तो इसकी कीमत और भी अधिक मिल सकती है।

कम लागत और कम देखभाल में उच्च लाभ देने वाली यह फसल किसानों को पारंपरिक फसलों का एक मजबूत विकल्प प्रदान करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी संगठित खेती और प्रोसेसिंग से किसान अपनी आय में उल्लेखनीय वृद्धि कर सकते हैं।

ककोड़ा की खेती में अनुकूल जलवायु और मिट्टी

- ककोड़ा गर्म और आर्द्र (नमी वाली) जलवायु में बेहतर उत्पादन देता है।
- इसे 1500–2500 मिमी वर्षा और 20–30°C तापमान वाले क्षेत्र अनुकूल लगते हैं।
- अच्छी जल निकासी वाली, कार्बनिक पदार्थों से भरपूर रेतीली-दोमट मिट्टी इसकी वृद्धि के लिए सबसे उपयुक्त होती है।
- मिट्टी का pH 6.0–7.0 होना चाहिए। अधिक अम्लीय मिट्टी पौधों की वृद्धि को प्रभावित कर सकती है।

ककोड़ा की बुवाई का समय एवं विधि

- ककोड़ा की बुवाई का सर्वोत्तम समय जून से जुलाई तक होता है।
- इसकी खेती बीज एवं वानस्पतिक (root tuber) दोनों विधियों से की जाती है, परंतु जड़ कंद से प्रवर्धन अधिक सफल और उच्च उपज देने वाला होता है।
- पौधों को 2×2 मीटर की दूरी पर रोपित किया जाता है।
- प्रत्येक 4×4 मीटर क्षेत्र में 1 नर पौधा और 8 मादा पौधे लगाने से परागण एवं उत्पादन दोनों बेहतर होते हैं।

ककोड़ा की उन्नत किस्में

भारत में विकसित की गई कुछ ककोड़ा की उन्नत किस्में इस प्रकार हैं:

- इंदिरा कंकोड़-1
- अम्बिका-12-1
- अम्बिका-12-2
- अम्बिका-12-3

ककोड़ा की उन्नत किस्में रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक रखती हैं और वाणिज्यिक खेती के लिए उपयुक्त हैं।

बीज मात्रा

- अच्छे अंकुरण (70–80%) वाले बीज का चयन जरूरी है।
- सामान्यत: 8–10 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त माना जाता है।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

अंतिम जुताई के समय प्रति हेक्टेयर 200–250 क्विंटल गोबर की खाद डालना लाभकारी है।

इसके अतिरिक्त रासायनिक उर्वरकों की मात्रा इस प्रकार रखी जाती है:

यूरिया – 65 किलोग्राम
सिंगल सुपर फॉस्फेट (SSP) – 375 किलोग्राम
म्यूरेट ऑफ पोटाश (MOP) – 67 किलोग्राम

सिंचाई और खरपतवार नियंत्रण

- बुवाई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई करनी चाहिए।
- बरसात में अतिरिक्त सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती, परंतु लंबे समय तक सूखे की स्थिति में सिंचाई आवश्यक है।
- जलभराव से बचाने के लिए खेत में उत्तम जल निकासी की व्यवस्था होनी चाहिए।
- 2–3 बार निराई-गुड़ाई कर खरपतवार को नियंत्रित किया जा सकता है।

कीट एवं रोग प्रबंधन

ककोड़ा पर सामान्यतः रोगों का प्रभाव कम देखा जाता है, लेकिन फल मक्खी हानिकारक साबित हो सकती है। इसके नियंत्रण हेतु – इमिडाक्लोप्रिड या क्विनालफॉस 25 ईसी की 2–3 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव किया जाता है।

पौधों को सहारा देना (स्टेकिंग)

- बेहतर फलन और गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिए पौधों को सहारा देना आवश्यक है। इसके लिए बांस, सूखी लकड़ी या लोहे के एंगल का प्रयोग कर जालीनुमा संरचना बनाई जाती है।
- यह संरचना 5–6 फीट ऊंची और लगभग 4

फीट चौड़ी होनी चाहिए, ताकि बेलें आसानी से फैल सकें और भरपूर उत्पादन दे सकें।

निष्कर्ष

ककोड़ा की खेती किसानों के लिए एक कम लागत, लंबी अवधि और अधिक मुनाफा देने वाला विकल्प है। यह केवल खाद्य और पोषण संबंधी महत्व ही नहीं रखता, बल्कि औषधीय गुणों के कारण इसकी मांग बाजार में लगातार बनी रहती है। यदि इसकी संगठित खेती, प्रसंस्करण और विपणन प्रणाली विकसित की जाए तो यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने और किसानों की आय दोगुनी करने में बड़ी भूमिका निभा सकता है।

दूधिया मशरूम की खेती करके आप भी कमा सकते हैं लाखों रुपये

वर्तमान में देश के किसान विभिन्न प्रकार की खेती कर अधिक लाभ कमाने में रुचि दिखा रहे हैं। पिछले कुछ सालों में किसानों ने मशरूम की खेती की ओर रुचि दिखाई है। हालांकि मशरूम की कई किस्में होती हैं, लेकिन भारत में बटन मशरूम के बाद दूधिया मशरूम, जिसका वैज्ञानिक नाम कैलोसाईबीइंडिका (Calosibindica) है, सबसे ज्यादा उगाया जाता है। दूधिया मशरूम बटन मशरूम की तरह दिखता है, लेकिन इसका तना मोटा, भारी और लंबा होता है। इसमें बहुत सारे विटामिन, खनिज और प्रोटीन होते हैं, और यह कम जगह पर अधिक मुनाफा देने वाली फसल है, जिसको लंबे समय तक स्टोर किया जा सकता है।

दूधिया मशरूम की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

दूधिया मशरूम को अधिक तापमान चाहिए। इसलिए इसे अधिक तापमान वाले स्थानों पर उगाना चाहिए। इसकी खेती के लिए कवकों के प्रसार और बीज उगाने के लिए 25-35 डिग्री तापमान और 80 से 90 प्रतिशत नमी की आवश्यकता होती है। मशरूम को केसिंग परत लगाने और उत्पादन करने के लिए 30 से 35 डिग्री तापमान और 80 से 90 प्रतिशत नमी चाहिए। उच्च तापमान पर दूधिया मशरूम की पैदावार अच्छी होती है। 38 से 40 डिग्री तक का तापमान इसके लिए सबसे अच्छा होता है।

भूसा या पुआल पर कर सकते हैं खेती

दूधिया मशरूम भी विभिन्न प्रकार की फसलों के अवशेषों पर आसानी से उगाया जा सकता है, जैसे ज्वार, पुआल, गन्ने की खोई, बाजरा, मक्का की कड़वी और भूसा। दूधिया मशरूम की खेती में भूसा या पुआल का अधिक उपयोग होता है। उत्पादन कक्ष की साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दें।

कमा सकते हैं लाखों का मुनाफा

जब दूधिया मशरूम की टोपी 5 से 6 से.मी. मोटी हो जाए, तो उसे पका हुआ मान लें और घुमाकर तोड़ें। तने के मिट्टी लगे निचले हिस्से को काट लें और पॉलिथीन बैग में चार से पांच छेद करके पैक करें। 1 किलोग्राम सूखे भूसे से 1 किलोग्राम ताजा मशरूम तैयार होता है। इसकी खेती की लागत 10 से 15 रुपये प्रति किलोग्राम होती है, जबकि बाजार मूल्य 150 से 250 रुपये प्रति किलो है। इस प्रकार किसान कम लागत पर अधिक मुनाफा कमा सकते हैं।

लगे हटके
करे हटके

बोल्ड एंड ब्लैक

DIGITRAC
PP43i

37.3 kW श्रेणी
50 HP श्रेणी

अंगूर में लगने वाले प्रमुख रोग लक्षण और प्रबंधन के उपाय

अंगूर में लगने वाले प्रमुख रोग

अंगूर के बाग में कीटों के साथ साथ रोगों का भी प्रकोप होता है। रोगों के कारण अंगूर की उपज में काफी हद तक कमी आती है। अंगूर की बीमारियों मुख्य रूप से मौसम की स्थिति, इनोकुलम (बीमारी का इतिहास) की उपस्थिति और बेलों की संवेदनशीलता पर निर्भर करती है। इसका मतलब है कि एक बीमारी एक साल में विनाशकारी हो सकती है। इस लेख में हम आपको अंगूर में लगने वाले प्रमुख रोग, लक्षण और प्रबंधन के उपाय के बारे में जानकारी देंगे।

डाउन मिल्ड्यू (Downy Mildew): Plasmopara viticola

लक्षण:

रोग से प्रभावित पत्तियों की ऊपरी सतह पर अनियमित, पीले, पारदर्शी धब्बे दिखाई देते हैं। इसके अनुरूप, निचली सतह पर सफेद, पाउडर जैसा फफूंदीयुक्त विकास देखा जाता है। प्रभावित पत्तियाँ पीली होकर भूरी पड़ जाती हैं और सूख जाती हैं। समय से पहले पत्तों का गिरना (defoliation) होता है। कोमल शाखाओं का रुक जाना या बौना रह जाना। तनों पर भूरे और गहरे धंसे हुए धब्बे बनते हैं। बेरी (फलियों) पर सफेद फफूंदी दिखाई देती है, जो बाद में चमड़े जैसी होकर सिकुड़ जाती है। यदि बाद में संक्रमण होता है तो फलों में सड़न दिखाई देती है, लेकिन फल की त्वचा फटती नहीं है।

प्रबंधन:

- इस रोग से रोकथाम के लिए बोर्डो मिश्रण 1% या मेटालेक्सिल + मैंकोजेब 0.4% का छिड़काव करें।
- रोग से प्रभावित भागों को काट कर मिट्टी में दबा दे।

पाउडरी मिल्ड्यू (Powdery Mildew): Uncinula necator

लक्षण

पत्तियों की ऊपरी सतह पर सफेद चूर्ण जैसा फफूंद विकसित होता है। पत्तियों का आकार बिगड़ जाता है और रंग बदल जाता है। तना गहरा भूरा हो जाता है। फूलों पर संक्रमण होने से फूल झड़ जाते हैं और फल कम बनते हैं।

यदि शुरुआती अवस्था में बेरी संक्रमित होती है तो वह झड़ जाती है। पुराने फलों पर चूर्ण जैसा विकास साफ दिखाई देता है और संक्रमण के कारण फल की त्वचा फट जाती है।

प्रबंधन:

इस रोग से बचाव के लिए इनऑर्गेनिक सल्फर 0.25% या किनोमेथियोनेट 0.1% या डाइनोकैप 0.05% का छिड़काव करें।

एन्थ्रेक्नोज Gloeosporium ampelophagum

लक्षण:

यह रोग सबसे पहले फलों पर गहरे लाल धब्बों के रूप में दिखाई देता है। बाद में ये धब्बे गोलाकार, धंसे हुए, राख जैसे भूरे हो जाते हैं और उनके चारों ओर गहरे रंग की सीमा बन जाती है, जिससे यह "बर्ड्स-आई रॉट" जैसा प्रतीत होता है। धब्बों का आकार 1/4 इंच से लेकर फल के आधे हिस्से तक हो सकता है। यह फफूंद तने, टेंड्रिल, पत्तियों की नसों और डंठलों को भी प्रभावित करती है। युवा तनों पर कई धब्बे दिखाई देते हैं जो आपस में मिलकर तने को घेर लेते हैं और उसका ऊपरी भाग मर जाता है। पत्तियों और डंठलों पर धब्बों के कारण वे मुड़ जाते हैं या विकृत हो जाते हैं। इन रोगों का प्रमुख प्रभाव अंगूर की उपज और गुणवत्ता पर पड़ता है। विशेषकर यदि रोग का प्रारंभिक अवस्था में पता न लगाया जाए, तो यह पूरी फसल को नुकसान पहुँचा सकता है।

डाउन मिल्ड्यू नम और आद्र्र जलवायु में तेजी से फैलता है जबकि पाउडरी मिल्ड्यू शुष्क और गर्म परिस्थितियों में सक्रिय होता है। बर्ड्स-आई स्पॉट विशेष रूप से गीले मौसम में अधिक फैलता है।

समय-समय पर बाग की निगरानी, रोगग्रस्त भागों को काटकर हटाना, रोग प्रतिरोधी किस्मों का चयन करना और उचित छिड़काव कार्यक्रम अपनाना बहुत आवश्यक है।

जैविक विकल्पों में नीम आधारित उत्पाद या ट्राइकोडर्मा जैव फफूंदनाशी का भी उपयोग किया जा सकता है। रासायनिक दवाओं का प्रयोग करते समय उनके अनुशंसित मात्रा और छिड़काव के समय का पालन अवश्य करें, ताकि फसल और पर्यावरण दोनों सुरक्षित रहें।

सदाबहार की खेती कैसे होती है और इसका क्या महत्व है

सदाबहार एक बहुवर्षीय (बार-बार फलने वाला) सजावटी औषधीय पौधा है, जो भारतभर में परती भूमि और रेतीली जगहों पर पाया जाता है। सदाबहार की जड़ो में इंडोल एल्कलॉइड्स – रॉबसिन (अजमालिसिन) और सर्पेंटिन होते है जो की इसे एक औषधीय पौधा बनाते है, इसकी खेती भारत में कई स्थानों पर की जाती है, इस लेख में हम आपको सदाबहार के गुणों और इसकी खेती से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

सदाबहार में पाए जाने वाले एल्कलॉइड्स

सदाबहार में एंटी-फाइब्रिलिक और हाई ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने वाले गुण होते हैं। इसके पत्तों में विनब्लास्टिन और विनक्रिस्टिन नामक दो महत्वपूर्ण एल्कलॉइड्स पाए जाते हैं, जो पेटेंट किए गए कैंसर की दवाओं के प्रमुख घटक हैं।

विनक्रिस्टिन एल्कलॉइड्स पौधे के विभिन्न भागों में पाए जाते हैं, लेकिन सबसे अधिक मात्रा में इसकी जड़ों में (0.75% से 1.20% तक) और फिर पत्तियों में (0.60% से 0.65% तक) पाए जाते हैं।
विनक्रिस्टिन सल्फेट को ओनकोविन (ONCOVIN) नामक व्यापारिक नाम से बेचा जाता है, जो एक्यूट ल्यूकेमिया (ब्लड कैंसर) के इलाज में उपयोग होता है। वहीं विनब्लास्टिन सल्फेट को वेल्बे (VELBE) नाम से हॉजकिन्स डिज़ीज़ के इलाज में प्रयोग किया जाता है।

सदाबहार के उपयोग से किन बीमारियों का इलाज होता है

1. पत्तियाँ ब्लड कैंसर के इलाज में उपयोगी हैं।
2. पत्तियाँ माहवारी संबंधी विकारों और मधुमेह (डायबिटीज़ मेलिटस) के इलाज में सहायक।
3. पत्तियों और जड़ों का काढ़ा उच्च रक्तचाप पर प्रभावी होता है।
4. जड़ें हाई ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने में सहायक हैं।

सदाबहार का उत्त्पति स्थानों और उत्पादन

सदाबहार के पौधे की उत्पति मेडागास्कर में मानी जाती है और वहीं से ये पौधा भारत, इंडोनेशिया, इंडो-चीन, फिलीपींस, दक्षिण अफ्रीका, इज़राइल, अमेरिका और दुनिया के अन्य हिस्सों में फैला है। भारत में यह मुख्यतः तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात और असम में लगभग 3000 हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया जा रहा है। अमेरिका इस पौधे का सबसे बड़ा उपयोगकर्ता है और एक अकेली कंपनी जिसके पास विनब्लास्टिन और विनक्रिस्टिन सल्फेट के उत्पादन का पेटेंट है, वह हर साल 1000 टन से अधिक पत्तियाँ उपयोग करती है। पश्चिम जर्मनी, इटली, नीदरलैंड्स और यूनाइटेड किंगडम इसकी जड़ों में रुचि रखते हैं, और इन देशों से जड़ों की कुल माँग 1000 टन से अधिक प्रति वर्ष है।

सदाबहार का पौधा दिखने में कैसा होता है?

सदाबहार एक बहुवर्षीय जड़ी-बूटी है, जिसे आमतौर पर इसके गुलाबी और सफेद फूलों के लिए बाग-बगीचों में उगाया जाता है। इसके फूल साल भर खिलते रहते हैं। यह पौधा लंबी और लचीली शाखाओं वाला होता है, जिसकी पत्तियाँ साधारण और विपरीत दिशा में होती हैं। फूल 2-3 की संख्या में, साइम्स में, कांखीय (axillary) और अंत (terminal) गुच्छों में आते हैं। सदाबहार का फल लंबा बेलनाकार फली जैसा होता है जिसमें कई काले बीज होते हैं।

सदाबहार की बुवाई के तरीके

सदाबहार की बुवाई की तरीको से की जाती है इसकी बुवाई के तरिके निम्नलिखित दिए गए है -

सदाबहार की सीधी बुवाई

यह विधि उन बड़े क्षेत्रों के लिए सबसे उपयुक्त है जहाँ मज़दूरी महँगी होती है, क्योंकि यह उत्पादन लागत को कम करती है। भूमि को दो बार जुताई कर अच्छी तरह भुरभुरी (fine tilth) बनाई जाती है। खेत से खरपतवार, पराली और कंकड़ आदि हटा दिए जाते हैं। इसके बाद खेत को सुविधाजनक आकार के टुकड़ों में बाँट दिया जाता है और मिट्टी में सिफारिश की गई मात्रा में खाद और उर्वरक मिला दिए जाते हैं।

बीजों की बुवाई

बीजों की बुवाई मानसून की शुरुआत (जून-जुलाई) में की जाती है। बीजों की मात्रा लगभग 2.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर होती है। बीजों को पंक्तियों में 30 से 45 सेमी की दूरी पर छिड़का जाता है और हल्की मिट्टी से ढक दिया जाता है। बीज बहुत छोटे होते हैं, इसलिए इन्हें बालू (रेत) के साथ इनके वजन से लगभग 10 गुना मिलाकर बुवाई की जाती है, ताकि वितरण आसान हो। अंकुरण लगभग 7–8 दिन में होता है।अंकुरण पूर्ण होने पर पंक्ति के भीतर पौधों को 30–40 सेमी की दूरी पर thinning (छंटाई) कर दिया जाता है। इस विदी में फूल आना बुवाई के

40–45 दिन बाद शुरू हो जाता है।

सदाबहार की नर्सरी तैयार करना और रोपाई (Nursery Preparation and Transplanting)

जब बीज की उपलब्धता कम हो, तब इस विधि का प्रयोग किया जाता है। प्रत्यक्ष बुवाई की तुलना में इस विधि में स्वस्थ और तेज़ी से बढ़ने वाले पौधों का चयन किया जा सकता है और कमजोर पौधों को हटा दिया जाता है।

1. नर्सरी बुवाई:

बीजों को मार्च–अप्रैल में 8–10 सेमी की दूरी पर बनी ऊँची क्यारी में लगभग 1.5 सेमी गहराई में बोया जाता है। 500 ग्राम बीज पर्याप्त होते हैं 1 हेक्टेयर क्षेत्र के लिए पौधे तैयार करने हेतु।

2. रोपाई:

अंकुरण के दो महीने बाद पौधे रोपाई के लिए तैयार हो जाते हैं। इन्हें खेत में 45 x 30 सेमी की दूरी पर लगाया जाता है। इस तरह 74,000 पौधे प्रति हेक्टेयर लगाए जा सकते हैं।

सदाबहार का शाकीय प्रवर्धन (Vegetative Propagation)

सदाबहार बुवाई की इस विधि में सहज शाखाओं (lateral shoots) से लिए गए कोमल कटिंग्स (softwood cuttings) सबसे अच्छे माने गए हैं, क्योंकि यह कठोर या अर्ध-कठोर कटिंग्स की तुलना में अधिक सफल होते हैं।

कटिंग्स की विशेषताएँ:

- लंबाई: 10–15 सेमी
- कम से कम 5–6 गांठें (nodes)
- जड़ बनने की दर लगभग 90%
- यदि इन्हें 25 या 50 ppm की NAA (नेफथलीन एसीटिक एसिड) घोल में रातभर भिगोया जाए तो जड़ बनने की दर 96% तक पहुँच सकती है।

यह विधि उन क्लोनों के प्रचार में उपयोगी है जिनमें एल्कलॉइड की मात्रा अधिक होती है या केवल बीज उत्पादन के लिए पौधे तैयार करने होते हैं।

सदाबहार के प्रकार और किस्में (Types and Varieties)

सदाबहार की तीन मुख्य किस्में पाई जाती हैं:

1. गुलाबी बैंगनी फूल (Roseus)
2. सफेद फूल (Alba)
3. सफेद फूल, केंद्र में गुलाबी बैंगनी धब्बा (Ocilatta)

इनमें से पहली किस्म (Roseus) को अधिक एल्कलॉइड सामग्री के कारण उगाया जाता है। हाल ही में सीमैप (CIMAP), लखनऊ द्वारा दो सफेद फूलों वाली किस्में "निर्मल" और "धवल" विकसित की गई हैं, जो सक्रिय तत्वों में बराबर होते हुए भी अधिक जैव द्रव्यमान (biomass) देती हैं।

सदाबहार के पौधों में खाद और उर्वरक प्रबंधन (Manures and Fertilizers)

- एफ.वाई.एम (गोबर की खाद): 10–15 टन प्रति हेक्टेयर
- यदि सिंचाई की सुविधा हो तो हरी खाद की फसल उगाकर फूल आने पर उसे खेत में मिला सकते हैं।
- यदि जैविक खाद उपलब्ध न हो, तो:
- 20 किलो नाइट्रोजन (N)
- 30 किलो फास्फोरस (P_2O_5)
- 30 किलो पोटाश (K_2O) प्रति हेक्टेयर बेसल डोज के रूप में दें।
- साथ ही, 20 किलो नाइट्रोजन को दो बराबर भागों में टॉप ड्रेसिंग के रूप में देना चाहिए।

सदाबहार में सिंचाई (Irrigation)

जिन क्षेत्रों में वर्षा वर्ष भर समान रूप से होती है, वहाँ पौधों को सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती।

WIDER PLATFORM WITH DOUBLE FOOTSTEP

Enhances operator comfort

3630 TX Plus+

Special Edition

लेकिन जहाँ वर्षा केवल कुछ महीनों तक सीमित रहती है, वहाँ 4-5 बार सिंचाई करने से पौधों की उपज अधिक और बेहतर होती है।

सदाबहार की खेती में खरपतवार नियंत्रण (Weed Control)

फसल की प्रारंभिक वृद्धि अवस्था में दो बार निराई-गुड़ाई की आवश्यकता होती है:

- पहली निराई: बुवाई के लगभग 60 दिन बाद
- दूसरी निराई: बुवाई के 120 दिन बाद

इसके अतिरिक्त, खेत में कटी हुई घास या धान का पुआल (rice straw) बिछाकर मल्चिंग करने से भी खरपतवारों की वृद्धि को कम किया जा सकता है।

सदाबहार की कटाई और प्रसंस्करण (Harvesting and Processing)

1. पत्तियाँ, तना और बीज:

- पहली बार पत्तियाँ तोड़ना: बुवाई के 6 महीने बाद
- दूसरी बार पत्तियाँ तोड़ना: बुवाई के 9 महीने बाद
- तीसरी बार पत्तियाँ: पूरे पौधे की कटाई के समय
- कटाई के बाद पौधों को छाया में सुखाया जाता है।

2. जड़ें:

- फसल की 12 महीने बाद कटाई की जाती है।
- पौधों को जमीन से लगभग 7.5 सेमी ऊपर से काटा जाता है और तना, पत्तियाँ व बीज अलग कर छाया में सुखाए जाते हैं।
- फिर खेत में भरपूर सिंचाई की जाती है और जब मिट्टी खुदाई के लिए उपयुक्त हो जाती है, तो जड़ों को खुदाई कर निकाला जाता है।
- जड़ों को अच्छी तरह धोकर छाया में सुखाया जाता है।

बीजों की कटाई:

- बीज पके हुए फलियों (pods) से पूरे पौधे की कटाई से 2–3 महीने पहले ही एकत्र किए जाते हैं।
- पौधे का 7.5 सेमी से लेकर 25 सेमी तक का ऊपरी भाग "तना" माना जाता है और यही विपणन के लिए प्रयोग होता है।

सदाबहार की उपज (Yield)

सिंचित (Irrigated) स्थिति में:

- पत्तियाँ: 4 टन/हेक्टेयर
- तना: 1.5 टन/हेक्टेयर
- जड़ें: 1.5 टन/हेक्टेयर

(सभी सूखे रूप में)

वर्षा आधारित (Rain-fed) स्थिति में:

- पत्तियाँ: 2 टन/हेक्टेयर
- तना: 0.75 टन/हेक्टेयर
- जड़ें: 0.75 टन/हेक्टेयर

(सभी सूखे रूप में)

एल्कलॉइड की मात्रा (Alkaloid Content):

- पत्तियों में कुल एल्कलॉइड की मात्रा: 0.15% से 1.34%
- जिसमें:
- विनब्लास्टिन (Vinblastine): औसतन 0.002%
- विनक्रिस्टिन (Vincristine): औसतन 0.005%

ड्रैगन फ्रूट की खेती जानिए पूरी जानकारी

ड्रैगन फ्रूट, जिसे पिटाया या पिताहाया भी कहा जाता है, हाल के वर्षों में भारत में एक तेजी से लोकप्रिय होता फल बन गया है। यह न केवल सेहत के लिए लाभकारी है, बल्कि किसानों के लिए आर्थिक रूप से भी फायदेमंद है। इसमें भरपूर मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट, विटामिन सी और फाइबर पाए जाते हैं, जो इसे एक पोषण से भरपूर फल बनाते हैं। यह फल कैक्टस की प्रजाति से संबंध रखता है और इसका मूल स्थान मध्य व दक्षिण अमेरिका है, हालांकि अब यह एशियाई देशों में भी बड़े पैमाने पर उगाया जा रहा है। भारत में इसकी बढ़ती मांग को देखते हुए किसान अब इसकी ओर आकर्षित हो रहे हैं।

ड्रैगन फ्रूट के लिए उपयुक्त जलवायु

ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र सबसे बेहतर माने जाते हैं। यह पौधा गर्म और शुष्क वातावरण में अच्छी तरह पनपता है। इसके लिए आदर्श तापमान 20°C से 30°C के बीच होना चाहिए। यह हल्की ठंड को झेल सकता है, लेकिन पाला इसे नुकसान पहुंचा सकता है। अच्छी वृद्धि के लिए इसे प्रतिदिन 6–8 घंटे की धूप मिलना जरूरी है।

कौन-सी मिट्टी सबसे उपयुक्त है?

ड्रैगन फ्रूट के लिए ऐसी मिट्टी जरूरी है जिसमें पानी का निकास अच्छा हो। रेतीली दोमट मिट्टी जिसमें पीएच स्तर 5.5 से 7 के बीच हो, सबसे उपयुक्त मानी जाती है। यह एक कैक्टस पौधा होने के कारण जलभराव को सहन नहीं कर पाता और इससे जड़ों के सड़ने का खतरा रहता है। इसलिए मिट्टी को हल्का और हवादार रखना चाहिए।

भूमि की तैयारी कैसे करें?

खेती से पहले खेत की गहरी जुताई करनी चाहिए और उसमें से खरपतवार, पत्थर आदि हटा देने चाहिए। जमीन को समतल बनाकर ट्रीलिस सिस्टम (खंभे और तार) तैयार करना चाहिए क्योंकि ड्रैगन फ्रूट की बेल को सहारे की जरूरत होती है। आमतौर पर खंभे बांस या सीमेंट से बनाए जाते हैं।

ड्रैगन फ्रूट की प्रमुख किस्में

1. हाइलोसेरियस उंडाटस (Hylocereus undatus) – सफेद गूदा और गुलाबी छिलका।
2. हाइलोसेरियस कोस्टारिसेंसिस (Hylocereus costaricensis) – लाल गूदा और गुलाबी छिलका।
3. हाइलोसेरियस मेगालान्थस (Hylocereus megalanthus) – सफेद गूदा और पीला छिलका।

किस्म का चुनाव स्थानीय जलवायु और बाजार की मांग को ध्यान में रखकर करना चाहिए। भारत में आमतौर पर हाइलोसेरियस उंडाटस की खेती की जाती है।

बीज या कटिंग – कौन-सा बेहतर?

हालांकि बीज से भी पौधे उगाए जा सकते हैं, लेकिन यह प्रक्रिया लंबी होती है। आमतौर पर किसान कटिंग विधि का उपयोग करते हैं क्योंकि इससे पौधे 12 से 18 महीनों में फल देना शुरू कर देते हैं, जबकि बीज से उगाए गए पौधों को फल देने में 5–6 साल लग जाते हैं।

कटिंग से पौधे कैसे लगाएं?

स्वस्थ पौधे की शाखा से 20-25 सेमी लंबी कटिंग ली जाती है, जिसे कुछ दिन छाया में सुखाकर मिट्टी में लगाया जाता है। पहले पॉलीबैग में उगाकर बाद में खेत में रोपण करना एक अच्छा तरीका है। ट्रीलिस सिस्टम में एक खंभे के चारों ओर 3-4 पौधे लगाए जाते हैं और पौधों के बीच 2-3 मीटर की दूरी रखी जाती है।

खाद और उर्वरक प्रबंधन

- जैविक खाद: प्रति हेक्टेयर 10-12 टन सड़ी हुई गोबर की खाद डालें।
- रासायनिक उर्वरक: बुवाई के समय प्रति पौधा 40-60 ग्राम नाइट्रोजन, 50-80 ग्राम फॉस्फोरस और 50-70 ग्राम पोटैशियम दें। फलन के समय अतिरिक्त खाद देना जरूरी होता है।

सिंचाई व्यवस्था

ड्रैगन फ्रूट को ज्यादा पानी की जरूरत नहीं होती, लेकिन मिट्टी में थोड़ी नमी बनी रहनी चाहिए। गर्मियों में 10–15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें, जबकि बरसात के मौसम में सिंचाई की जरूरत कम होती है। ड्रिप इरिगेशन इस फसल के लिए सबसे उपयुक्त है क्योंकि इससे पानी की बचत होती है और पौधों को नमी भी बराबर मिलती रहती है।

फल कब आते हैं?

कटिंग से तैयार पौधे एक से डेढ़ साल में फल देना शुरू कर देते हैं और हर साल 4 से 6 महीने तक फल देते हैं। बीज से उगाए गए पौधों में यह समय 5-6 साल तक हो सकता है।

तुड़ाई और भंडारण

फूल आने के 30–50 दिनों के भीतर फल पककर तैयार हो जाते हैं। जब छिलका पूरी तरह से रंगीन और चमकदार हो जाए, तभी तुड़ाई करें।

सुबह या शाम के समय तुड़ाई करना बेहतर होता है। तुड़ाई के बाद फलों को छाया में सुखाकर पैकिंग की जाती है। भंडारण के लिए 8°C से 10°C का तापमान उपयुक्त होता है, जिससे फल 2–3 हफ्तों तक ताजा बने रहते हैं।

निष्कर्ष

ड्रैगन फ्रूट की खेती न केवल मुनाफे का साधन है बल्कि यह किसानों को जलवायु बदलाव और पारंपरिक खेती की अनिश्चितताओं से उबरने का अवसर भी देती है।

यह एक पौष्टिक, लाभदायक और टिकाऊ फसल है, जिसे भारत में खेती की विविधता के रूप में अपनाया जा सकता है।

केसर की खेती कैसे की जाती है जानिए इसके बारे में

केसर भारतीय कृषि में एक विशेष स्थान रखता है। भारत विश्व के प्रमुख केसर उत्पादक देशों में शामिल है। यह मसाला न केवल आर्थिक दृष्टि से बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। भारत में केसर की खेती एक समृद्ध परंपरा रही है, जो कृषि विरासत और सांस्कृतिक पहचान से गहराई से जुड़ी हुई है। यह लेख भारत में केसर उत्पादन से संबंधित ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, अनुकूल जलवायु, खेती की विधियाँ, कटाई की प्रक्रिया, आर्थिक योगदान और भविष्य की संभावनाओं की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत करता है। केसर की परंपरागत खेती से लेकर आज की आधुनिक चुनौतियों और अवसरों तक, यह लेख केसर उद्योग की एक समग्र झलक देता है।

केसर की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

केसर को उगाने के लिए ठंडी और समशीतोष्ण जलवायु सबसे उपयुक्त मानी जाती है। सामान्यत: इसकी खेती समुद्र तल से 1500 से 2800 मीटर की ऊँचाई पर की जाती है। हालांकि केसर कुछ हद तक ठंड और बर्फ को सहन कर सकता है, लेकिन अक्टूबर-नवंबर में अधिक बर्फबारी इससे नुकसान पहुँचा सकती है। ऊँचाई वाले क्षेत्रों में फूल देर से आते हैं। फूल आने के समय अगर मौसम साफ और धूप वाला हो, तो उत्पादन बेहतर होता है। अच्छी उपज के लिए पौधों को प्रतिदिन 8 से 11 घंटे तक सूर्यप्रकाश मिलना चाहिए। ऐसे क्षेत्र जहाँ गर्मियों में लगभग 300-400 मिमी वर्षा होती है और सर्दियों में बर्फ गिरती है, वहाँ इसकी खेती लाभकारी रहती है। दिन का तापमान 20-25 डिग्री सेल्सियस और रात का 5-10 डिग्री के बीच होना चाहिए।

केसर के लिए उपयुक्त भूमि

केसर की सफल खेती के लिए रेतीली दोमट और चिकनी मिट्टी सर्वोत्तम मानी जाती है। मिट्टी का पीएच मान 6.8 से 7.8 के बीच होना चाहिए। खेत में यदि देसी खाद के साथ रेत मिलाई जाए, तो मिट्टी

की बनावट खुली और जलनिकासी योग्य बनी रहती है। ध्यान रहे, अधिक नमी वाली जमीन में घनकंद (Corm) सड़ सकते हैं। ऐसे में खेत में कैल्शियम कार्बोनेट की पर्याप्त मात्रा देना फसल के लिए लाभदायक होता है।

खेत की तैयारी

खेत की तैयारी अप्रैल-मई में कर लेनी चाहिए। चूंकि केसर घनकंदों से उगाया जाता है, इसलिए जल निकासी की अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए। खेत की जुताई 3-4 बार करके मिट्टी को भुरभुरा बना लें। इसकी खेती आमतौर पर उठे हुए बेड (2mx1mx15cm) पर की जाती है। बेड्स के चारों ओर जल निकासी के लिए नालियाँ बना लेनी चाहिए।

केसर की प्रमुख किस्में

वर्तमान में भारत में दो प्रकार की केसर प्रचलित हैं:
कश्मीरी मोंगरा केसर: यह दुनिया की सबसे महंगी केसर मानी जाती है, जिसकी कीमत 3 लाख रुपये प्रति किलो तक जाती है। इसकी खेती मुख्य रूप से जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ और पंपोर क्षेत्रों में होती है। इसके पौधे 20-25 सेमी ऊँचाई तक बढ़ते हैं और लगभग 75,000 फूलों से 450 ग्राम केसर प्राप्त होता है।
अमेरिकन केसर: इसकी खेती कश्मीर के अलावा अन्य राज्यों में भी की जा रही है। इसकी कीमत कश्मीरी केसर से कम होती है, लेकिन यह कई प्रकार की जलवायु में उगाई जा सकती है। यह किस्म राजस्थान जैसे शुष्क क्षेत्रों में भी सफलतापूर्वक उगाई जा रही है और इसके पौधे 4 से 5 फीट तक ऊँचाई तक बढ़ सकते हैं।

बुवाई का समय

केसर एक बहुवर्षीय फसल है और इसे जुलाई से अगस्त के पहले सप्ताह तक बोया जाता है। इसकी बुवाई 2.5 से 5 सेमी आकार के घनकंदों से की जाती है, जो 8-10 साल तक फूल देते हैं। रोपाई से पहले घनकंदों को 0.5 ग्राम कॉपर सल्फेट प्रति लीटर पानी में उपचारित किया जाना चाहिए। बुवाई 6-7 सेमी गहराई पर पंक्तियों में करनी चाहिए, जिनमें पौधों के बीच 10 सेमी और पंक्तियों के बीच 20 सेमी की दूरी हो।

खाद और उर्वरक प्रबंधन

अंतिम जुताई से पहले प्रति हेक्टेयर 20 टन गोबर की खाद डालना चाहिए। इसके अलावा, 90 किलो नाइट्रोजन, 60 किलो फास्फोरस और 60 किलो पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से डालें। नाइट्रोजन की एक चौथाई मात्रा तथा फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा जुताई से पहले डालें। बची हुई नाइट्रोजन को 3-4 बार में 20-20 दिन के अंतराल पर खड़ी फसल में दें।

सिंचाई प्रबंधन

केसर को सामान्यतः 300-400 मिमी वर्षा की जरूरत होती है। अगर रोपण के बाद हल्की वर्षा हो जाए, तो सिंचाई की जरूरत नहीं होती। लेकिन वर्षा न हो तो 15-15 दिन के अंतराल पर 2 से 3 बार सिंचाई करें। ध्यान रखें कि खेत में पानी न ठहरे, क्योंकि इससे फसल को नुकसान हो सकता है।

खरपतवार नियंत्रण

अच्छी उपज के लिए फसल को खरपतवार मुक्त रखना जरूरी है। इसके लिए दो से तीन बार निराई-गुड़ाई करें। फरवरी-मार्च में पौधों के चारों ओर की मिट्टी को हल्के से तोड़ देना चाहिए, जिससे पुष्पविकास ठीक से हो सके। पहली निराई जुलाई के अंत तक और दूसरी निराई अंकुरण से पहले सितंबर में करनी चाहिए। यहाँ "केसर की कटाई और सुखाना" अनुभाग का परिष्कृत और पुनर्लिखित (paraphrased) संस्करण प्रस्तुत है, जो मूल आशय को बनाए रखते हुए भाषा को और प्रभावी एवं प्रवाहपूर्ण बनाता है:

केसर की कटाई और सुखाने की प्रक्रिया

ऊँचाई वाले क्षेत्रों में केसर के पौधों में फूलों का आना आमतौर पर सितंबर से शुरू होता है, जबकि निचले पहाड़ी इलाकों में यह प्रक्रिया अक्टूबर के मध्य से प्रारंभ होती है और दिसंबर तक जारी रहती है। केसर की फसल जुलाई-अगस्त तक परिपक्व हो जाती है, जिसके बाद इसकी कटाई की जाती है। जब फूलों की पंखुड़ियाँ लाल या भगवा रंग में रंगने लगें, तब यह संकेत होता है कि फूल तोड़ने का सही समय आ गया है। इन फूलों की तुड़ाई प्रायः हर सुबह हाथों से की जाती है ताकि ताजगी और गुणवत्ता बनी रहे। केसर के फूलों का रंग बैंगनी, नीला या सफेद होता है और ये फूल कीपनुमा आकृति के होते हैं। हर फूल में तीन लाल-नारंगी मादा भाग होते हैं, जिन्हें वर्तिका या तंतुओं के नाम से जाना जाता है – यही वास्तविक केसर होता है। यह केसर "अग्निशाखा" के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि इसका रंग जलती अग्नि की तरह चमकदार होता है।

प्रत्येक फूल में तीन पीले नर भाग भी होते हैं, लेकिन ये केसर का हिस्सा नहीं होते।

कटाई के बाद फूलों को पहले छायायुक्त स्थान में सुखाया जाता है। जब फूल अच्छी तरह सूख जाते हैं, तो उनके अंदर से मादा भाग (तंतु) निकाल लिए जाते हैं। इन तंतुओं को उनके रंग, आकार और गुणवत्ता के आधार पर विभिन्न श्रेणियों जैसे – मोगरा, लच्छी और गुच्छी में वर्गीकृत किया जाता है।

यह ध्यान देने योग्य है कि केसर अत्यंत श्रम-साध्य फसल है – लगभग 1 किलो सूखा केसर प्राप्त करने के लिए 1.5 लाख (150,000) फूलों की आवश्यकता होती है।

₹5 लाख के अंदर बेस्ट ट्रैक्टर: कम बजट में खेती के लिए बेहतरीन ट्रैक्टर

आज के समय में खेती की लागत लगातार बढ़ रही है, ऐसे में हर किसान चाहता है कि उसे कम कीमत में ऐसा ट्रैक्टर मिले जो मजबूत, ईंधन की बचत करने वाला और सभी कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त हो। यदि आपका बजट ₹5 लाख के आसपास है, तो भारतीय बाजार में कई ऐसे ट्रैक्टर उपलब्ध हैं जो जुताई, बुवाई, रोटावेटर, कल्टीवेटर, स्प्रेइंग और ढुलाई जैसे कार्यों में शानदार प्रदर्शन करते हैं।

₹5 लाख के अंदर बेस्ट ट्रैक्टर - जानें, कीमत और स्पेसिफिकेशन

कम बजट वाले ट्रैक्टर छोटे और मध्यम किसानों के लिए एक बेहतरीन निवेश साबित होते हैं। ये ट्रैक्टर कम रखरखाव लागत, बेहतर माइलेज, मजबूत इंजन और आधुनिक फीचर्स के साथ आते हैं। इस लेख में हम ₹5 लाख के अंदर आने वाले 7 बेहतरीन ट्रैक्टरों के बारे में विस्तार से जानेंगे, ताकि आप अपनी खेती

और जरूरत के अनुसार सही ट्रैक्टर का चुनाव कर सकें।

1. मैसी फर्ग्यूसन 1030 डीआई महा शक्ति

मजबूत इंजन और भरोसेमंद परफॉर्मेंस

मैसी फर्ग्यूसन 1030 डीआई महा शक्ति एक 35 HP श्रेणी का ट्रैक्टर है, जिसमें 3 सिलेंडर और 2270 सीसी का दमदार इंजन दिया गया है। इसका इंजन 2100 RPM पर बेहतर शक्ति प्रदान करता है, जबकि 25.5 HP PTO पावर रोटावेटर, थ्रेशर और अन्य PTO संचालित कृषि उपकरणों के लिए पर्याप्त है। इसमें दिया गया ड्राई टाइप एयर फिल्टर इंजन को धूल-मिट्टी से सुरक्षित रखता है और वॉटर कूल्ड सिस्टम लंबे समय तक लगातार काम करने पर भी इंजन को ठंडा बनाए रखता है।

ट्रांसमिशन, हाइड्रोलिक्स और अन्य फीचर्स

इस ट्रैक्टर में सिंगल क्लच और स्लाइडिंग मेश ट्रांसमिशन के साथ फॉरवर्ड + 2 रिवर्स गियर दिए गए हैं। इसकी अधिकतम फॉरवर्ड स्पीड 23.8 किमी/घंटा है। ट्रैक्टर में 1300 किलोग्राम लिफ्टिंग क्षमता, 47 लीटर का फ्यूल टैंक, ड्राई डिस्क ब्रेक्स तथा मैकेनिकल/पावर स्टीयरिंग का विकल्प मिलता है। लगभग 1660 किलोग्राम वजन के साथ यह ट्रैक्टर खेतों में अच्छा संतुलन और बेहतर ट्रैक्शन प्रदान करता है।

कीमत: ₹5.31 लाख से ₹5.53 लाख

2. आयशर 242

छोटे और मध्यम किसानों के लिए किफायती विकल्प

आयशर 242 अपनी कम कीमत, कम रखरखाव और ईंधन दक्षता के लिए जाना जाता है। इसमें 25 HP का 1557 सीसी सिंगल सिलेंडर इंजन दिया गया है, जो 21.3 HP PTO पावर प्रदान करता है। इसका एयर कूल्ड इंजन कम रखरखाव के साथ लंबे समय तक बेहतर प्रदर्शन करता है।

बेहतरीन ट्रांसमिशन और आरामदायक संचालन

इस ट्रैक्टर में 8 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स गियर, सेंट्रल शिफ्ट स्लाइडिंग मेश ट्रांसमिशन और 27.61 किमी/घंटा की अधिकतम गति मिलती है। इसमें 1220 किलोग्राम लिफ्टिंग क्षमता, 35 लीटर फ्यूल टैंक, डिस्क या ऑयल इमर्स्ड ब्रेक्स का विकल्प, मैकेनिकल/पावर स्टीयरिंग और 410 मिमी ग्राउंड क्लीयरेंस दिया गया है। यह ट्रैक्टर छोटे खेतों और सामान्य कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त विकल्प है।

कीमत: ₹4.80 लाख से ₹4.99 लाख

3. स्वराज 717

बागवानी और छोटे खेतों के लिए बेहतरीन मिनी ट्रैक्टर

यदि आपकी खेती छोटे खेतों, बागवानी या सब्जी उत्पादन तक सीमित है, तो स्वराज 717 एक बेहतरीन विकल्प हो सकता है। इसमें 15 HP का 863.5 सीसी सिंगल सिलेंडर इंजन दिया गया है, जो 9 HP PTO पावर उत्पन्न करता है। इसका वॉटर कूल्ड इंजन और 3-स्टेज ऑयल बाथ एयर फिल्टर बेहतर प्रदर्शन सुनिश्चित करते हैं।

कॉम्पैक्ट डिजाइन और आसान संचालन

इस ट्रैक्टर में 6 फॉरवर्ड + 3 रिवर्स गियर, ड्राई डिस्क ब्रेक्स, मैकेनिकल स्टीयरिंग, 780 किलोग्राम लिफ्टिंग क्षमता और 23 लीटर फ्यूल टैंक मिलता है। केवल 850 किलोग्राम वजन होने के कारण यह संकरी जगहों और बागों में आसानी से काम करता है।

कीमत: ₹3.37 लाख से ₹3.51 लाख

4. महिंद्रा युवो 265 डीआई

आधुनिक तकनीक के साथ दमदार ट्रैक्टर

महिंद्रा युवो 265 डीआई 32 HP श्रेणी का

mahindra Rise
महिंद्रा ट्रैक्टर्स
टफ़ हरदम
महिंद्रा YUVRAJ
215 NXT NT
स्मार्ट। स्ट्रॉन्ग। इंटरकल्चर खेती के लिए उपयुक्त
mahindra 215
mahindra
YUVRAJ
215 NXT.NT
सही उपयोग:
कल्टिव्हेशन
रोटावेटिंग
स्प्रेईंग

आधुनिक ट्रैक्टर है, जिसमें 3 सिलेंडर, 2048 सीसी इंजन दिया गया है। यह इंजन 122 Nm टॉर्क और 27 HP PTO पावर प्रदान करता है, जिससे यह कठिन कृषि कार्यों में भी बेहतर प्रदर्शन करता है।

एडवांस ट्रांसमिशन और मजबूत हाइड्रोलिक्स
इस ट्रैक्टर में फुल कॉन्स्टेंट मेश ट्रांसमिशन के साथ 12 फॉरवर्ड + 3 रिवर्स गियर दिए गए हैं। इसमें ऑयल इमर्स्ड ब्रेक्स, 1500 किलोग्राम लिफ्टिंग क्षमता, 60 लीटर का बड़ा फ्यूल टैंक और मैकेनिकल/पावर स्टीयरिंग का विकल्प मिलता है। इसकी मजबूत बॉडी और आधुनिक तकनीक इसे खेती और ढुलाई दोनों के लिए उपयुक्त बनाती है।

कीमत: ₹4.95 लाख से ₹5.15 लाख

5. वीएसटी एमटी 180 डी 4डब्ल्यूडी

छोटे किसानों के लिए 4WD मिनी ट्रैक्टर

वीएसटी MT-180 D 4WD उन किसानों के लिए बेहतरीन विकल्प है जिन्हें छोटे खेतों, बागवानी और इंटरकल्चर कार्यों के लिए कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर चाहिए। इसमें 18.5 HP, 3 सिलेंडर और 900 सीसी इंजन दिया गया है, जो 13.2 HP PTO पावर प्रदान करता है।

4WD तकनीक के साथ बेहतर नियंत्रण
इस ट्रैक्टर में 6 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स गियर, ऑयल इमर्स्ड डिस्क ब्रेक्स, 500 किलोग्राम लिफ्टिंग क्षमता, 18 लीटर फ्यूल टैंक और मल्टी स्पीड PTO दिया गया है। इसकी 4WD तकनीक कठिन और फिसलन वाली जमीन पर भी बेहतर ट्रैक्शन और नियंत्रण प्रदान करती है।

कीमत: ₹3.10 लाख से ₹3.23 लाख

6. सोनालीका डीआई 730 II HDM

कम कीमत में दमदार प्रदर्शन

सोनालीका डीआई 730 II HDM 30 HP श्रेणी का ट्रैक्टर है, जिसमें 3 सिलेंडर, 2044 सीसी इंजन दिया गया है। यह इंजन 1800 RPM पर बेहतर शक्ति उत्पन्न करता है और 17.6 HP PTO पावर उपलब्ध कराता है। इसमें वेट टाइप एयर फिल्टर और वॉटर कूल्ड सिस्टम दिया गया है।

मजबूत बॉडी और शानदार फीचर्स
इस ट्रैक्टर में 8 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स गियर, 1200 किलोग्राम लिफ्टिंग क्षमता, 55 लीटर फ्यूल टैंक, ऑयल इमर्स्ड या ड्राई डिस्क ब्रेक्स का विकल्प और 390 मिमी ग्राउंड क्लीयरेंस मिलता है। इसकी मजबूत बनावट और आसान संचालन इसे छोटे एवं मध्यम किसानों के लिए एक अच्छा विकल्प बनाते हैं।

कीमत: ₹4.54 लाख से ₹4.72 लाख

7. न्यू हॉलैंड सिम्बा 20

बागवानी और इंटरकल्चर कार्यों के लिए कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर

न्यू हॉलैंड सिम्बा 20 एक कॉम्पैक्ट मिनी ट्रैक्टर है, जिसमें 17 HP का 947.4 सीसी सिंगल सिलेंडर इंजन दिया गया है। यह 63 Nm टॉर्क और 13.4 HP PTO पावर प्रदान करता है। इसका ऑयल बाथ एयर फिल्टर विद प्री-क्लीनर इंजन को लंबे समय तक सुरक्षित रखता है।

आधुनिक फीचर्स के साथ शानदार नियंत्रण
इस ट्रैक्टर में 9 फॉरवर्ड + 3 रिवर्स गियर, ऑयल इमर्स्ड डिस्क ब्रेक्स, 750 किलोग्राम लिफ्टिंग क्षमता, 20 लीटर फ्यूल टैंक और 540 एवं 1000 RPM PTO की सुविधा मिलती है। इसका कॉम्पैक्ट डिजाइन, हल्का वजन और बेहतर ट्रांसमिशन इसे बागवानी, डेयरी फार्म और छोटे खेतों के लिए आदर्श बनाता है।

कीमत: ₹3.53 लाख से ₹3.67 लाख

यदि आपका बजट ₹5 लाख के आसपास है, तो आपके पास कई अच्छे ट्रैक्टर विकल्प उपलब्ध हैं। महिंद्रा युवो 265 डीआई और मैसी फर्ग्यूसन 1030 डीआई महा शक्ति अधिक शक्ति और आधुनिक फीचर्स के लिए बेहतरीन हैं। वहीं आयशर 242 और सोनालीका डीआई 730 II HDM कम कीमत में भरोसेमंद प्रदर्शन प्रदान करते हैं। यदि आपकी जरूरत बागवानी या छोटे खेतों के लिए कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर की है, तो स्वराज 717, वीएसटी MT-180 D 4WD और न्यू हॉलैंड सिम्बा 20 उत्कृष्ट विकल्प साबित हो सकते हैं। ट्रैक्टर खरीदने से पहले अपनी खेती का क्षेत्रफल, उपयोग होने वाले कृषि उपकरण, आवश्यक हॉर्सपावर और स्थानीय डीलर द्वारा दी जाने वाली कीमत व सर्विस की जानकारी अवश्य लें, ताकि आप अपनी आवश्यकताओं के अनुसार सबसे उपयुक्त ट्रैक्टर चुन सकें।

फार्मट्रैक 45 EPI प्रो: जानें कीमत, पावर, फीचर्स और माइलेज की पूरी जानकारी

फार्मट्रैक 45 ईपीआई प्रो: खेती और ट्रॉली दोनों के लिए भरोसेमंद ट्रैक्टर

फार्मट्रैक 45 ईपीआई प्रो (Farmtrac 45 EPI Pro) एक आधुनिक 48 HP श्रेणी का ट्रैक्टर है, जिसे भारतीय किसानों की विभिन्न कृषि आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। यह ट्रैक्टर खेती के लगभग सभी प्रमुख कार्यों जैसे जुताई, बुवाई, रोटावेटर, कल्टीवेटर, ट्रॉली परिवहन, स्प्रेइंग और हार्वेस्टिंग से जुड़े कार्यों में शानदार प्रदर्शन करता है। मजबूत इंजन, बेहतर टॉर्क, कॉन्स्टेंट मेश ट्रांसमिशन और आधुनिक हाइड्रोलिक सिस्टम के कारण यह ट्रैक्टर छोटे, मध्यम और बड़े किसानों के लिए एक भरोसेमंद विकल्प माना जाता है। कम ईंधन खपत, मजबूत निर्माण और आसान रखरखाव इसे अपनी श्रेणी के सबसे लोकप्रिय ट्रैक्टरों में शामिल करते हैं।

फार्मट्रैक 45 ईपीआई प्रो इंजन

फार्मट्रैक 45 ईपीआई प्रो में 3 सिलेंडर का शक्तिशाली इंजन दिया गया है, जो 48 HP की अधिकतम शक्ति उत्पन्न करता है। इसका इंजन 1850 RPM पर कार्य करता है, जिससे कम RPM पर भी बेहतर प्रदर्शन और ईंधन की बचत सुनिश्चित होती है। ट्रैक्टर में 208 Nm का अधिकतम टॉर्क दिया गया है, जो भारी कृषि कार्यों के दौरान बेहतर खींचने की क्षमता प्रदान करता है। इसमें 38.3 HP PTO उपलब्ध है, जिससे रोटावेटर, थ्रेशर, स्प्रेयर, रीपर और अन्य PTO संचालित कृषि उपकरणों का संचालन आसानी से किया जा सकता है। इंजन में 3-Stage Pre Oil Cleaning Air Filter लगाया गया है, जो धूल और मिट्टी को प्रभावी ढंग से रोककर इंजन की कार्यक्षमता और जीवनकाल को बढ़ाता है। वहीं Forced Air Bath Cooling System इंजन को लंबे समय तक कार्य करने के दौरान उचित तापमान पर बनाए रखता है।

फार्मट्रैक 45 ईपीआई प्रो ट्रांसमिशन (गियरबॉक्स)

इस ट्रैक्टर में Constant Mesh Central Shift Transmission दिया गया है, जिससे

गियर बदलना आसान और स्मूद हो जाता है। इसमें Single Clutch के साथ Dual Clutch का विकल्प भी उपलब्ध है, जिससे किसान अपनी आवश्यकता के अनुसार ट्रैक्टर का चयन कर सकते हैं। ट्रैक्टर में 8 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स गियर दिए गए हैं, जो विभिन्न कृषि कार्यों और परिवहन के लिए उपयुक्त गति प्रदान करते हैं। इसकी फॉरवर्ड स्पीड 2.7 से 30.6 किमी/घंटा तथा रिवर्स स्पीड 3.0 से 10.9 किमी/घंटा है। इसके अलावा 12V 75Ah बैटरी और 12V 36 Amp अल्टरनेटर ट्रैक्टर के इलेक्ट्रिकल सिस्टम को विश्वसनीय और लंबे समय तक प्रभावी बनाए रखते हैं।

फार्मट्रैक 45 ईपीआई प्रो ब्रेक और स्टीयरिंग

फार्मट्रैक 45 ईपीआई प्रो में Multi Disc Oil Immersed Brakes दिए गए हैं, जो बेहतरीन ब्रेकिंग क्षमता, अधिक सुरक्षा और लंबी उम्र के लिए जाने जाते हैं। ऑयल इमर्स्ड ब्रेक लगातार उपयोग के दौरान कम गर्म होते हैं और रखरखाव की आवश्यकता भी कम होती है। स्टीयरिंग की बात करें तो ट्रैक्टर में Mechanical Single Drop Arm के साथ Power Steering का विकल्प उपलब्ध है, जिससे खेतों और सड़क दोनों पर ट्रैक्टर को आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है। लंबे समय तक काम करने के दौरान भी चालक को कम थकान महसूस होती है।

फार्मट्रैक 45 ईपीआई प्रो PTO (पावर टेक-ऑफ)

इस ट्रैक्टर में 540 RPM के साथ Multi Speed Reverse PTO का विकल्प दिया गया है, जिससे विभिन्न कृषि उपकरणों को उनकी आवश्यकता के अनुसार संचालित किया जा सकता है। इसका 38.3 HP PTO रोटावेटर, स्प्रेयर, थ्रेशर और अन्य PTO संचालित उपकरणों के साथ बेहतर प्रदर्शन सुनिश्चित करता है। 540 @1810 ERPM पर PTO संचालन होने के कारण यह ईंधन की बचत के साथ बेहतर कार्यक्षमता भी प्रदान करता है।

फार्मट्रैक 45 ईपीआई प्रो फ्यूल टैंक क्षमता

फार्मट्रैक 45 ईपीआई प्रो में 60 लीटर का बड़ा फ्यूल टैंक दिया गया है, जिससे किसान लंबे समय तक बिना बार-बार डीजल भरवाए खेती के कार्य कर सकते हैं। बड़े खेतों और लंबे कार्य घंटों के दौरान यह क्षमता काफी उपयोगी साबित होती है और काम की निरंतरता बनाए रखती है।

फार्मट्रैक 45 ईपीआई प्रो डायमेंशन और वजन

फार्मट्रैक 45 ईपीआई प्रो का मजबूत और संतुलित डिजाइन इसे विभिन्न प्रकार की कृषि परिस्थितियों में स्थिर प्रदर्शन प्रदान करता है। इसका कुल वजन 2245 किलोग्राम है, जिससे ट्रैक्टर की पकड़ और संतुलन बेहतर बना रहता है। इसमें 2145 मिमी व्हीलबेस, 3485 मिमी कुल लंबाई, 1810 मिमी कुल चौड़ाई और 377 मिमी ग्राउंड क्लीयरेंस दिया गया है। वहीं 3250 मिमी टर्निंग रेडियस (ब्रेक के साथ) ट्रैक्टर को सीमित स्थानों और खेतों में भी आसानी से मोड़ने की सुविधा प्रदान करता है।

फार्मट्रैक 45 ईपीआई प्रो हाइड्रोलिक्स और लिफ्टिंग क्षमता

इस ट्रैक्टर में 1800 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता दी गई है, जो रोटावेटर, कल्टीवेटर, सीड ड्रिल, एमबी प्लाउ और अन्य कृषि उपकरणों को आसानी से संचालित करने में सक्षम है। इसमें Single Acting Spool Valve Ground के साथ 3-Point Linkage दिया गया है, जिससे कृषि उपकरणों का संचालन अधिक सटीक और प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। मजबूत हाइड्रोलिक सिस्टम ट्रैक्टर की कार्यक्षमता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

फार्मट्रैक 45 ईपीआई प्रो टायर साइज

फार्मट्रैक 45 ईपीआई प्रो 2WD (Two Wheel

Drive) ट्रैक्टर है। इसमें आगे 6.50 x 16 और पीछे 14.9 x 28 आकार के टायर दिए गए हैं। ये टायर खेतों में बेहतर पकड़, संतुलन और आरामदायक संचालन सुनिश्चित करते हैं। मजबूत टायर डिजाइन के कारण ट्रैक्टर विभिन्न प्रकार की मिट्टी में बेहतर ट्रैक्शन प्रदान करता है।

फार्मट्रैक 45 ईपीआई प्रो की कीमत?

भारत में फार्मट्रैक 45 ईपीआई प्रो ट्रैक्टर की एक्स-शोरूम कीमत लगभग ₹7.06 लाख से ₹7.38 लाख के बीच है। वास्तविक कीमत राज्य, शहर, आरटीओ शुल्क, बीमा और डीलर ऑफर्स के अनुसार अलग-अलग हो सकती है। अपनी कीमत के अनुसार यह ट्रैक्टर आधुनिक फीचर्स, दमदार प्रदर्शन और मजबूत निर्माण के कारण किसानों के लिए एक किफायती और भरोसेमंद विकल्प माना जाता है।

निष्कर्ष

यदि आप 48 HP श्रेणी में एक ऐसा ट्रैक्टर चाहते हैं, जो कम RPM पर अधिक टॉर्क, बेहतर ईंधन दक्षता और आधुनिक फीचर्स के साथ शानदार प्रदर्शन प्रदान करे, तो फार्मट्रैक 45 ईपीआई प्रो एक बेहतरीन विकल्प है। इसका शक्तिशाली इंजन, 208 Nm टॉर्क, कॉन्स्टेंट मेश ट्रांसमिशन, 1800 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता, 60 लीटर का बड़ा फ्यूल टैंक और मजबूत हाइड्रोलिक सिस्टम इसे जुताई, बुवाई, परिवहन और अन्य कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त बनाते हैं। किफायती कीमत, भरोसेमंद प्रदर्शन और कम रखरखाव लागत के कारण यह ट्रैक्टर छोटे, मध्यम और प्रगतिशील किसानों के लिए एक उत्कृष्ट निवेश साबित हो सकता है।

मैसी फर्ग्यूसन 5225 ट्रैक्टर की पूरी जानकारी, कीमत, माइलेज और फीचर्स

बागवानी और सब्जी खेती के लिए कैसा है मैसी फर्ग्यूसन 5225?

मैसी फर्ग्यूसन (Massey Ferguson) भारत और दुनिया के सबसे भरोसेमंद ट्रैक्टर ब्रांडों में से एक है। यह ब्रांड अपनी मजबूत गुणवत्ता, आधुनिक तकनीक और लंबे समय तक टिकाऊ प्रदर्शन के लिए जाना जाता है। मैसी फर्ग्यूसन के ट्रैक्टर खेती के विभिन्न कार्यों के साथ-साथ बागवानी, सब्जी उत्पादन और ढुलाई जैसे कार्यों में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं। कंपनी किसानों की जरूरतों के अनुसार ऐसे ट्रैक्टर विकसित करती है, जो कम ईंधन खपत, आसान रखरखाव और बेहतर उत्पादकता प्रदान करते हैं।

मैसी फर्ग्यूसन 5225 एक 24 HP श्रेणी का कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर है, जिसे विशेष रूप से बागवानी, सब्जी खेती, इंटरकल्चर ऑपरेशन, ग्रीनहाउस खेती और छोटे खेतों के लिए डिजाइन किया गया है। इसका कॉम्पैक्ट आकार, हल्का वजन और आसान संचालन इसे संकरी जगहों पर भी प्रभावी ढंग से कार्य करने योग्य बनाता है। यह ट्रैक्टर रोटावेटर,

कल्टीवेटर, स्प्रेयर, सीड ड्रिल और अन्य हल्के कृषि उपकरणों के साथ बेहतरीन प्रदर्शन करता है।

मैसी फर्ग्यूसन 5225 इंजन

मैसी फर्ग्यूसन 5225 में 2 सिलेंडर वाला 1290 सीसी इंजन दिया गया है, जो 24 HP की शक्ति उत्पन्न करता है। यह इंजन कम ईंधन खपत के साथ बेहतर प्रदर्शन देने के लिए डिजाइन किया गया है, जिससे किसानों की परिचालन लागत कम होती है। इंजन का संतुलित डिजाइन छोटे और मध्यम कृषि कार्यों में लगातार और भरोसेमंद प्रदर्शन सुनिश्चित करता है। इसकी शक्ति खेत की जुताई, बुवाई, निराई, स्प्रेइंग और अन्य दैनिक कृषि कार्यों के लिए पर्याप्त है।

मैसी फर्ग्यूसन 5225 ट्रांसमिशन

इस ट्रैक्टर में सिंगल ड्राई फ्रिक्शन प्लेट (डायफ्राम) क्लच दिया गया है, जो स्मूथ पावर ट्रांसफर और आसान संचालन सुनिश्चित करता है। इसमें पार्शियल कॉन्स्टेंट मेश ट्रांसमिशन के साथ 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर उपलब्ध हैं, जिससे किसान विभिन्न कृषि कार्यों के अनुसार उपयुक्त गति का चयन कर सकते हैं। इसकी अधिकतम फॉरवर्ड स्पीड 23.55 किमी/घंटा है, जिससे खेत और सड़क दोनों पर बेहतर कार्यक्षमता मिलती है।

मैसी फर्ग्यूसन 5225 ब्रेक और स्टीयरिंग

मैसी फर्ग्यूसन 5225 में मल्टी डिस्क ऑयल इमर्स्ड ब्रेक्स दिए गए हैं, जो सुरक्षित और प्रभावी ब्रेकिंग प्रदान करते हैं। ऑयल इमर्स्ड ब्रेक्स कम घिसते हैं और लंबे समय तक बेहतर प्रदर्शन बनाए रखते हैं, जिससे रखरखाव की आवश्यकता भी कम होती है। ट्रैक्टर में मैनुअल स्टीयरिंग दी गई है, जो हल्के कृषि कार्यों और छोटे खेतों में ट्रैक्टर को आसानी से नियंत्रित करने में मदद करती है।

मैसी फर्ग्यूसन 5225 पीटीओ (PTO)

इस ट्रैक्टर में लाइव टू-स्पीड PTO दिया गया है, जो 540 RPM @ 2200 ERPM तथा 540 RPM Eco @ 1642 ERPM पर कार्य करता है। इको PTO की सुविधा कम इंजन आरपीएम पर भी PTO संचालित उपकरणों को प्रभावी ढंग से चलाने में मदद करती है, जिससे ईंधन की बचत होती है। यह ट्रैक्टर रोटावेटर, स्प्रेयर, पंप सेट और अन्य PTO आधारित कृषि उपकरणों के साथ बेहतर प्रदर्शन करता है।

मैसी फर्ग्यूसन 5225 फ्यूल टैंक

मैसी फर्ग्यूसन 5225 में 27.5 लीटर क्षमता का फ्यूल टैंक दिया गया है। यह क्षमता छोटे और मध्यम कृषि कार्यों के लिए पर्याप्त है तथा किसानों को बिना बार-बार ईंधन भरवाए लंबे समय तक काम करने की सुविधा देती है।

मैसी फर्ग्यूसन 5225 डायमेंशन और वजन

यह ट्रैक्टर कॉम्पैक्ट और हल्के डिजाइन के साथ आता है। इसका वजन 1115 किलोग्राम, व्हीलबेस 1578 मिमी, कुल लंबाई 2770 मिमी और चौड़ाई 1085 मिमी है। इसका छोटा आकार और हल्का वजन इसे बागवानी, फल बागानों, ग्रीनहाउस और संकरी पंक्तियों वाली फसलों में आसानी से कार्य करने योग्य बनाता है। इसकी बेहतर संतुलन क्षमता विभिन्न प्रकार की कृषि परिस्थितियों में प्रभावी संचालन सुनिश्चित करती है।

मैसी फर्ग्यूसन 5225 हाइड्रोलिक क्षमता

मैसी फर्ग्यूसन 5225 में 750 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता दी गई है। यह क्षमता हल्के और मध्यम कृषि उपकरणों जैसे रोटावेटर, कल्टीवेटर, स्प्रेयर और सीड ड्रिल को आसानी से संचालित करने के लिए पर्याप्त है। मजबूत हाइड्रोलिक सिस्टम उपकरणों को स्थिरता के साथ उठाने और संचालित करने में सहायता करता है।

मैसी फर्ग्यूसन 5225 टायर

इस ट्रैक्टर में 5.25 x 14 फ्रंट टायर और 8.3 x 24

रियर टायर दिए गए हैं। ये टायर खेतों में बेहतर पकड़, संतुलन और ट्रैक्शन प्रदान करते हैं। मजबूत टायरों के कारण ट्रैक्टर विभिन्न प्रकार की मिट्टी और खेती की परिस्थितियों में प्रभावी प्रदर्शन करता है।

मैसी फर्ग्यूसन 5225 कीमत?

भारत में मैसी फर्ग्यूसन 5225 ट्रैक्टर की एक्स-शोरूम कीमत लगभग ₹3.94 लाख से ₹4.10 लाख के बीच है। हालांकि, ट्रैक्टर की वास्तविक कीमत राज्य, शहर, आरटीओ शुल्क, बीमा और अन्य स्थानीय शुल्कों के अनुसार अलग-अलग हो सकती है। इसलिए खरीदने से पहले अपने नजदीकी मैसी फर्ग्यूसन डीलर से नवीनतम कीमत और उपलब्ध ऑफर्स की जानकारी अवश्य प्राप्त करें।

मैसी फर्ग्यूसन 5225 क्यों खरीदें?

यदि आप 24 HP श्रेणी में ऐसा कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर चाहते हैं जो कम ईंधन खपत, आसान संचालन और कम रखरखाव लागत के साथ आए, तो मैसी फर्ग्यूसन 5225 एक बेहतरीन विकल्प हो सकता है। इसका कॉम्पैक्ट डिजाइन, 8+2 गियरबॉक्स, ऑयल इमर्स्ड ब्रेक्स, टू-स्पीड लाइव PTO, 750 किलोग्राम लिफ्टिंग क्षमता और किफायती कीमत इसे बागवानी, सब्जी खेती, फल बागानों, ग्रीनहाउस और छोटे खेतों के लिए एक उपयुक्त ट्रैक्टर बनाते हैं। जो किसान कम बजट में भरोसेमंद और टिकाऊ ट्रैक्टर की तलाश कर रहे हैं, उनके लिए यह मॉडल एक अच्छा निवेश साबित हो सकता है।

स्वराज टारगेट 630: 29 HP का शक्तिशाली 4WD ट्रैक्टर

स्वराज टारगेट 630 - जानें, कीमत और स्पेसिफिकेशन्स

स्वराज ट्रैक्टर्स भारत के सबसे भरोसेमंद ट्रैक्टर ब्रांड्स में से एक है, जो किसानों की जरूरतों के अनुसार आधुनिक और टिकाऊ ट्रैक्टर विकसित करने के लिए जाना जाता है। कंपनी ने छोटे और विशेष फसलों की खेती करने वाले किसानों के लिए स्वराज टारगेट 630 4WD को पेश किया है। यह एक कॉम्पैक्ट और मल्टी-पर्पज ट्रैक्टर है, जिसे बागवानी, अंगूर, अनार, आम, सब्जियों की खेती और इंटरकल्टीवेशन जैसे कार्यों को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है। 29 HP श्रेणी में आने वाला यह ट्रैक्टर आधुनिक तकनीक, 4WD सिस्टम, मजबूत हाइड्रोलिक्स और कॉम्पैक्ट डिजाइन का बेहतरीन संयोजन प्रदान करता है। इसका हल्का वजन, छोटा टर्निंग रेडियस और शानदार ग्रिप इसे संकरी जगहों और छोटे खेतों में भी आसानी से काम करने योग्य बनाते हैं। यदि आप ऐसा ट्रैक्टर चाहते हैं जो कम ईंधन खर्च के साथ अधिक उत्पादकता दे,

तो स्वराज टारगेट 630 4WD एक उपयुक्त विकल्प हो सकता है।

स्वराज टारगेट 630 4WD इंजन

स्वराज टारगेट 630 4WD में 3 सिलेंडर, 1331 सीसी का शक्तिशाली इंजन दिया गया है, जो 29 हॉर्सपावर (HP) की क्षमता प्रदान करता है। इसका इंजन 2800 RPM पर कार्य करता है और 87 Nm का अधिकतम टॉर्क उत्पन्न करता है, जिससे ट्रैक्टर कठिन कृषि कार्यों के दौरान भी लगातार बेहतर प्रदर्शन देता है। इसमें Dry Type Dual Element Air Filter दिया गया है, जो इंजन को धूल और मिट्टी से सुरक्षित रखता है तथा इंजन की कार्यक्षमता और जीवनकाल को बढ़ाने में मदद करता है। वहीं Liquid Cooled System लंबे समय तक लगातार कार्य करते समय इंजन को अधिक गर्म होने से बचाता है। ट्रैक्टर का 24 HP PTO विभिन्न कृषि उपकरणों को आसानी से संचालित करने के लिए पर्याप्त शक्ति प्रदान करता है।

ट्रांसमिशन और गियरबॉक्स

स्वराज टारगेट 630 4WD में Mechanical Synchromesh Transmission दिया गया है, जो गियर बदलने की प्रक्रिया को आसान और स्मूद बनाता है। इसमें Single Dry Clutch के साथ 9 फॉरवर्ड और 3 रिवर्स गियर दिए गए हैं, जिससे किसान अलग-अलग कृषि कार्यों के अनुसार उपयुक्त गति का चयन कर सकते हैं। बेहतर गियर संयोजन के कारण यह ट्रैक्टर खेत और सड़क दोनों जगह आरामदायक ड्राइविंग अनुभव प्रदान करता है तथा ईंधन की बचत में भी मदद करता है।

ब्रेक और स्टीयरिंग

सुरक्षा और बेहतर नियंत्रण के लिए इस ट्रैक्टर में Oil Immersed Brakes दिए गए हैं, जो लंबे समय तक टिकाऊ रहते हैं और कम रखरखाव की आवश्यकता होती है। इन ब्रेक्स की मदद से खेत और सड़क दोनों जगह बेहतर ब्रेकिंग मिलती है। इसके अलावा, Balanced Power Steering ट्रैक्टर को आसानी से नियंत्रित करने में मदद करता है। केवल 2100 मिमी का टर्निंग रेडियस होने के कारण यह ट्रैक्टर बागों, ग्रीनहाउस और संकरी जगहों पर आसानी से घूम सकता है।

PTO और कृषि उपकरणों की क्षमता

स्वराज टारगेट 630 4WD में 540 और 540E PTO विकल्प दिए गए हैं। यह सुविधा किसानों को अलग-अलग प्रकार के PTO संचालित कृषि उपकरणों जैसे रोटावेटर, स्प्रेयर, घास काटने की मशीन और अन्य इम्प्लीमेंट्स के साथ बेहतर कार्य करने की सुविधा देती है। 540E PTO कम इंजन RPM पर भी बेहतर प्रदर्शन देता है, जिससे ईंधन की बचत होती है और ट्रैक्टर की कार्यक्षमता बढ़ती है।

फ्यूल टैंक क्षमता

इस ट्रैक्टर में 27 लीटर का फ्यूल टैंक दिया गया है, जो छोटे और मध्यम कृषि कार्यों के लिए पर्याप्त है। इसकी बेहतर ईंधन दक्षता के कारण किसान लंबे समय तक बिना बार-बार ईंधन भरवाए खेती के कार्य कर सकते हैं।

डायमेंशन और वजन

स्वराज टारगेट 630 4WD का कुल वजन 975 किलोग्राम है, जबकि इसका व्हीलबेस 1555 मिमी रखा गया है। इसका हल्का और कॉम्पैक्ट डिजाइन इसे छोटे खेतों, बागों और संकरी गलियों में आसानी से संचालित करने योग्य बनाता है। कम वजन होने के बावजूद इसका 4WD सिस्टम खेत में बेहतर संतुलन और मजबूत पकड़ बनाए रखता है।

हाइड्रोलिक्स और लिफ्टिंग क्षमता

इस ट्रैक्टर में 980 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता दी गई है, जो Category-1 हाइड्रोलिक सिस्टम के

साथ आती है। यह क्षमता स्प्रेयर, रोटावेटर, कल्टीवेटर, सीड ड्रिल और अन्य हल्के एवं मध्यम कृषि उपकरणों को आसानी से संचालित करने के लिए पर्याप्त है। सटीक हाइड्रोलिक नियंत्रण के कारण ट्रैक्टर विभिन्न कृषि कार्यों को अधिक कुशलता और कम समय में पूरा करने में सक्षम है।

टायर साइज

स्वराज टारगेट 630 4WD में आगे 180/85 D12 और पीछे 9.50 × 20 या 8.30 × 20 टायर विकल्प दिए गए हैं। ये टायर खेत में बेहतर ग्रिप, कम स्लिपेज और अधिक स्थिरता प्रदान करते हैं, जिससे ट्रैक्टर कठिन परिस्थितियों में भी प्रभावी ढंग से कार्य करता है।

अतिरिक्त फीचर्स

स्वराज टारगेट 630 4WD की एक बड़ी खासियत इसकी 4500 घंटे या 6 वर्ष की वारंटी है। यह लंबी वारंटी कंपनी के उत्पाद की गुणवत्ता और विश्वसनीयता को दर्शाती है। मजबूत निर्माण, आधुनिक तकनीक और कम रखरखाव की आवश्यकता इसे लंबे समय तक उपयोग के लिए एक भरोसेमंद ट्रैक्टर बनाती है।

स्वराज टारगेट 630 4WD की कीमत?

भारत में स्वराज टारगेट 630 4WD ट्रैक्टर की एक्स-शोरूम कीमत लगभग ₹5.24 लाख से ₹5.46 लाख के बीच है। हालांकि, वास्तविक ऑन-रोड कीमत राज्य, डीलर, आरटीओ शुल्क, बीमा और अन्य स्थानीय टैक्स के आधार पर अलग-अलग हो सकती है। खरीदने से पहले अपने नजदीकी अधिकृत स्वराज डीलर से नवीनतम कीमत और उपलब्ध ऑफर्स की जानकारी लेना बेहतर रहेगा।

निष्कर्ष

यदि आप बागवानी, फल उत्पादन, सब्जी खेती या छोटे और संकरे खेतों के लिए एक कॉम्पैक्ट, 29 HP, 4WD ट्रैक्टर की तलाश कर रहे हैं, तो स्वराज टारगेट 630 4WD एक बेहतरीन विकल्प साबित हो सकता है। इसका शक्तिशाली इंजन, मैकेनिकल सिंक्रोमेश ट्रांसमिशन, 4WD तकनीक, 980 किलोग्राम लिफ्टिंग क्षमता, Balanced Power Steering और 540/540E PTO इसे आधुनिक खेती की जरूरतों के अनुसार एक सक्षम और भरोसेमंद ट्रैक्टर बनाते हैं। साथ ही, इसकी किफायती कीमत और लंबी वारंटी इसे छोटे और मध्यम किसानों के लिए एक आकर्षक विकल्प बनाती है।

वीएसटी के टॉप 4 सबसे बेहतरीन 4डब्ल्यूडी ट्रैक्टर - जानें, कीमत और स्पेसिफिकेशन्स

जानें, वीएसटी के टॉप 4 सबसे बेहतरीन 4डब्ल्यूडी ट्रैक्टर पूरी जानकारी

भारत में छोटे, मध्यम और बागवानी करने वाले किसानों के बीच VST (वीएसटी) ट्रैक्टर अपनी कॉम्पैक्ट डिजाइन, बेहतर माइलेज और आधुनिक तकनीक के लिए काफी लोकप्रिय हैं। कंपनी के 4WD (फोर व्हील ड्राइव) ट्रैक्टर कठिन खेतों, ढलान वाले क्षेत्रों, बागवानी, ग्रीनहाउस, इंटरकल्टीवेशन और

बहुउद्देशीय कृषि कार्यों के लिए बेहतरीन माने जाते हैं। 4WD सिस्टम के कारण इन ट्रैक्टरों को बेहतर ट्रैक्शन, अधिक स्थिरता और कम फिसलन का लाभ मिलता है, जिससे कठिन परिस्थितियों में भी काम आसान हो जाता है। अगर आप एक ऐसा 4WD ट्रैक्टर खरीदना चाहते हैं जो कम ईंधन खर्च में शानदार प्रदर्शन दे, तो यहां हम वीएसटी के टॉप 4 सबसे बेहतरीन 4WD ट्रैक्टरों की कीमत, फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स के बारे में विस्तार से बता रहे हैं।

1. वीएसटी 932 DI 4WD

दमदार इंजन और शानदार परफॉर्मेंस

वीएसटी 932 DI 4WD कंपनी का सबसे लोकप्रिय और शक्तिशाली कॉम्पैक्ट ट्रैक्टरों में से एक है। इसमें 3 सिलेंडर, 1642 सीसी का इंजन दिया गया है, जो 32 HP की पावर और 24 HP PTO प्रदान करता है। इसका इंजन 2500 RPM पर कार्य करता है और 109 Nm टॉर्क उत्पन्न करता है, जिससे यह कठिन कृषि कार्यों में भी शानदार प्रदर्शन करता है। इसमें ड्राई टाइप एयर फ़िल्टर और वाटर कूल्ड कूलिंग सिस्टम दिया गया है, जो इंजन की लाइफ बढ़ाने के साथ लगातार लंबे समय तक बेहतर प्रदर्शन सुनिश्चित करता है।

आधुनिक ट्रांसमिशन और आसान संचालन

इस ट्रैक्टर में सिंक्रोमेश ट्रांसमिशन और डबल क्लच दिया गया है, जिससे गियर बदलना बेहद आसान और स्मूद हो जाता है। इसमें 9 फॉरवर्ड + 3 रिवर्स गियरबॉक्स मिलता है, जिससे किसान अलग-अलग कृषि कार्यों के अनुसार उपयुक्त स्पीड का चयन कर सकते हैं। इसकी अधिकतम फॉरवर्ड स्पीड लगभग 25.65 किमी/घंटा तक जाती है, जिससे खेत और सड़क दोनों पर बेहतर प्रदर्शन मिलता है।

हाइड्रोलिक्स, ब्रेक और अन्य फीचर्स

VST 932 DI 4WD में 1250 किलोग्राम लिफ्टिंग क्षमता, तेल में डूबे डिस्क ब्रेक्स, पावर स्टीयरिंग, MID PTO, 540 PTO RPM और 25 लीटर फ्यूल टैंक दिया गया है। इसका वजन 1240 किलोग्राम है तथा 4WD सिस्टम इसे कठिन और फिसलन वाले खेतों में भी बेहतर पकड़ प्रदान करता है। यह ट्रैक्टर विशेष रूप से बागवानी, ग्रीनहाउस, सब्जी खेती और छोटे खेतों के लिए एक बेहतरीन विकल्प माना जाता है।

VST 932 DI 4WD की कीमत

₹6.31 लाख से ₹6.56 लाख (एक्स-शोरूम)

2. वीएसटी एमटी 225 - अजय पावर प्लस

कॉम्पैक्ट खेती के लिए भरोसेमंद ट्रैक्टर

वीएसटी एमटी 225 - अजय पावर प्लस छोटे किसानों और बागवानी करने वालों के लिए डिजाइन किया गया एक आधुनिक 4WD ट्रैक्टर है। इसमें 3 सिलेंडर, 980 सीसी का इंजन मिलता है, जो 22 HP की पावर और 18 HP पीटीओ प्रदान करता है। इसका इंजन 3000 RPM पर कार्य करता है और फोर्स्ड वाटर कूलिंग सिस्टम के कारण लंबे समय तक बिना ओवरहीट हुए काम करता है। वहीं ड्राई टाइप एयर क्लीनर इंजन को धूल-मिट्टी से सुरक्षित रखता है।

ट्रांसमिशन और कार्यक्षमता

इस ट्रैक्टर में कांस्टेंट मेष ट्रांसमिशन के साथ 8 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स गियरबॉक्स दिया गया है। यह गियरबॉक्स अलग-अलग कृषि कार्यों के दौरान बेहतर स्पीड कंट्रोल और आसान संचालन प्रदान करता है। कॉम्पैक्ट डिजाइन होने के कारण यह संकरी जगहों और बागों में आसानी से काम कर सकता है।

हाइड्रोलिक्स और अन्य विशेषताएं

VST MT 225-AJAI Power Plus में 750 किलोग्राम लिफ्टिंग क्षमता, तेल में डूबे डिस्क ब्रेक्स,

540/760 PTO RPM (वैकल्पिक 1000 RPM) और 24 लीटर फ्यूल टैंक दिया गया है। इसका वजन केवल 860 किलोग्राम है, जिससे यह हल्का और आसानी से नियंत्रित होने वाला ट्रैक्टर बन जाता है। यह ट्रैक्टर छोटे कृषि उपकरणों के साथ बेहतरीन प्रदर्शन करता है।

VST MT 225-AJAI Power Plus की कीमत
₹4.79 लाख से ₹4.98 लाख (एक्स-शोरूम)

3. वीएसटी एमटी 180 डी 4डब्ल्यूडी

छोटे किसानों के लिए किफायती विकल्प

यदि आप कम बजट में 4WD ट्रैक्टर खरीदना चाहते हैं, तो VST MT-180 D 4WD एक अच्छा विकल्प हो सकता है। इसमें 3 सिलेंडर, 979.5 सीसी का इंजन दिया गया है, जो 18.5 HP की पावर और 15.8 HP PTO प्रदान करता है। इंजन 2700 RPM पर कार्य करता है और वाटर कूल्ड कूलिंग सिस्टम के साथ आता है, जिससे लंबे समय तक लगातार काम करने में कोई परेशानी नहीं होती।

ट्रांसमिशन और कंट्रोल

इस ट्रैक्टर में कॉम्बिनेशन ऑफ़ कांस्टेंट मेश एंड स्लाइडिंग मेश ट्रांसमिशन दिया गया है। साथ ही Single Dry Clutch और 6 Forward + 2 Reverse गियरबॉक्स उपलब्ध है। इसकी अधिकतम फॉरवर्ड स्पीड 19.11 किमी/घंटा है, जो छोटे खेतों और बागवानी कार्यों के लिए पर्याप्त मानी जाती है।

हाइड्रोलिक्स और प्रमुख फीचर्स

वीएसटी एमटी 180 डी 4डब्ल्यूडी में 750 किलोग्राम लिफ्टिंग क्षमता, ऑटो ड्राफ्ट & डेप्थ कण्ट्रोल, तेल में डूबे डिस्क ब्रेक्स, मल्टी स्पीड पीटीओ, 18 लीटर फ्यूल टैंक और मैकेनिकल स्टीयरिंग दिया गया है। इसका वजन केवल 840 किलोग्राम है, जिससे यह बेहद कॉम्पैक्ट और आसान संचालन वाला ट्रैक्टर बन जाता है।

VST MT-180 D 4WD की कीमत
₹3.10 लाख से ₹3.23 लाख (एक्स-शोरूम)

4. वीएसटी 918 4WD

दमदार इंजन और भरोसेमंद प्रदर्शन

VST 918 4WD छोटे और मध्यम किसानों के लिए एक शानदार 4WD ट्रैक्टर है। इसमें 3 सिलेंडर, 979.5 सीसी का इंजन दिया गया है, जो 18.5 HP की शक्ति उत्पन्न करता है। इंजन 2700 RPM पर कार्य करता है और 54 Nm टॉर्क प्रदान करता है, जिससे यह कठिन परिस्थितियों में भी बेहतरीन प्रदर्शन करता है। इसमें वाटर कूल्ड कूलिंग सिस्टम और ड्राई टाइप एयर फ़िल्टर दिया गया है, जो इंजन को लंबे समय तक सुरक्षित और कुशल बनाए रखते हैं।

ट्रांसमिशन और आसान ड्राइविंग

इस ट्रैक्टर में 8 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स और 6 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स गियर विकल्प उपलब्ध हैं, जिससे किसान अपनी जरूरत के अनुसार मॉडल चुन सकते हैं। इसका ट्रांसमिशन सिस्टम स्मूद गियर शिफ्टिंग और बेहतर नियंत्रण प्रदान करता है। 4WD सिस्टम होने के कारण यह ऊबड़-खाबड़ और फिसलन वाली जमीन पर भी शानदार पकड़ बनाए रखता है।

हाइड्रोलिक्स और अन्य खूबियां

VST 918 4WD में 750/500 किलोग्राम लिफ्टिंग क्षमता, 18 लीटर फ्यूल टैंक, ड्राई ब्रेक्स, मैन्युअल क्लच और मजबूत हाइड्रोलिक सिस्टम दिया गया है। यह ट्रैक्टर रोटावेटर, स्प्रेयर, हल और अन्य हल्के कृषि उपकरणों के साथ बेहतर प्रदर्शन करता है। कॉम्पैक्ट डिजाइन होने के कारण यह बागवानी और छोटे खेतों के लिए उपयुक्त है।

VST 918 4WD की कीमत
₹3.93 लाख से ₹4.09 लाख (एक्स-शोरूम)

SONALIKA
जीतने का दम
दमदार ट्रैक्टर,
जो दे आपके भरोसे को दम
सोनालीका सिकंदर
DI 42 P+
SONALIKA
DI-42
SONALIKA
2891 cc
दमदार इंजन,
205 Nm टॉर्क
ADVANCED 5G HYDRAULICS
2000 kg
लिफ़्ट कॅपेसिटी

निष्कर्ष

यदि आपको अधिक पावर और आधुनिक फीचर्स वाला ट्रैक्टर चाहिए, तो VST 932 DI 4WD सबसे अच्छा विकल्प है। VST MT 225-AJAI Power Plus छोटे किसानों और बागवानी के लिए शानदार प्रदर्शन देता है। वहीं VST MT-180 D 4WD कम बजट में 4WD ट्रैक्टर खरीदने वालों के लिए बेहतरीन विकल्प है। यदि आप हल्के कृषि कार्यों और बागवानी के लिए कॉम्पैक्ट लेकिन भरोसेमंद ट्रैक्टर चाहते हैं, तो VST 918 4WD एक अच्छा चुनाव साबित हो सकता है।

इन चारों ट्रैक्टरों में 4WD तकनीक, बेहतर ट्रैक्शन, कम ईंधन खपत और आसान संचालन जैसी खूबियां मौजूद हैं, जिससे किसान अपनी खेती की जरूरत और बजट के अनुसार सही मॉडल का चयन कर सकते हैं।

धान की खेती के लिए महिंद्रा के बेस्ट 4 रोटावेटर - जानें, कीमत और फीचर्स

जानें, महिंद्रा के टॉप 4 रोटावेटर की पूरी जानकारी

धान की खेती में खेत की सही तैयारी अच्छी पैदावार की सबसे महत्वपूर्ण शर्तों में से एक है। धान की रोपाई से पहले मिट्टी को बारीक, समतल और नरम बनाना आवश्यक होता है, ताकि पौधों की जड़ें तेजी से विकसित हों और फसल का विकास बेहतर हो। इसके अलावा, धान की कटाई के बाद खेत में बचे फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाने, पडलिंग (Puddling) करने और अगली फसल के लिए भूमि तैयार करने में रोटावेटर की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। महिंद्रा एग्री इम्प्लीमेंट्स भारतीय किसानों के लिए विभिन्न हॉर्सपावर रेंज में आधुनिक रोटावेटर उपलब्ध कराती है। ये रोटावेटर मजबूत निर्माण, कम ईंधन खपत, उच्च कार्यक्षमता और लंबी उम्र के लिए जाने जाते हैं। यदि आप धान की खेती के लिए एक भरोसेमंद रोटावेटर खरीदने की योजना बना रहे हैं, तो महिंद्रा के ये चार मॉडल आपकी जरूरतों के अनुसार बेहतरीन विकल्प साबित हो सकते हैं।

1. महिंद्रा महावेटर एचडी

महिंद्रा महावेटर HD उन किसानों के लिए तैयार किया गया है, जिन्हें बड़े खेतों में लगातार और भारी कृषि कार्य करने होते हैं। यह रोटावेटर मजबूत निर्माण, उच्च गुणवत्ता वाले ब्लेड और बेहतरीन प्रदर्शन के कारण भारतीय किसानों के बीच काफी लोकप्रिय है। विशेष रूप से धान की खेती में यह मिट्टी को गहराई तक भुरभुरा बनाकर खेत को रोपाई के लिए तैयार करता है। साथ ही धान की कटाई के बाद खेत में बचे पुआल और अन्य फसल अवशेषों को मिट्टी में अच्छी तरह मिलाने का काम भी आसानी से करता है। यह रोटावेटर 45 से 70 HP क्षमता वाले ट्रैक्टरों के साथ आसानी से संचालित किया जा सकता है। इसकी मजबूत संरचना कठिन और भारी मिट्टी में भी बेहतरीन प्रदर्शन देती है। कम ईंधन खपत के साथ अधिक क्षेत्र को कम समय में तैयार करने की इसकी क्षमता किसानों की लागत कम करने में मदद करती है। बड़े खेतों में काम करने वाले किसानों के लिए यह एक टिकाऊ और भरोसेमंद कृषि उपकरण माना

जाता है।

उपलब्ध मॉडल

- महिंद्रा महावेटर 1.6 m
- महिंद्रा महावेटर 1.8 m
- महिंद्रा महावेटर 2.1 m
- महिंद्रा महावेटर 2.3 m
- महिंद्रा महावेटर 2.5 m

2. महिंद्रा सुपरवेटर

महिंद्रा सुपरवेटर को मध्यम और बड़े किसानों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। यह रोटावेटर मिट्टी को अच्छी तरह पलटने, भुरभुरा बनाने और खेत को समतल करने में प्रभावी भूमिका निभाता है। धान की खेती के दौरान यह मिट्टी की संरचना में सुधार करता है, जिससे पौधों की जड़ों का विकास बेहतर होता है और फसल की उत्पादकता बढ़ती है।यह 45 से 60 HP क्षमता वाले ट्रैक्टरों के लिए उपयुक्त है। इसकी मजबूत डिजाइन और बेहतर ब्लेड व्यवस्था मिट्टी को समान रूप से तैयार करती है, जिससे खेत में नमी लंबे समय तक बनी रहती है। यह रोटावेटर ईंधन की बचत करते हुए अधिक कार्यक्षमता प्रदान करता है और कम रखरखाव के कारण किसानों के लिए एक किफायती विकल्प बन जाता है। छोटे और मध्यम आकार के खेतों में यह शानदार परिणाम देता है।

उपलब्ध मॉडल

- महिंद्रा सुपरवेटर 1.6 m
- महिंद्रा सुपरवेटर 1.8 m
- महिंद्रा सुपरवेटर 2.1 m

3. महिंद्रा जायरोवेटर जेडएलएक्स 125

महिंद्रा जायरोवेटर ZLX 125 उन किसानों के लिए एक बेहतरीन विकल्प है, जिन्हें कम से मध्यम हॉर्सपावर वाले ट्रैक्टर के साथ उच्च गुणवत्ता वाला रोटावेटर चाहिए। यह मॉडल मिट्टी को बारीक बनाने, खरपतवार नियंत्रण और फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाने का कार्य प्रभावी ढंग से करता है। धान की खेती में यह खेत की तैयारी को आसान और तेज बनाता है, जिससे समय और श्रम दोनों की बचत होती है। यह रोटावेटर 30 से 60 HP क्षमता वाले ट्रैक्टरों के साथ आसानी से संचालित किया जा सकता है। इसकी मजबूत बनावट और उच्च गुणवत्ता वाले ब्लेड कठिन परिस्थितियों में भी लगातार बेहतर प्रदर्शन सुनिश्चित करते हैं। यह विभिन्न प्रकार की मिट्टी में समान रूप से कार्य करता है और किसानों को बेहतर फील्ड फिनिशिंग प्रदान करता है।

उपलब्ध मॉडल

- महिंद्रा जायरोवेटर जेडएलएक्स 125
- महिंद्रा जायरोवेटर जेडएलएक्स 145
- महिंद्रा जायरोवेटर जेडएलएक्स 165
- महिंद्रा जायरोवेटर जेडएलएक्स 185
- महिंद्रा जायरोवेटर जेडएलएक्स 205

4. महिंद्रा जायरोवेटर जेडएलएक्स+

महिंद्रा जायरोवेटर ZLX+ कंपनी का एक उन्नत और मल्टी-परपज़ रोटावेटर है, जिसे आधुनिक खेती की जरूरतों को ध्यान में रखकर विकसित किया गया है। यह विशेष रूप से धान की खेती, पडलिंग, फसल अवशेष प्रबंधन और मिट्टी की बेहतरीन तैयारी के लिए उपयुक्त माना जाता है। इसकी आधुनिक तकनीक और मजबूत निर्माण इसे अन्य सामान्य रोटावेटरों से अलग बनाते हैं। यह रोटावेटर 35 से 60 HP क्षमता वाले ट्रैक्टरों के साथ उपयोग किया जा सकता है। इसमें 4 अलग-अलग गियरबॉक्स स्पीड की सुविधा दी गई है, जिससे किसान मिट्टी की स्थिति और कार्य की आवश्यकता के अनुसार उपयुक्त गति का चयन कर सकते हैं। मल्टी-स्पीड एडजस्टर विभिन्न कृषि कार्यों में अधिक लचीलापन प्रदान करता है, जबकि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर डिजाइन की गई इसकी संरचना कम शोर के साथ स्मूद ऑपरेशन सुनिश्चित करती है।

महिंद्रा जायरोवेटर ZLX+ में वाटर-टाइट सीलिंग

सिस्टम दिया गया है, जिससे यह गीली और सूखी दोनों प्रकार की मिट्टी में समान रूप से प्रभावी ढंग से कार्य करता है। यही कारण है कि यह धान की खेती में पडलिंग के लिए एक आदर्श विकल्प माना जाता है। इसका एडजस्टेबल डेप्थ कंट्रोल खेत की आवश्यकता के अनुसार जुताई की गहराई तय करने में मदद करता है, जबकि एडजस्टेबल ट्रेलिंग बोर्ड खेत को अधिक समतल और बेहतर फिनिश देता है।

इस रोटावेटर में मल्टी-ब्लेड एडजस्टमेंट (L और C प्रकार) की सुविधा उपलब्ध है, जिससे मिट्टी का महीन चूर्ण तैयार होता है और खेत में बेहतर टिल्थ प्राप्त होती है। यह मिट्टी में हवा और पानी का संतुलित मिश्रण बनाए रखने में भी मदद करता है, जिससे पौधों की जड़ों का विकास बेहतर होता है।

धान की कटाई के बाद खेत में बचे पुआल और फसल अवशेषों को यह रोटावेटर प्रभावी ढंग से मिट्टी में मिला देता है, जिससे जैविक पदार्थ (ऑर्गेनिक मैटर) की मात्रा बढ़ती है और मिट्टी की उर्वरता में सुधार होता है। इसके अलावा यह खाद को भी मिट्टी में समान रूप से मिलाता है, जिससे पोषक तत्वों का बेहतर उपयोग होता है।

धान की खेती के लिए कौन-सा महिंद्रा रोटावेटर चुनें?

यदि आपके पास 45–70 HP का ट्रैक्टर है और बड़े क्षेत्र में भारी कार्य करना है, तो महिंद्रा महावेटर HD एक बेहतरीन विकल्प है। वहीं महिंद्रा सुपरवेटर मध्यम आकार के खेतों के लिए उपयुक्त और किफायती विकल्प साबित होता है। यदि आपके ट्रैक्टर की क्षमता 30–60 HP है, तो महिंद्रा जायरोवेटर ZLX 125 बेहतर प्रदर्शन देता है। वहीं आधुनिक फीचर्स, मल्टी-स्पीड गियरबॉक्स, बेहतर पडलिंग क्षमता और फसल अवशेष प्रबंधन जैसी सुविधाओं की आवश्यकता होने पर महिंद्रा जायरोवेटर ZLX+ सबसे उन्नत और उपयोगी विकल्प माना जाता है।

इन सभी महिंद्रा रोटावेटरों की कीमत मॉडल, कार्य चौड़ाई, डीलर और राज्य के अनुसार अलग-अलग हो सकती है। खरीदने से पहले अपने ट्रैक्टर की HP क्षमता और खेत की आवश्यकता के अनुसार सही मॉडल का चयन करना अधिक लाभदायक रहेगा।

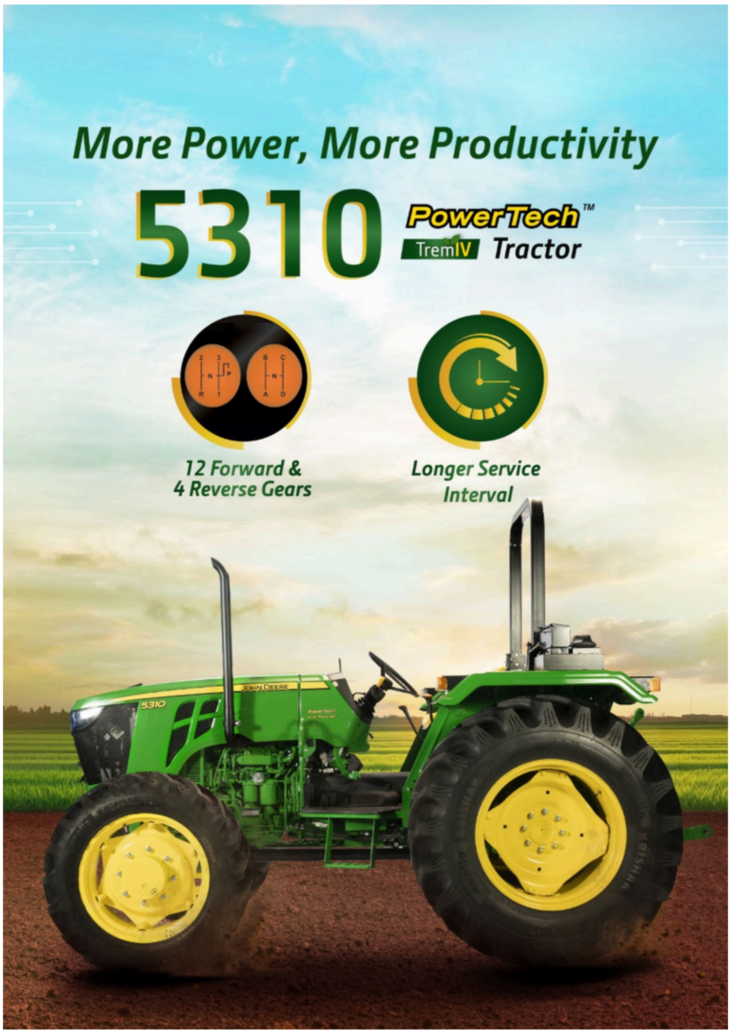

महिंद्रा 575 डीआई एक्सपी प्लस VS स्वराज 744 एफई: कौन-सा ट्रैक्टर किसानों के लिए रहेगा बेहतर?

महिंद्रा 575 डीआई एक्सपी प्लस VS स्वराज 744 एफई - जानें, कीमत और स्पेसिफिकेशन्स

50 HP श्रेणी में लगभग महिंद्रा 575 डीआई XP प्लस और स्वराज 744 एफई भारत के सबसे लोकप्रिय ट्रैक्टरों में शामिल हैं। दोनों ट्रैक्टर खेती के लगभग सभी कार्यों जैसे जुताई, बुवाई, रोटावेटर, कल्टीवेटर, ट्रॉली ढुलाई और हार्वेस्टिंग से जुड़े कार्यों के लिए उपयुक्त हैं। दोनों की कीमत भी लगभग समान है, इसलिए किसानों के लिए सही ट्रैक्टर का चुनाव करना थोड़ा कठिन हो सकता है। हालांकि, इंजन क्षमता, हाइड्रोलिक्स, वजन, ट्रांसमिशन और अन्य फीचर्स के आधार पर दोनों ट्रैक्टरों में कई महत्वपूर्ण अंतर देखने को मिलते हैं। आइए विस्तार से जानते हैं कि कौन-सा ट्रैक्टर किस प्रकार के किसानों के लिए बेहतर विकल्प साबित हो सकता है।

इंजन और परफॉर्मेंस में अंतर

महिंद्रा 575 डीआई XP प्लस में 4 सिलेंडर, 2979 सीसी का इंजन दिया गया है, जो 47 HP की शक्ति उत्पन्न करता है। यह इंजन 2000 RPM पर कार्य करता है और 207 Nm का अधिकतम टॉर्क प्रदान करता है। इसमें 3-स्टेज ऑयल बाथ एयर फिल्टर विद प्री-क्लीनर और वाटर कूल्ड सिस्टम दिया गया है, जिससे इंजन की कार्यक्षमता लंबे समय तक बनी रहती है। इसका 42 HP PTO खेत में भारी कृषि उपकरणों के संचालन के लिए पर्याप्त शक्ति प्रदान करता है।

दूसरी ओर, स्वराज 744 एफई में 3 सिलेंडर का बड़ा 3307 सीसी इंजन मिलता है, जो 50 HP की शक्ति देता है। इसका इंजन भी 2000 RPM पर कार्य करता है और 41.8 HP PTO उपलब्ध कराता है। बड़ा इंजन कम RPM पर अच्छा खिंचाव (Pulling Power) प्रदान करता है, जिससे यह भारी जुताई और ट्रॉली ढुलाई जैसे कार्यों में बेहतर

प्रदर्शन करता है।

यदि आप स्मूद इंजन, कम कंपन और बेहतर टॉर्क चाहते हैं तो महिंद्रा 575 डीआई XP प्लस बेहतर विकल्प है, जबकि भारी कार्यों और अधिक इंजन क्षमता की आवश्यकता वाले किसानों के लिए स्वराज 744 एफई अधिक उपयुक्त माना जा सकता है।

ट्रांसमिशन और गियरबॉक्स का अंतर

महिंद्रा 575 डीआई XP प्लस में Partial Constant Mesh ट्रांसमिशन दिया गया है, जो पारंपरिक ट्रांसमिशन की तुलना में गियर बदलने को अधिक आसान और स्मूद बनाता है। इसमें Single या Dual Clutch का विकल्प मिलता है तथा 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर दिए गए हैं। इसकी अधिकतम फॉरवर्ड स्पीड 31.3 किमी/घंटा है।

स्वराज 744 एफई में भी 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर के साथ Single तथा Optional Dual Clutch मिलता है। इसकी अधिकतम फॉरवर्ड स्पीड 29.2 किमी/घंटा है। हालांकि इसमें Partial Constant Mesh ट्रांसमिशन नहीं दिया गया है, लेकिन इसका गियर सिस्टम मजबूत और टिकाऊ माना जाता है।

यदि गियर शिफ्टिंग की स्मूदनेस और आराम प्राथमिकता है तो महिंद्रा आगे निकलता है, जबकि मजबूत ट्रांसमिशन और भारी कार्यों के लिए स्वराज भी एक भरोसेमंद विकल्प है।

PTO और कृषि उपकरणों के संचालन में अंतर

महिंद्रा 575 डीआई XP प्लस में 6-स्प्लाइन PTO दिया गया है, जो 540 RPM पर कार्य करता है। इसका 42 HP PTO रोटावेटर, रीपर, थ्रेशर, सीड ड्रिल और अन्य कृषि उपकरणों को आसानी से संचालित कर सकता है। स्वराज 744 एफई की सबसे बड़ी खासियत इसका Multi Speed PTO है, जिसमें 540 और 1000 RPM दोनों विकल्प मिलते हैं। यह सुविधा विभिन्न प्रकार के आधुनिक कृषि उपकरणों के उपयोग में अधिक लचीलापन प्रदान करती है। यदि किसान अलग-अलग प्रकार के PTO संचालित उपकरणों का उपयोग करते हैं, तो स्वराज 744 एफई का Multi Speed PTO अधिक उपयोगी साबित हो सकता है।

हाइड्रोलिक्स और लिफ्टिंग क्षमता में अंतर

महिंद्रा 575 डीआई XP प्लस में 1500 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता दी गई है। इसमें High Precision CAT-2 हाइड्रोलिक सिस्टम और 3-पॉइंट लिंकज मिलता है, जिससे सामान्य कृषि उपकरणों का संचालन आसानी से किया जा सकता है।

स्वराज 744 एफई इस मामले में स्पष्ट बढ़त बनाता है। इसमें 2000 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता दी गई है, जो महिंद्रा से 500 किलोग्राम अधिक है। साथ ही इसमें Automatic Depth & Draft Control सिस्टम दिया गया है, जिससे भारी इम्प्लीमेंट्स को अधिक प्रभावी ढंग से संचालित किया जा सकता है।

यदि खेतों में भारी रोटावेटर, MB प्लाउ, हैवी कल्टीवेटर या अन्य बड़े कृषि उपकरणों का उपयोग अधिक होता है, तो स्वराज 744 एफई अधिक उपयुक्त रहेगा।

वजन, आकार और स्थिरता में अंतर

महिंद्रा 575 डीआई XP प्लस का कुल वजन 1890 किलोग्राम तथा व्हीलबेस 1960 मिमी है। इसका हल्का वजन इसे छोटे और मध्यम खेतों में अधिक फुर्तीला बनाता है तथा ईंधन की बचत में भी मदद करता है।

स्वराज 744 एफई का वजन 2060 किलोग्राम और व्हीलबेस 2095 मिमी है। इसका लंबा व्हीलबेस और अधिक वजन ट्रैक्टर को भारी उपकरणों के साथ बेहतर संतुलन और स्थिरता प्रदान करता है। इसके अलावा इसकी 435 मिमी ग्राउंड क्लीयरेंस ऊबड़-खाबड़ खेतों में भी बेहतर प्रदर्शन सुनिश्चित

करती है।

स्टीयरिंग और ब्रेकिंग में अंतर

महिंद्रा 575 डीआई XP प्लस में Dual Acting Power Steering तथा Manual Steering का विकल्प मिलता है। इसमें Oil Immersed Brakes स्टैंडर्ड रूप में उपलब्ध हैं, जो लंबे समय तक टिकाऊ और कम रखरखाव वाले माने जाते हैं। स्वराज 744 एफई में Mechanical तथा Optional Power Steering मिलता है। इसके Oil Immersed Brakes भी विकल्प के रूप में उपलब्ध हैं। यदि बेहतर नियंत्रण और आरामदायक ड्राइविंग की बात करें तो महिंद्रा का पावर स्टीयरिंग सिस्टम अधिक सुविधाजनक महसूस होता है।

फ्यूल टैंक और लंबे समय तक काम करने की क्षमता

महिंद्रा 575 डीआई XP प्लस में 50 लीटर का फ्यूल टैंक मिलता है, जो सामान्य कृषि कार्यों के लिए पर्याप्त है। स्वराज 744 एफई में 56 लीटर का बड़ा फ्यूल टैंक दिया गया है। अधिक क्षमता वाला यह टैंक लंबे समय तक लगातार कार्य करने में मदद करता है और बार-बार ईंधन भरवाने की आवश्यकता कम करता है।

टायर और खेत में पकड़

महिंद्रा 575 डीआई XP प्लस में 6.00×16 फ्रंट और 14.9×28 रियर टायर दिए गए हैं, जो सामान्य खेती और परिवहन कार्यों के लिए उपयुक्त हैं। स्वराज 744 एफई में फ्रंट टायर के दो विकल्प (6.00×16 और 7.50×16) तथा रियर टायर के भी दो विकल्प (13.6×28 और 14.9×28) मिलते हैं। इससे किसान अपनी जरूरत और खेत की परिस्थितियों के अनुसार उपयुक्त टायर चुन सकते हैं।

कीमत के आधार पर कौन बेहतर है?

दोनों ट्रैक्टरों की एक्स-शोरूम कीमत लगभग ₹7.42 लाख से ₹7.73 लाख के बीच है। समान कीमत होने के बावजूद दोनों की खूबियां अलग-अलग हैं। महिंद्रा बेहतर ट्रांसमिशन, 4-सिलेंडर इंजन और स्मूद ड्राइविंग अनुभव देता है, जबकि स्वराज अधिक इंजन क्षमता, ज्यादा लिफ्टिंग क्षमता, बड़ा फ्यूल टैंक और Multi Speed PTO जैसी सुविधाएं प्रदान करता है।

कौन-सा ट्रैक्टर खरीदना चाहिए?

यदि आपकी प्राथमिकता स्मूद ड्राइविंग, कम कंपन वाला 4-सिलेंडर इंजन, बेहतर टॉर्क और आसान गियर शिफ्टिंग है, तो महिंद्रा 575 डीआई XP प्लस आपके लिए बेहतर विकल्प हो सकता है। यह मिश्रित खेती, नियमित कृषि कार्यों और मध्यम आकार के खेतों के लिए एक भरोसेमंद ट्रैक्टर है।

वहीं यदि आप भारी कृषि उपकरणों का अधिक उपयोग करते हैं, अधिक लिफ्टिंग क्षमता चाहते हैं, लंबी अवधि तक बिना रुके काम करना चाहते हैं और मजबूत खिंचाव वाला ट्रैक्टर खरीदना चाहते हैं, तो स्वराज 744 एफई अधिक उपयुक्त विकल्प साबित हो सकता है। इसकी 2000 किलोग्राम लिफ्टिंग क्षमता, बड़ा 3307 सीसी इंजन और Multi Speed PTO इसे भारी खेती के कार्यों के लिए विशेष रूप से प्रभावी बनाते हैं।

निष्कर्ष

महिंद्रा 575 डीआई XP प्लस और स्वराज 744 एफई दोनों ही 47 HP श्रेणी के बेहतरीन ट्रैक्टर हैं। यदि आपकी जरूरत आरामदायक संचालन, आधुनिक ट्रांसमिशन और बेहतर ड्राइविंग अनुभव की है, तो महिंद्रा एक मजबूत विकल्प है। वहीं अधिक ताकत, भारी उपकरणों के संचालन और उच्च लिफ्टिंग क्षमता की आवश्यकता होने पर स्वराज 744 एफई बेहतर मूल्य प्रदान करता है। खरीदारी से पहले अपने खेत के आकार, उपयोग होने वाले कृषि उपकरणों और दैनिक कार्यों की जरूरतों का मूल्यांकन करके सही ट्रैक्टर का चयन करना सबसे बेहतर रहेगा।

कल्टीवेटर vs रोटावेटर: खेती के लिए कौन-सा कृषि यंत्र है सबसे बेस्ट?

कल्टीवेटर vs रोटावेटर - जानें, इम्पेलमेंट्स के फीचर्स और स्पेसिफिकेशन

आधुनिक खेती में समय की बचत, लागत में कमी और बेहतर उत्पादन के लिए कृषि यंत्रों का उपयोग लगातार बढ़ रहा है। खेत की तैयारी के लिए सबसे अधिक इस्तेमाल होने वाले उपकरणों में कल्टीवेटर और रोटावेटर शामिल हैं। दोनों मशीनों का उद्देश्य मिट्टी को खेती के लिए तैयार करना है, लेकिन इनकी कार्यप्रणाली, उपयोग और परिणाम अलग-अलग होते हैं। इसलिए किसानों के लिए यह जानना जरूरी है कि उनकी खेती और मिट्टी के अनुसार कौन-सा कृषि यंत्र अधिक उपयोगी रहेगा।

कल्टीवेटर क्या है?

कल्टीवेटर एक ऐसा कृषि उपकरण है जिसका उपयोग मुख्य रूप से खेत की जुताई, मिट्टी को ढीला करने, खरपतवार हटाने और मिट्टी के बड़े ढेलों को तोड़ने के लिए किया जाता है। यह मिट्टी में वायु संचार बढ़ाने और नमी बनाए रखने में भी मदद करता है। पहले कल्टीवेटर का उपयोग पशुओं की सहायता से किया जाता था, लेकिन वर्तमान समय में अधिकांश किसान ट्रैक्टर चालित कल्टीवेटर का उपयोग करते हैं, जिससे कम समय में अधिक क्षेत्र की जुताई की जा सकती है।

कल्टीवेटर के प्रमुख प्रकार

शक्ति के स्रोत के आधार पर कल्टीवेटर को दो मुख्य वर्गों में बांटा जाता है—

- पशु चालित कल्टीवेटर
- ट्रैक्टर चालित कल्टीवेटर

ट्रैक्टर चालित कल्टीवेटर को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया जाता है—

- ट्रेल्ड (Trailed) कल्टीवेटर
- माउंटेड (Mounted) कल्टीवेटर

इसके अलावा टाइन **(Tine)** की संरचना के आधार

पर इन्हें स्प्रिंग लोडेड टाइन और रिजिड (कठोर) टाइन कल्टीवेटर के रूप में भी वर्गीकृत किया जाता है।

ट्रेल्ड टाइप कल्टीवेटर क्या होता है?

ट्रेल्ड टाइप कल्टीवेटर को ट्रैक्टर के पीछे खींचकर चलाया जाता है। इसमें एक मजबूत मुख्य फ्रेम होता है, जिस पर कई टाइन या खुरपियां लगी होती हैं। अधिकांश मॉडलों में गहराई नियंत्रित करने और संतुलन बनाए रखने के लिए पहियों की व्यवस्था भी होती है।

इस प्रकार के कल्टीवेटर में टाइनों को इस प्रकार लगाया जाता है कि मिट्टी, खरपतवार और फसल के अवशेष आसानी से बाहर निकल जाएं। टाइनों की दूरी और गहराई को आवश्यकता के अनुसार समायोजित किया जा सकता है, जिससे विभिन्न प्रकार की मिट्टी में बेहतर परिणाम प्राप्त होते हैं। बड़े खेतों में यह कल्टीवेटर अधिक प्रभावी माना जाता है।

माउंटेड टाइप कल्टीवेटर की विशेषताएं

माउंटेड टाइप कल्टीवेटर ट्रैक्टर के थ्री-पॉइंट हाइड्रोलिक लिंकेज से जुड़ा होता है। ट्रैक्टर का हाइड्रोलिक सिस्टम इसे ऊपर-नीचे करने और खेत में नियंत्रित तरीके से चलाने में मदद करता है। इसमें अलग-अलग प्रकार के फावड़े और स्वीप लगाए जा सकते हैं, जिनका चयन मिट्टी और फसल के अनुसार किया जाता है। इसका संचालन आसान होता है और छोटे तथा मध्यम आकार के खेतों में यह बेहतरीन प्रदर्शन करता है।

स्प्रिंग लोडेड टाइन कल्टीवेटर

स्प्रिंग लोडेड टाइन कल्टीवेटर विशेष रूप से पथरीली या जड़ों वाली भूमि के लिए तैयार किया गया है। इसमें प्रत्येक टाइन स्प्रिंग से जुड़ी होती है, जिससे यदि कार्य के दौरान कोई बड़ा पत्थर या जड़ सामने आती है तो टाइन पीछे की ओर झुक जाती है और बाधा पार करने के बाद स्वतः अपनी सामान्य स्थिति में वापस आ जाती है।

इस तकनीक से मशीन को नुकसान नहीं पहुंचता और कार्य बिना रुके जारी रहता है। इस प्रकार के कल्टीवेटर में सामान्यतः 7, 9, 11, 13 या उससे अधिक टाइन लगाई जा सकती हैं।

कठोर (रिजिड) टाइन कल्टीवेटर

रिजिड टाइन कल्टीवेटर में टाइन मजबूत क्लैंप और बोल्ट की सहायता से फ्रेम पर स्थायी रूप से लगाई जाती हैं। कार्य के दौरान ये टाइन नहीं झुकतीं, जिससे मिट्टी की गहरी और प्रभावी जुताई संभव होती है। इस प्रकार के कल्टीवेटर में आवश्यकता के अनुसार टाइनों की दूरी बदली जा सकती है। यह सामान्य और समतल खेतों में बेहतरीन परिणाम देता है और विभिन्न प्रकार की फसलों के लिए उपयोगी माना जाता है।

रोटावेटर क्या होता है?

रोटावेटर, जिसे रोटरी टिलर (Rotary Tiller) भी कहा जाता है, आधुनिक कृषि का एक अत्यंत उपयोगी उपकरण है। इसका उपयोग मुख्य रूप से बीज बुवाई से पहले खेत को तैयार करने के लिए किया जाता है। यह ट्रैक्टर के PTO (Power Take-Off) से संचालित होता है और इसके घूमने वाले ब्लेड मिट्टी को काटकर भुरभुरी बना देते हैं।

रोटावेटर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह पिछली फसल के अवशेषों को काटकर मिट्टी में मिला देता है, जिससे जैविक पदार्थ बढ़ते हैं और मिट्टी की उर्वरता में सुधार होता है।

रोटावेटर कैसे कार्य करता है?

रोटावेटर में लगे मजबूत रोटर और एल-आकार के ब्लेड तेज गति से घूमते हैं। ये ब्लेड मिट्टी की ऊपरी परत को काटते, पलटते और छोटे-छोटे कणों में बदल देते हैं। परिणामस्वरूप खेत में एक समान और भुरभुरी बीज क्यारी तैयार होती है, जिससे बीजों का अंकुरण बेहतर होता है।

रोटावेटर के प्रमुख उपयोग

रोटावेटर का उपयोग केवल मिट्टी तैयार करने तक सीमित नहीं है। इसका इस्तेमाल कई कृषि कार्यों में किया जाता है।

- बीज बुवाई के लिए खेत तैयार करना।
- मिट्टी के ढेलों को बारीक करना।
- फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाना।
- जैविक खाद और कम्पोस्ट को मिट्टी में समान रूप से मिलाना।
- खरपतवार नियंत्रण में सहायता करना।
- मिट्टी में वायु संचार बढ़ाना।
- बागवानी और सब्जी उत्पादन के लिए बेड तैयार करना।
- कठोर मिट्टी की ऊपरी परत को तोड़ना।

रोटावेटर के प्रमुख लाभ

रोटावेटर एक ही बार में कई कार्य पूरे कर देता है, जिससे किसानों का समय और श्रम दोनों बचते हैं। यह मिट्टी को अच्छी तरह भुरभुरी बनाता है, जिससे बीजों का अंकुरण बेहतर होता है। फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाने से जैविक कार्बन बढ़ता है और मिट्टी की उर्वरता में सुधार होता है। इसके अलावा, आधुनिक रोटावेटर विभिन्न प्रकार के ब्लेड के साथ उपलब्ध हैं, जिन्हें मिट्टी की प्रकृति और फसल की आवश्यकता के अनुसार बदला जा सकता है।

कल्टीवेटर और रोटावेटर में क्या अंतर है?

हालांकि दोनों कृषि यंत्र खेत की तैयारी के लिए उपयोग किए जाते हैं, लेकिन इनके कार्य अलग-अलग हैं। कल्टीवेटर मुख्य रूप से मिट्टी को ढीला करने, खरपतवार हटाने और प्रारंभिक जुताई के लिए उपयोग किया जाता है। दूसरी ओर, रोटावेटर मिट्टी को बारीक बनाकर अंतिम बीज क्यारी तैयार करता है और फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाने का कार्य भी करता है। कल्टीवेटर में ईंधन की खपत अपेक्षाकृत कम होती है, जबकि रोटावेटर एक ही बार में अधिक कार्य करने के कारण कुल मिलाकर समय और श्रम की बचत करता है।

किस प्रकार की खेती में कल्टीवेटर अधिक उपयोगी है?

यदि खेत में पहली जुताई करनी हो, खरपतवार हटाने हों या मिट्टी को केवल ढीला करना हो, तो कल्टीवेटर अधिक उपयुक्त रहता है। यह विशेष रूप से गेहूं, चना, सरसों, मक्का और दलहनी फसलों की खेती में उपयोगी माना जाता है।

किन परिस्थितियों में रोटावेटर बेहतर विकल्प है?

यदि किसान कम समय में खेत तैयार करना चाहता है, पिछली फसल के अवशेषों का प्रबंधन करना चाहता है या बुवाई से पहले भुरभुरी मिट्टी तैयार करनी हो, तो रोटावेटर सबसे बेहतर विकल्प माना जाता है। धान, गेहूं, गन्ना, सब्जियों और बागवानी फसलों में इसका उपयोग तेजी से बढ़ रहा है।

क्या दोनों कृषि यंत्रों का एक साथ उपयोग किया जा सकता है?

जी हां, अधिकांश आधुनिक किसान पहले कल्टीवेटर से खेत की गहरी जुताई करते हैं और उसके बाद रोटावेटर चलाकर मिट्टी को भुरभुरी बनाते हैं। इस तरीके से खेत अच्छी तरह तैयार होता है, फसल का अंकुरण बेहतर होता है और उत्पादन में भी वृद्धि देखने को मिलती है।

निष्कर्ष

कल्टीवेटर और रोटावेटर दोनों ही आधुनिक खेती के महत्वपूर्ण कृषि उपकरण हैं। यदि आपका उद्देश्य केवल जुताई और खरपतवार नियंत्रण है, तो कल्टीवेटर बेहतर विकल्प है। वहीं यदि आप कम समय में उच्च गुणवत्ता वाली बीज क्यारी तैयार करना चाहते हैं और फसल अवशेषों का बेहतर प्रबंधन करना चाहते हैं, तो रोटावेटर अधिक लाभदायक साबित होगा। सही कृषि यंत्र का चयन हमेशा मिट्टी के प्रकार, फसल, खेत की स्थिति और

खेती की आवश्यकता को ध्यान में रखकर करना चाहिए। इससे उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ खेती की लागत भी कम की जा सकती है।

यूपी में नलकूप बिजली कनेक्शन हुआ आसान, किसानों को बड़ी राहत

उत्तर प्रदेश के किसानों के लिए राहत भरी खबर है। उत्तर प्रदेश पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड (यूपीपीसीएल) ने निजी नलकूपों के बिजली कनेक्शन की प्रक्रिया को पहले से अधिक आसान, पारदर्शी और किसान हितैषी बनाने के लिए नई व्यवस्था लागू की है। इस फैसले से अब किसानों को बिजली कनेक्शन लेने के दौरान अनावश्यक देरी और बार-बार कार्यालयों के चक्कर लगाने जैसी परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा। नई व्यवस्था का उद्देश्य कनेक्शन प्रक्रिया को सरल बनाना और किसानों को समय पर सिंचाई की सुविधा उपलब्ध कराना है।

सभी वितरण निगमों को जारी किए गए निर्देश

यूपीपीसीएल के चेयरमैन डॉ. आशीष गोयल ने प्रदेश के सभी बिजली वितरण निगमों के प्रबंध निदेशकों को निर्देश जारी करते हुए कहा है कि निजी नलकूप बिजली कनेक्शनों से जुड़ी नई व्यवस्था को तत्काल प्रभाव से लागू किया जाए। उन्होंने अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने के लिए कहा है कि पूरी प्रक्रिया पारदर्शी, तेज और उपभोक्ता हितों के अनुरूप हो, ताकि किसानों को बिना किसी अनावश्यक बाधा के बिजली कनेक्शन मिल सके।

निर्माण सामग्री की कमी से होती थी परेशानी

अब तक निजी नलकूपों के बिजली कनेक्शन के दौरान कई आवश्यक निर्माण सामग्रियों की समय पर उपलब्धता नहीं होने से किसानों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। क्रॉस आर्म होल्डिंग क्लैम्प, स्टे क्लैम्प, एफ-ब्रैकेट, 11 केवी टीपीएमओ सेट, थ्री-फेज फ्यूज सेट, टॉप टी-ऑफ क्लैम्प, एमएस नट-बोल्ट, एलटी शैकल इंसुलेटर, डी-क्लैम्प, डेंजर बोर्ड, बार्ब्ड वायर, स्टोन पैड और एक्सएलपीई आर्मर्ड केबल जैसी सामग्रियों की कमी के कारण कई बार बिजली कनेक्शन का कार्य लंबे समय तक लंबित रहता था। किसानों को इन सामग्रियों के लिए अलग-अलग कार्यालयों के कई चक्कर लगाने पड़ते थे, जिससे समय और पैसे दोनों की हानि होती थी।

दो बड़े फैसलों से मिलेगी राहत

इस समस्या के समाधान के लिए यूपीपीसीएल ने दो महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं। पहला, निजी नलकूप कनेक्शन के लिए आवश्यक निर्माण सामग्री की किट यथासंभव एक साथ उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाएगा, जिससे किसानों को अलग-अलग सामग्री लेने के लिए बार-बार भंडार कार्यालय नहीं जाना पड़े। दूसरा, जिन निर्माण सामग्रियों की आपूर्ति निगम द्वारा नहीं की जाएगी, उनका शुल्क किसानों से धन-मांग पत्र (टीसी) के माध्यम से नहीं लिया जाएगा। इससे किसानों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ भी कम होगा।

स्टीमेट में होगा सामग्री का पूरा विवरण

नई व्यवस्था के तहत निजी नलकूप बिजली कनेक्शन के लिए तैयार किए जाने वाले स्टीमेट में आवश्यक निर्माण सामग्रियों का पूरा विवरण अनिवार्य रूप से दर्ज किया जाएगा। हालांकि इन सामग्रियों की कीमत स्टीमेट में शामिल नहीं की जाएगी, लेकिन किसानों की सुविधा के लिए उनकी अनुमानित मात्रा और संभावित लागत का उल्लेख अवश्य किया जाएगा। इससे किसानों को पहले से ही यह जानकारी मिल जाएगी कि किन सामग्रियों की आवश्यकता होगी और उन पर कितना खर्च आ सकता है।

आवश्यकता पड़ने पर किसान स्वयं करा सकेंगे सामग्री की व्यवस्था

यदि किसी स्थिति में निगम आवश्यक निर्माण सामग्री उपलब्ध नहीं करा पाता है, तो किसान अधिकृत लाइन निर्माण एजेंसी के माध्यम से अपने खर्च पर इन सामग्रियों की व्यवस्था कर सकेंगे। हालांकि बिजली कनेक्शन को चालू करने से पहले विभाग संबंधित निर्माण सामग्री की गुणवत्ता और तकनीकी मानकों की पूरी जांच करेगा, ताकि सुरक्षा और गुणवत्ता से किसी प्रकार का समझौता न हो।

गुणवत्ता और सुरक्षा पर रहेगा विशेष ध्यान

यूपीपीसीएल ने यह भी निर्देश दिए हैं कि लाइन निर्माण के दौरान विद्युत पोल, स्टे, ग्राउटिंग तथा अन्य सभी निर्माण कार्य निर्धारित गुणवत्ता मानकों के अनुसार ही किए जाएं। इसके साथ ही किसानों को जारी किए जाने वाले धन-मांग पत्र (टीसी) के साथ सभी नियम एवं शर्तें भी संलग्न की जाएंगी, जिससे पूरी प्रक्रिया अधिक स्पष्ट, पारदर्शी और उपभोक्ता-अनुकूल बन सके।

किसानों और कृषि क्षेत्र को होगा बड़ा लाभ

यूपीपीसीएल के अनुसार इस नई व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य किसानों को अनावश्यक भागदौड़ और देरी से राहत देना, निजी नलकूपों के विद्युतीकरण की प्रक्रिया में तेजी लाना तथा निर्माण कार्यों की गुणवत्ता सुनिश्चित करना है। इससे किसानों को समय पर बिजली कनेक्शन मिलने में आसानी होगी, सिंचाई व्यवस्था मजबूत होगी और कृषि कार्य अधिक प्रभावी ढंग से किए जा सकेंगे। परिणामस्वरूप प्रदेश में कृषि उत्पादन बढ़ाने और किसानों की आय में सुधार लाने में भी यह पहल महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

सोनालीका ने रचा नया इतिहास, होशियारपुर प्लांट से निकला 20 लाखवां ट्रैक्टर

सोनालीका ने छुआ 20 लाख ट्रैक्टर उत्पादन का ऐतिहासिक मुकाम

सोनालीका ट्रैक्टर्स ने भारतीय ट्रैक्टर उद्योग में एक नया कीर्तिमान स्थापित करते हुए पंजाब के होशियारपुर स्थित अपने इंटीग्रेटेड मैन्युफैक्चरिंग प्लांट से 20 लाखवां ट्रैक्टर तैयार किया है। करीब तीन दशक पहले शुरू हुई कंपनी की विनिर्माण यात्रा का यह एक महत्वपूर्ण पड़ाव माना जा रहा है। इस खास उपलब्धि के अवसर पर कंपनी ने प्लांट में भव्य समारोह आयोजित कर कर्मचारियों, अधिकारियों और प्रबंधन टीम के साथ इस सफलता का जश्न

मनाया। उत्पादन लाइन से निकले 20 लाखवें ट्रैक्टर का विशेष अनावरण किया गया। कंपनी ने इसे केवल उत्पादन का आंकड़ा नहीं, बल्कि उन लाखों किसानों के विश्वास और सहयोग का प्रतीक बताया, जिन्होंने वर्षों से सोनालीका ट्रैक्टर्स को अपनी खेती का भरोसेमंद साथी बनाया है। पूरे प्लांट को आकर्षक ढंग से सजाया गया और कर्मचारियों के योगदान को भी सम्मानित किया गया।

1996 में हुई शुरुआत, लगातार बढ़ता गया उत्पादन

सोनालीका ने वर्ष 1996 में आधुनिक कृषि जरूरतों को ध्यान में रखते हुए ट्रैक्टर निर्माण का सफर शुरू किया था। शुरुआत से ही कंपनी का उद्देश्य किसानों को कम लागत में बेहतर प्रदर्शन करने वाले ट्रैक्टर उपलब्ध कराना रहा। समय के साथ कंपनी ने अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ाई और नई तकनीकों को अपनाते हुए आधुनिक विनिर्माण सुविधाओं का विकास किया।

आज होशियारपुर स्थित इसका इंटीग्रेटेड मैन्युफैक्चरिंग प्लांट दुनिया के सबसे बड़े एकीकृत ट्रैक्टर निर्माण संयंत्रों में शामिल है। यहां अत्याधुनिक तकनीक और सख्त गुणवत्ता नियंत्रण प्रक्रियाओं के साथ विभिन्न हॉर्सपावर श्रेणी के ट्रैक्टर तैयार किए जाते हैं। कंपनी का मानना है कि अनुसंधान, नवाचार और ग्राहकों की जरूरतों के अनुरूप उत्पाद विकसित करने की रणनीति ने उसे देश और विदेश दोनों बाजारों में मजबूत पहचान दिलाई है।

तीन दशक की उपलब्धियों का किया प्रदर्शन

20 लाख ट्रैक्टर उत्पादन के अवसर पर आयोजित समारोह में कंपनी ने अपनी तीन दशक लंबी विनिर्माण यात्रा को भी प्रदर्शित किया। विशेष प्रदर्शनी के माध्यम से 1 लाख, 5 लाख, 10 लाख और अब 20 लाख ट्रैक्टर उत्पादन तक के सफर को दर्शाया गया। समारोह के दौरान अधिकारियों ने कर्मचारियों की मेहनत और समर्पण की सराहना करते हुए कहा कि यह सफलता पूरी टीम के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है। कंपनी ने भविष्य में अत्याधुनिक तकनीकों और वैश्विक गुणवत्ता मानकों के अनुरूप उत्पादन बढ़ाने की प्रतिबद्धता भी दोहराई।

सोशल मीडिया पर बताया 'इन्क्रेडिबल इंडियन सक्सेस स्टोरी'

इस उपलब्धि को कंपनी ने अपने आधिकारिक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर साझा करते हुए इसे "इन्क्रेडिबल इंडियन सक्सेस स्टोरी" बताया। कंपनी के अनुसार यह सफलता नवाचार, ग्राहकों के भरोसे और उसके लोकप्रिय अभियान "जीतने का दम" की सोच का परिणाम है। कंपनी ने कहा कि उसके ट्रैक्टर आज 150 से अधिक देशों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुके हैं। सोशल मीडिया पोस्ट में कर्मचारियों, डीलरों और ग्राहकों का आभार व्यक्त करते हुए कहा गया कि उनके सहयोग के बिना यह मुकाम हासिल करना संभव नहीं था। साथ ही भविष्य में किसानों की जरूरतों के अनुरूप नई तकनीक वाले ट्रैक्टर विकसित करने का भरोसा भी जताया गया।

वैश्विक बाजार में लगातार मजबूत हो रही मौजूदगी

सोनालीका ट्रैक्टर्स आज भारत के प्रमुख ट्रैक्टर निर्माताओं में शामिल है और अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी तेजी से अपनी पहचान मजबूत कर रहा है। कंपनी के ट्रैक्टर एशिया, अफ्रीका, यूरोप, अमेरिका समेत 150 से अधिक देशों में निर्यात किए जाते हैं।

वर्तमान में कंपनी 20 हॉर्सपावर से 120 हॉर्सपावर तक की क्षमता वाले ट्रैक्टर तैयार करती है, जिनका उपयोग कृषि के साथ-साथ व्यावसायिक कार्यों में भी किया जाता है। आधुनिक डिजाइन, बेहतर ईंधन दक्षता और मजबूत इंजन के कारण कंपनी के ट्रैक्टर घरेलू और विदेशी ग्राहकों के बीच लोकप्रिय हैं। अनुसंधान एवं विकास पर लगातार निवेश के जरिए कंपनी बदलती कृषि जरूरतों के अनुरूप नए मॉडल बाजार में उतार रही है।

पहली तिमाही में बिक्री में 23.1 प्रतिशत की बढ़ोतरी

वित्त वर्ष 2026-27 की पहली तिमाही (अप्रैल-जून) में सोनालीका ट्रैक्टर्स ने 53,661 ट्रैक्टरों की बिक्री दर्ज की, जो पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 23.1 प्रतिशत अधिक रही। इस प्रदर्शन के साथ कंपनी घरेलू ट्रैक्टर उद्योग में पहली तिमाही के दौरान सबसे अधिक मार्केट शेयर बढ़ाने वाली कंपनी बनकर उभरी।

कंपनी का कहना है कि बेहतर गुणवत्ता, आधुनिक तकनीक, मजबूत सर्विस नेटवर्क और किसानों के बढ़ते भरोसे ने उसे इस मुकाम तक पहुंचाया है। होशियारपुर प्लांट से 20 लाखवां ट्रैक्टर का निकलना इसी विश्वास और निरंतर प्रगति का प्रतीक है। आने वाले वर्षों में कंपनी नई तकनीकों, टिकाऊ उत्पादों और बेहतर ग्राहक सेवाओं के माध्यम से भारतीय कृषि क्षेत्र में अपना योगदान और मजबूत करने की दिशा में काम करती रहेगी।

गन्ना किसानों के लिए खुशखबरी: सब्सिडी पर मिलेंगे ट्रैक्टर, रोटावेटर समेत आधुनिक कृषि यंत्र

बिहार सरकार की नई पहल: गन्ना किसानों के लिए 34.59 करोड़ रुपये की सब्सिडी

बिहार सरकार ने राज्य में गन्ना खेती को आधुनिक बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए गन्ना यंत्रीकरण योजना को मंजूरी दी है। इस योजना के तहत सरकार ने आधुनिक कृषि यंत्रों की खरीद पर किसानों को अनुदान देने के लिए 34.59 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की है। सरकार का उद्देश्य किसानों को नई तकनीकों से जोड़ना, खेती की लागत कम करना और उत्पादन क्षमता बढ़ाना है। आधुनिक मशीनों के उपयोग से खेती अधिक व्यवस्थित, तेज और लाभदायक होगी। यह योजना राज्य के पात्र गन्ना किसानों को सीधे लाभ पहुंचाने के साथ-साथ कृषि क्षेत्र में तकनीकी बदलाव को भी गति देगी।

गन्ना खेती की चुनौतियों का समाधान बनेगी यंत्रीकरण योजना

पिछले कुछ वर्षों में गन्ना किसानों को बढ़ती मजदूरी, श्रमिकों की कमी और समय पर कृषि कार्य पूरा न होने जैसी कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इन कारणों से खेती की लागत लगातार बढ़ रही है और किसानों का मुनाफा प्रभावित हो रहा है। सरकार का मानना है, कि आधुनिक कृषि यंत्र इन चुनौतियों का प्रभावी समाधान बन सकते हैं।

गन्ना उद्योग विभाग के सचिव धर्मेंद्र सिंह के अनुसार, मशीनों के इस्तेमाल से खेत की जुताई, बुवाई, सिंचाई, खरपतवार नियंत्रण, दवा का छिड़काव और कटाई जैसे कार्य कम समय में अधिक सटीकता के साथ किए जा सकेंगे। इससे श्रम पर निर्भरता घटेगी और खेती अधिक उत्पादक बन सकेगी।

आधुनिक कृषि यंत्रों की खरीद पर मिलेगा सरकारी अनुदान

गन्ना यंत्रीकरण योजना के अंतर्गत किसानों को कई आधुनिक कृषि उपकरणों की खरीद पर सब्सिडी का

लाभ मिलेगा। इनमें ट्रैक्टर, रोटावेटर, ट्रेंचर, गन्ना प्लांटर, स्प्रेयर, हार्वेस्टर तथा खेत की तैयारी और गन्ने की कटाई में उपयोग होने वाले अन्य मशीनरी उपकरण शामिल हैं। विशेष रूप से गन्ना प्लांटर और हार्वेस्टर जैसी मशीनें किसानों का समय और श्रम दोनों बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। वहीं आधुनिक स्प्रेयर और अन्य उपकरणों के उपयोग से फसल की बेहतर देखभाल संभव होगी, जिससे उत्पादन की गुणवत्ता और मात्रा दोनों में सुधार आने की उम्मीद है। इस योजना के माध्यम से सरकार खेती में आधुनिक तकनीकों को बढ़ावा देना चाहती है।

ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया से मिलेगी पारदर्शिता और सुविधा

योजना का लाभ अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाने के लिए बिहार सरकार ने आवेदन प्रक्रिया को पूरी तरह डिजिटल बनाया है। इच्छुक किसान SuMech पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे। आवेदन से लेकर दस्तावेजों के सत्यापन, स्वीकृति और सब्सिडी वितरण तक की पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन होगी।

इससे किसानों को सरकारी कार्यालयों के बार-बार चक्कर लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी और पूरी व्यवस्था अधिक पारदर्शी बनेगी। योजना के प्रभावी संचालन की जिम्मेदारी सहायक निदेशक, ईख विकास को सौंपी गई है, ताकि पात्र किसानों को समय पर अनुदान मिल सके और किसी प्रकार की अनियमितता की संभावना न रहे।

ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया से मिलेगी पारदर्शिता और सुविधा

योजना का लाभ अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाने के लिए बिहार सरकार ने आवेदन प्रक्रिया को पूरी तरह डिजिटल बनाया है। इच्छुक किसान SuMech पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे। आवेदन से लेकर दस्तावेजों के सत्यापन, स्वीकृति और सब्सिडी वितरण तक की पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन होगी। इससे किसानों को सरकारी कार्यालयों के बार-बार चक्कर लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी और पूरी व्यवस्था अधिक पारदर्शी बनेगी। योजना के प्रभावी संचालन की जिम्मेदारी सहायक निदेशक, ईख विकास को सौंपी गई है, ताकि पात्र किसानों को समय पर अनुदान मिल सके और किसी प्रकार की अनियमितता की संभावना न रहे।

किसानों के साथ चीनी उद्योग को भी होगा बड़ा लाभ

गन्ना यंत्रीकरण योजना का असर केवल किसानों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि बिहार के चीनी उद्योग को भी इसका सीधा लाभ मिलेगा। आधुनिक तकनीकों के उपयोग से गन्ने का उत्पादन बढ़ेगा और चीनी मिलों को पर्याप्त मात्रा में गुणवत्तापूर्ण कच्चा माल उपलब्ध हो सकेगा। राज्य सरकार पहले से ही बंद पड़ी चीनी मिलों को दोबारा शुरू करने और नई मिलों की स्थापना के प्रयास कर रही है। यदि गन्ने का उत्पादन लगातार बढ़ता है, तो इससे चीनी उद्योग को मजबूती मिलेगी, ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे और स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी नई गति मिलेगी। इस तरह यह योजना कृषि और उद्योग दोनों क्षेत्रों के लिए लाभकारी साबित हो सकती है।

'समृद्ध उद्योग–सशक्त बिहार' की दिशा में मजबूत कदम

गन्ना यंत्रीकरण योजना बिहार सरकार के 'सात निश्चय-3' कार्यक्रम के तहत 'समृद्ध उद्योग–सशक्त बिहार' के लक्ष्य को आगे बढ़ाने वाली महत्वपूर्ण पहल है। सरकार आधुनिक तकनीक के माध्यम से किसानों की आय बढ़ाने, कृषि लागत घटाने और खेती को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने पर जोर दे रही है। यदि योजना का पारदर्शी और प्रभावी ढंग से क्रियान्वयन किया जाता है, तो आने वाले वर्षों में बिहार गन्ना उत्पादन के क्षेत्र में नई पहचान बना

Global
4WD
Expert
Solis
IN COLLABORATION WITH
YANMAR
INTRODUCING THE
ALL-NEW SOLIS
S90
THE SUPREME POWER OF
ADVANCED JAPANESE TECHNOLOGY
POWERPACK PERFORMER
WITH 12F+12R SPEEDS
NEW S-TECH ENGINE
WITH 90HP HIGH POWER
S-BOOST HYDRAULICS
WITH UPTO 3500KG LIFT CAPACITY
AC CABIN
WITH WIDE & OPEN PLATFORM
Solis
90HP

सकता है। आधुनिक मशीनों का बढ़ता उपयोग न केवल किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत करेगा, बल्कि राज्य की ग्रामीण अर्थव्यवस्था और चीनी उद्योग को भी नई ऊर्जा देगा। यही कारण है कि यह योजना बिहार की कृषि व्यवस्था में दीर्घकालिक बदलाव लाने वाली एक महत्वपूर्ण पहल मानी जा रही है।

भारत की 10 प्रमुख देशी गायों की नस्लें: जानें विशेषताएं, दूध उत्पादन क्षमता और पालन के फायदे

भारत की 10 प्रमुख देशी गायों की नस्लें - जानें, पूरी जानकारी

भारत विश्व के सबसे बड़े पशुधन वाले देशों में से एक है। यहां पशुपालन केवल एक व्यवसाय नहीं बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है। कृषि कार्यों के साथ-साथ पशुपालन किसानों को अतिरिक्त आय प्रदान करता है और उनकी आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाता है। देश में विभिन्न प्रकार की गायों की नस्लें पाई जाती हैं, जिनमें देशी नस्लों का विशेष महत्व है। भारतीय नस्ल की गायें अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता, कम रखरखाव लागत, जलवायु अनुकूलन क्षमता और उच्च गुणवत्ता वाले A2 दूध के लिए जानी जाती हैं। आज के समय में स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता के कारण देशी गायों के दूध की मांग तेजी से बढ़ रही है। A2 दूध को पाचन के लिए बेहतर माना जाता है और इसमें कई आवश्यक पोषक तत्व पाए जाते हैं। यही कारण है कि देशी नस्ल की गायों का पालन किसानों के लिए लाभदायक साबित हो रहा है। आइए भारत की प्रमुख देशी गायों की नस्लों के बारे में विस्तार से जानते हैं।

1. साहीवाल गाय

साहीवाल भारत की सबसे प्रसिद्ध और सर्वाधिक दूध देने वाली देशी नस्लों में से एक मानी जाती है। इसका मूल क्षेत्र वर्तमान पाकिस्तान के पंजाब प्रांत का साहीवाल जिला है, जिसके नाम पर इस नस्ल का नाम रखा गया है। भारत में यह नस्ल मुख्य रूप से पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर भारत के कई हिस्सों में पाई जाती है।

साहीवाल गाय का शरीर मजबूत, त्वचा ढीली और रंग लाल-भूरा या महोगनी लाल होता है। कुछ पशुओं में सफेद धब्बे भी दिखाई देते हैं। इस नस्ल की गायें गर्मी और परजीवी रोगों को सहन करने में सक्षम होती हैं। इनके थन अच्छी तरह विकसित होते हैं, जिससे दुग्ध उत्पादन क्षमता अधिक रहती है।

सामान्य परिस्थितियों में साहीवाल गाय प्रतिदिन 10 से 20 लीटर तक दूध दे सकती है। बेहतर प्रबंधन और संतुलित आहार मिलने पर कई गायें इससे भी अधिक उत्पादन करने में सक्षम होती हैं। डेयरी व्यवसाय के लिए यह नस्ल किसानों की पहली पसंद मानी जाती है।

2. गिर गाय

गिर गाय भारत की सबसे लोकप्रिय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध देशी नस्लों में शामिल है। इसका उद्गम गुजरात के गिर वन क्षेत्र में हुआ है। अपनी उत्कृष्ट दुग्ध उत्पादन क्षमता और मजबूत प्रतिरोधक शक्ति के कारण यह नस्ल ब्राजील, अमेरिका,

मैक्सिको और अन्य देशों में भी काफी लोकप्रिय हो चुकी है।
गिर गाय की पहचान इसके लंबे लटकते कान, उभरे हुए माथे और अर्धचंद्राकार मुड़े हुए सींगों से की जाती है। इसका रंग लाल, सफेद धब्बेदार लाल या गहरा भूरा हो सकता है।
यह नस्ल सामान्यतः प्रतिदिन 15 से 20 लीटर दूध देती है। इसके दूध में वसा की मात्रा लगभग 4.5 से 5 प्रतिशत तक होती है। गिर गायों की रोग प्रतिरोधक क्षमता काफी अच्छी होती है और ये कठिन जलवायु परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करती हैं।

3. लाल सिंधी गाय

लाल सिंधी नस्ल का उद्गम पाकिस्तान के सिंध क्षेत्र में हुआ था, लेकिन वर्तमान में भारत के कई राज्यों में इसका पालन किया जाता है। यह नस्ल अपने उच्च गुणवत्ता वाले दूध और अनुकूलन क्षमता के लिए जानी जाती है।
लाल सिंधी गाय का रंग गहरे लाल से लेकर हल्के लाल और पीले-लाल रंग तक हो सकता है। शरीर मजबूत तथा सींग अपेक्षाकृत छोटे और मोटे होते हैं। कुछ पशुओं के माथे और गर्दन पर सफेद धब्बे भी दिखाई देते हैं।
यह नस्ल औसतन 10 से 15 लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादन कर सकती है। एक दुग्धकाल में इसका कुल दूध उत्पादन 1100 से 2600 किलोग्राम तक हो सकता है। इसके दूध में लगभग 4.5 प्रतिशत वसा पाई जाती है, जिससे यह डेयरी उद्योग के लिए लाभदायक मानी जाती है।

4. हरियाणा गाय

हरियाणा नस्ल उत्तर भारत की प्रमुख दोहरे उद्देश्य वाली नस्ल है। इसका उपयोग दूध उत्पादन के साथ-साथ कृषि कार्यों के लिए शक्तिशाली बैलों के उत्पादन में भी किया जाता है। इस नस्ल का प्रमुख प्रजनन क्षेत्र हरियाणा राज्य और आसपास के इलाके हैं।
हरियाणा गाय का रंग सामान्यतः सफेद या हल्का धूसर होता है। शरीर मजबूत, पैर लंबे और सींग छोटे होते हैं। यह नस्ल कठोर जलवायु में भी आसानी से जीवित रह सकती है।
दूध उत्पादन की बात करें तो हरियाणा गाय प्रतिदिन लगभग 8 से 15 लीटर तक दूध दे सकती है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह नस्ल अपनी सहनशीलता और कम रखरखाव लागत के कारण काफी लोकप्रिय है।

5. कांकरेज गाय

कांकरेज नस्ल गुजरात और राजस्थान की प्रमुख देशी गायों में से एक है। इसका नाम गुजरात के कांकरेज क्षेत्र से लिया गया है। यह नस्ल दूध उत्पादन और कृषि कार्य दोनों के लिए उपयुक्त मानी जाती है।
कांकरेज गाय का रंग सिल्वर ग्रे, आयरन ग्रे या स्टील ब्लैक होता है। इसके बड़े और वीणा के आकार के सींग इसकी विशेष पहचान हैं। शरीर मजबूत और मांसपेशियां विकसित होती हैं।
यह नस्ल सामान्यतः 10 से 15 लीटर दूध प्रतिदिन देती है, जबकि कुछ उच्च गुणवत्ता वाली गायें 18 से 20 लीटर तक दूध देने में सक्षम होती हैं। यह नस्ल गर्मी, टिक जनित रोगों और कई संक्रामक बीमारियों के प्रति अच्छी प्रतिरोधक क्षमता रखती है।

6. हल्लीकर गाय

हल्लीकर नस्ल दक्षिण भारत विशेषकर कर्नाटक राज्य की प्रमुख नस्लों में गिनी जाती है। इसे मैसूर नस्ल के नाम से भी जाना जाता है। यह नस्ल मुख्य रूप से कृषि कार्यों और सीमित दुग्ध उत्पादन के लिए जानी जाती है।
हल्लीकर गाय का रंग सफेद, धूसर या हल्का भूरा होता है। इसके सींग लंबे और पीछे की ओर मुड़े हुए होते हैं। शरीर चुस्त-दुरुस्त और सहनशील होता है।
यह नस्ल प्रतिदिन लगभग 5 से 8 लीटर दूध देती है। हालांकि इसका दुग्ध उत्पादन अन्य नस्लों की तुलना में कम है, लेकिन इसके दूध में वसा की मात्रा अपेक्षाकृत अधिक होती है।

7. बद्री गाय

बद्री गाय उत्तराखंड की एक महत्वपूर्ण देशी नस्ल है, जिसे राज्य की पहली प्रमाणित देशी गाय नस्ल का दर्जा प्राप्त है। यह मुख्य रूप से पर्वतीय क्षेत्रों में पाई जाती है और कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में भी आसानी से जीवन यापन कर सकती है।

बद्री गाय आकार में छोटी, स्वभाव से शांत और कम संसाधनों में जीवित रहने वाली नस्ल है। इसका रंग काला, भूरा, लाल, सफेद या धूसर हो सकता है। इस नस्ल के पशुओं में विशिष्ट कूबड़ और लंबी पूंछ देखी जाती है।

वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार बद्री गाय के दूध में A2 बीटा-केसीन प्रोटीन की मात्रा बहुत अधिक पाई जाती है। यह गाय प्रतिदिन लगभग 1 से 3 लीटर दूध देती है, लेकिन इसके दूध की गुणवत्ता इसे विशेष बनाती है।

8. पुंगनूर गाय

पुंगनूर गाय आंध्र प्रदेश की प्रसिद्ध बौनी नस्ल है और इसे दुनिया की सबसे छोटी गाय नस्लों में से एक माना जाता है। अपने छोटे आकार और कम रखरखाव खर्च के कारण यह किसानों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रही है।

पुंगनूर गाय विभिन्न रंगों में पाई जाती है, जिनमें सफेद, लाल, भूरा और काला प्रमुख हैं। इसका शरीर छोटा लेकिन मजबूत होता है। यह नस्ल सीमित चारे में भी अच्छी तरह जीवित रह सकती है।

यह गाय प्रतिदिन लगभग 3 से 5 लीटर दूध देती है। इसके दूध में वसा की मात्रा लगभग 8 प्रतिशत तक हो सकती है, जो सामान्य गायों की तुलना में काफी अधिक है। यही कारण है कि इसका दूध बाजार में विशेष मांग रखता है।

9. राठी गाय

राठी गाय राजस्थान की एक प्रसिद्ध दुग्ध नस्ल है, जिसका उद्गम बीकानेर और गंगानगर क्षेत्र में माना जाता है। यह नस्ल कठोर मरुस्थलीय परिस्थितियों में भी बेहतर प्रदर्शन करने के लिए जानी जाती है।

राठी गाय का रंग सामान्यतः चितकबरा होता है और इसकी शारीरिक बनावट साहीवाल नस्ल से काफी मिलती-जुलती है। यह नस्ल अत्यधिक गर्मी और सीमित चारे की स्थिति को भी आसानी से सहन कर सकती है।

उचित देखभाल और पोषण मिलने पर राठी गाय प्रतिदिन 10 से 20 लीटर तक दूध देने में सक्षम होती है। यह नस्ल राजस्थान के पशुपालकों के लिए आय का महत्वपूर्ण स्रोत मानी जाती है।

10. थारपारकर गाय

थारपारकर भारत और पाकिस्तान के शुष्क क्षेत्रों में पाई जाने वाली एक प्रमुख देशी नस्ल है। भारत में इसका पालन मुख्य रूप से राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्रों में किया जाता है। यह नस्ल गर्म और शुष्क जलवायु के लिए विशेष रूप से अनुकूलित है।

थारपारकर गाय का रंग सफेद या हल्का धूसर होता है। इसका शरीर मजबूत, पैर सुदृढ़ और त्वचा ढीली होती है। यह नस्ल कम पानी और सीमित चारे में भी अच्छा प्रदर्शन करती है।

थारपारकर गाय प्रतिदिन लगभग 10 से 18 लीटर दूध उत्पादन कर सकती है। इसके दूध की गुणवत्ता अच्छी होती है और यह नस्ल डेयरी तथा प्रजनन दोनों उद्देश्यों के लिए उपयोगी मानी जाती है।

निष्कर्ष

भारत की देशी गायों की नस्लें केवल दूध उत्पादन का स्रोत नहीं हैं, बल्कि देश की कृषि, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और जैव विविधता की महत्वपूर्ण धरोहर भी हैं। साहीवाल, गिर, लाल सिंधी, हरियाणा, कांकरेज, हल्लीकर, बद्री, पुंगनूर, राठी और थारपारकर जैसी नस्लें अपनी विशिष्ट विशेषताओं, रोग प्रतिरोधक क्षमता और उच्च गुणवत्ता वाले A2 दूध के कारण विशेष महत्व रखती हैं।

आज जब स्वास्थ्यवर्धक दूध और टिकाऊ पशुपालन की मांग बढ़ रही है, तब देशी गायों का संरक्षण और संवर्धन पहले से अधिक आवश्यक हो गया है। यदि

किसान वैज्ञानिक पद्धति से इन नस्लों का पालन करें, तो वे डेयरी व्यवसाय से बेहतर आय अर्जित कर सकते हैं और देश की पशुधन संपदा को भी मजबूत बना सकते हैं।किसान वैज्ञानिक पद्धति से इन नस्लों का पालन करें, तो वे डेयरी व्यवसाय से बेहतर आय अर्जित कर सकते हैं और देश की पशुधन संपदा को भी मजबूत बना सकते हैं।

देशी बनाम विदेशी गाय: कौन है बेहतर और कैसे करें सही पहचान?

दुग्ध उत्पादन और पशुपालन से अधिक लाभ कमाने के लिए सही नस्ल की गाय का चयन सबसे महत्वपूर्ण कदम माना जाता है। अक्सर कई पशुपालक केवल गाय की कीमत या तत्काल मिलने वाले दूध की मात्रा देखकर खरीदारी कर लेते हैं, लेकिन बाद में उन्हें पता चलता है कि पशु उनकी जलवायु, प्रबंधन क्षमता या उत्पादन की जरूरतों के अनुरूप नहीं है। ऐसे में आर्थिक नुकसान होने की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए नई गाय खरीदने से पहले उसकी नस्ल, स्वास्थ्य और उत्पादन क्षमता की सही जानकारी होना बेहद जरूरी है। यदि कोई पशुपालक डेयरी व्यवसाय शुरू करना चाहता है, तो उसे देशी, विदेशी और क्रॉसब्रीड गायों के बीच का अंतर समझना चाहिए। सही नस्ल का चयन न केवल दूध उत्पादन बढ़ाता है, बल्कि पशु के रखरखाव की लागत को भी नियंत्रित करता है। अच्छी नस्ल की गाय लंबे समय तक बेहतर उत्पादन देती है और बीमारियों का खतरा भी अपेक्षाकृत कम रहता है। यही कारण है कि विशेषज्ञ हमेशा सलाह देते हैं कि गाय खरीदते समय उसकी नस्ल की पहचान सबसे पहले की जाए।

शारीरिक बनावट से गाय की नस्ल कैसे पहचानें?

गाय की नस्ल पहचानने का सबसे आसान तरीका उसकी शारीरिक बनावट को ध्यान से देखना है। देशी और विदेशी नस्ल की गायों में कई ऐसे बाहरी अंतर होते हैं जिन्हें सामान्य व्यक्ति भी आसानी से पहचान सकता है। देशी गाय की पीठ पर स्पष्ट कूबड़ होता है, जबकि विदेशी नस्ल की गायों में कूबड़ नहीं होता। इसी वजह से देशी गायों को कूबड़धारी और विदेशी गायों को कूबड़ रहित नस्ल कहा जाता है। इसके अलावा देशी गाय की गर्दन अपेक्षाकृत मजबूत और शरीर संतुलित दिखाई देता है। विदेशी नस्ल की गाय का शरीर लंबा और भारी होता है, जिससे वह अधिक दूध उत्पादन के लिए उपयुक्त मानी जाती है। कमर की बनावट में भी अंतर होता है। देशी गाय की कमर हल्की झुकी हुई होती है, जबकि विदेशी गाय की कमर अधिक सीधी और चौड़ी दिखाई देती है। इन सभी विशेषताओं को ध्यान में रखकर किसी भी पशुपालक को गाय की नस्ल पहचानने में काफी आसानी हो सकती है।

सींग, त्वचा और शरीर की संरचना से पहचान के आसान तरीके

गाय की नस्ल पहचानने में उसके सींग, त्वचा और शरीर की संरचना भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। देशी गाय के सींग सामान्यतः ऊपर की ओर उठे हुए या हल्के मुड़े होते हैं, जबकि विदेशी नस्ल की गायों

के सींग सीधे या बाहर की ओर फैले हुए दिखाई देते हैं। इसी प्रकार देशी गाय की त्वचा अपेक्षाकृत मोटी और ढीली होती है। इसके गले के नीचे त्वचा की मोटी परत, जिसे ड्यूलैप कहा जाता है, स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यह विशेषता देशी नस्ल की पहचान का प्रमुख संकेत मानी जाती है। दूसरी ओर विदेशी गाय की त्वचा पतली, मुलायम और कसी हुई होती है। शरीर की ऊंचाई, पूंछ की लंबाई और पुट्ठे की बनावट में भी अंतर देखने को मिलता है। देशी गाय का पुट्ठा हल्का ढलानदार होता है, जबकि विदेशी गाय का पुट्ठा अधिक समतल और चौड़ा दिखाई देता है। इन संकेतों के आधार पर पशुपालक बिना किसी विशेष उपकरण के भी गाय की नस्ल का अनुमान लगा सकते हैं।

थन की बनावट और दूध उत्पादन क्षमता का संबंध

गाय के थन की बनावट उसके दूध उत्पादन की क्षमता का महत्वपूर्ण संकेत मानी जाती है। सामान्यतः विदेशी दुधारू नस्लों का थन बड़ा, विकसित और संतुलित होता है, जिससे उनमें अधिक मात्रा में दूध उत्पादन की क्षमता होती है। वहीं देशी गायों का थन अपेक्षाकृत छोटा होता है, लेकिन उनका दूध अधिक पौष्टिक और वसा युक्त माना जाता है। यदि कोई पशुपालक डेयरी व्यवसाय के लिए गाय खरीद रहा है, तो उसे थनों की स्थिति, आकार और स्वास्थ्य की अच्छी तरह जांच करनी चाहिए। थनों में किसी प्रकार की सूजन, चोट या संक्रमण भविष्य में दूध उत्पादन को प्रभावित कर सकता है। अच्छी नस्ल की स्वस्थ गाय का थन साफ, संतुलित और चारों स्तन समान आकार के होने चाहिए। इसके अलावा दूध निकालते समय पशु का व्यवहार भी महत्वपूर्ण होता है। शांत स्वभाव वाली गाय का दुग्ध उत्पादन और प्रबंधन दोनों आसान होते हैं।

देशी और विदेशी गाय के दूध उत्पादन में क्या अंतर है?

दूध उत्पादन के आधार पर देशी और विदेशी गायों के बीच स्पष्ट अंतर देखा जाता है। सामान्य परिस्थितियों में देशी नस्ल की गाय प्रतिदिन लगभग 6 से 8 किलोग्राम दूध देती है, हालांकि कुछ उन्नत नस्लें इससे अधिक उत्पादन भी कर सकती हैं। दूसरी ओर जर्सी, होल्स्टीन फ्रिजियन (HF) जैसी विदेशी नस्लें प्रतिदिन 15 से 30 किलोग्राम या उससे भी अधिक दूध देने की क्षमता रखती हैं। यही कारण है कि व्यावसायिक डेयरी फार्मों में विदेशी और क्रॉसब्रीड गायों का अधिक पालन किया जाता है। हालांकि केवल दूध की मात्रा ही महत्वपूर्ण नहीं होती। देशी गाय के दूध में वसा (फैट) और कई पोषक तत्व अधिक पाए जाते हैं, जिससे घी, मक्खन, दही और अन्य दुग्ध उत्पादों के लिए इसकी मांग बनी रहती है। इसलिए पशुपालक को अपनी आवश्यकता के अनुसार यह तय करना चाहिए कि उसे अधिक मात्रा में दूध चाहिए या अधिक वसा वाला दूध।

मौसम सहनशीलता और रोग प्रतिरोधक क्षमता में अंतर

भारत जैसे विविध जलवायु वाले देश में गाय की मौसम सहन करने की क्षमता भी बहुत महत्वपूर्ण होती है। देशी नस्ल की गायें भारतीय परिस्थितियों के अनुसार विकसित हुई हैं, इसलिए वे अधिक गर्मी, सर्दी और बदलते मौसम को आसानी से सहन कर लेती हैं। इनमें रोग प्रतिरोधक क्षमता भी अपेक्षाकृत अधिक होती है, जिससे इनके इलाज पर कम खर्च आता है। इनका स्वभाव सामान्यतः शांत होता है और ये सीमित संसाधनों में भी अच्छा प्रदर्शन करती हैं। इसके विपरीत विदेशी नस्ल की गायें अधिक दूध उत्पादन तो करती हैं, लेकिन उन्हें संतुलित आहार, साफ-सुथरा वातावरण और बेहतर प्रबंधन की आवश्यकता होती है। अत्यधिक गर्मी या आर्द्रता का प्रभाव इनके स्वास्थ्य और दूध उत्पादन पर पड़ सकता है। इसलिए विदेशी नस्ल की गाय खरीदने से पहले पशुपालक को अपने क्षेत्र की जलवायु और उपलब्ध संसाधनों का भी ध्यान रखना चाहिए।

भारत की प्रमुख देशी और विदेशी गायों की

नस्लें

भारत में कई उत्कृष्ट देशी नस्लें पाई जाती हैं, जो अपनी सहनशीलता, रोग प्रतिरोधक क्षमता और गुणवत्तापूर्ण दूध के लिए प्रसिद्ध हैं। इनमें गीर, साहिवाल, लाल सिंधी, थारपारकर और राठी प्रमुख हैं। गीर और साहिवाल नस्लें विशेष रूप से अधिक दूध उत्पादन के लिए जानी जाती हैं। वहीं विदेशी नस्लों में जर्सी, होल्स्टीन फ्रिजियन (HF) और ब्राउन स्विस सबसे लोकप्रिय हैं। होल्स्टीन फ्रिजियन दुनिया की सबसे अधिक दूध देने वाली नस्लों में गिनी जाती है, जबकि जर्सी गाय अपेक्षाकृत कम आकार की होने के बावजूद अधिक वसा वाला दूध देती है। वर्तमान समय में कई डेयरी फार्म क्रॉसब्रीड गायों का पालन भी कर रहे हैं। इन क्रॉसब्रीड पशुओं में देशी गायों की सहनशीलता और विदेशी नस्लों की उच्च दूध उत्पादन क्षमता का बेहतर संतुलन देखने को मिलता है। यही कारण है कि आधुनिक डेयरी व्यवसाय में इनकी मांग तेजी से बढ़ रही है।

गाय खरीदते समय किन बातों का रखें विशेष ध्यान?

गाय खरीदते समय केवल उसकी वर्तमान दूध देने की क्षमता देखकर निर्णय लेना सही नहीं माना जाता। पशुपालक को सबसे पहले उसकी नस्ल, उम्र, स्वास्थ्य, पिछले ब्यांत का रिकॉर्ड और टीकाकरण की स्थिति की जांच करनी चाहिए। इसके अलावा गाय के शरीर की बनावट, थनों की स्थिति, चलने-फिरने की क्षमता और स्वभाव का भी निरीक्षण करना जरूरी है। यदि संभव हो तो गाय का दूध निकालकर उसकी मात्रा और गुणवत्ता का भी परीक्षण करना चाहिए। किसी भी प्रकार की बीमारी, लंगड़ापन या थनों में संक्रमण जैसी समस्याओं वाले पशु से बचना चाहिए। विशेषज्ञों की सलाह है कि पशु खरीदते समय पशु चिकित्सक या पशुपालन विशेषज्ञ को साथ ले जाना अधिक सुरक्षित रहता है। सही नस्ल और स्वस्थ गाय का चयन लंबे समय तक बेहतर दूध उत्पादन, कम रखरखाव लागत और अधिक आर्थिक लाभ सुनिश्चित करता है। यदि सोच-समझकर खरीदारी की जाए, तो डेयरी व्यवसाय को सफल और लाभदायक बनाना काफी आसान हो सकता है।

मानसून में पशुओं की देखभाल: बारिश के मौसम में इन उपायों से रखें मवेशियों को स्वस्थ

बरसात का मौसम क्यों बढ़ा देता है पशुओं की परेशानी

मानसून जहां खेतों के लिए नई उम्मीद लेकर आता है, वहीं पशुपालकों के लिए अतिरिक्त सतर्कता का समय भी होता है। लगातार बारिश, अधिक नमी और उमस के कारण गाय, भैंस और अन्य दुधारू पशुओं की सेहत पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस मौसम में उनका पाचन तंत्र कमजोर होने लगता है और रोगों से लड़ने की क्षमता भी कम हो जाती है। ऐसे में यदि पशुओं की उचित देखभाल न की जाए तो वे जल्दी बीमार पड़ सकते हैं, जिससे दूध उत्पादन घटता है और पशुपालकों की आय पर भी असर पड़ता है। इसलिए मानसून के दौरान नियमित निगरानी और वैज्ञानिक तरीके अपनाना बेहद जरूरी

है।

गलघोंटू बीमारी से बचाव के लिए टीकाकरण सबसे प्रभावी उपाय

बरसात के दिनों में गलघोंटू बीमारी सबसे खतरनाक संक्रामक रोगों में गिनी जाती है। यह बीमारी तेजी से फैलती है और इलाज में देरी होने पर पशु की जान भी जा सकती है। संक्रमित पशु को तेज बुखार, भूख न लगना, गले में सूजन और सांस लेने में कठिनाई जैसी समस्याएं होने लगती हैं। कई बार मुंह और नाक से पानी भी निकलने लगता है। पशु चिकित्सकों की सलाह है कि बारिश शुरू होने से पहले या शुरुआती चरण में ही गलघोंटू का टीका अवश्य लगवाना चाहिए। यदि टीकाकरण अभी तक नहीं हुआ है तो जल्द से जल्द नजदीकी पशु चिकित्सालय में संपर्क करना बेहतर रहेगा।

खुरपका-मुंहपका और सर्रा रोग से बचाव के लिए रखें विशेष सतर्कता

मानसून के दौरान खुरपका-मुंहपका (एफएमडी) और सर्रा रोग का खतरा भी काफी बढ़ जाता है। खुरपका-मुंहपका में पशु के मुंह और खुरों में घाव बन जाते हैं, जिससे वह चारा खाना छोड़ देता है और दूध उत्पादन घट जाता है। वहीं सर्रा रोग मक्खियों के जरिए फैलता है और पशुओं को तेजी से संक्रमित कर सकता है। इन बीमारियों से बचने के लिए समय पर टीकाकरण कराना, पशुशाला की साफ-सफाई बनाए रखना और मक्खियों पर नियंत्रण के लिए कीटनाशकों का उपयोग करना जरूरी है। खुरों की नियमित सफाई भी संक्रमण के खतरे को काफी हद तक कम कर देती है।

किलनी और अन्य परजीवियों से बचाना भी उतना ही आवश्यक

बारिश के मौसम में किलनी, जूं और चिचड़े जैसे बाहरी परजीवी तेजी से फैलते हैं। ये पशुओं का खून चूसकर उन्हें कमजोर बना देते हैं और कई गंभीर बीमारियों का कारण भी बनते हैं। पशुपालकों को चाहिए कि वे समय-समय पर पशुओं के शरीर की जांच करें और परजीवी दिखाई देने पर पशु चिकित्सक की सलाह से उपयुक्त दवा का प्रयोग करें। दवा लगाने के बाद कुछ समय तक पशु को नहलाने से बचना चाहिए, ताकि दवा का पूरा प्रभाव मिल सके। साथ ही पशुशाला की नियमित सफाई और कीट नियंत्रण भी बेहद जरूरी है।

कृमिनाशन से बढ़ेगी पशुओं की उत्पादकता

बरसात में पेट के कीड़ों की समस्या अक्सर बढ़ जाती है, जिसका असर छोटे बछड़ों से लेकर बड़े दुधारू पशुओं तक पर पड़ता है। कृमि संक्रमण के कारण बछड़ों का विकास प्रभावित हो सकता है, जबकि बड़े पशुओं में कमजोरी और दूध उत्पादन में गिरावट देखने को मिलती है। विशेषज्ञों के अनुसार जन्म के कुछ दिनों बाद ही बछड़ों को पहली कृमिनाशक दवा दी जानी चाहिए। इसके बाद बड़े पशुओं को भी नियमित अंतराल पर डॉक्टर की सलाह से कृमिनाशक दवा देना लाभदायक रहता है। इससे पशुओं का स्वास्थ्य बेहतर बना रहता है।

स्वच्छ पशुशाला बीमारियों से बचाव की पहली शर्त

बरसात के मौसम में पशुशाला की साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देना चाहिए। यदि फर्श पर पानी जमा रहता है या गंदगी बनी रहती है तो बैक्टीरिया और परजीवी तेजी से पनपने लगते हैं। इसलिए पशुशाला में पानी की निकासी की उचित व्यवस्था होनी चाहिए और गोबर व अन्य कचरे को प्रतिदिन हटाना चाहिए। समय-समय पर कीटाणुनाशक दवाओं का छिड़काव करना भी लाभदायक रहता है। यदि कोई पशु बीमार हो जाए तो उसे अन्य पशुओं से अलग रखना चाहिए, ताकि संक्रमण फैलने से रोका जा सके।

संतुलित पोषण और स्वच्छ पानी से बढ़ती

है रोग प्रतिरोधक क्षमता

मानसून के दौरान पशुओं को केवल साफ, ताजा और गुणवत्तायुक्त चारा ही खिलाना चाहिए। फफूंद लगा या सड़ा हुआ चारा उनके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक साबित हो सकता है। हरे चारे के साथ सूखा चारा, खनिज मिश्रण और संतुलित आहार देने से पशुओं को आवश्यक पोषक तत्व मिलते हैं। इसके अलावा हर समय स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना भी जरूरी है। उचित पोषण मिलने पर पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत रहती है और दूध उत्पादन भी बेहतर बना रहता है।

समय पर इलाज और नियमित देखभाल से होगा अधिक लाभ

मानसून के मौसम में पशुओं की छोटी-सी समस्या को भी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। यदि किसी पशु में बुखार, सुस्ती, भूख कम लगना, सांस लेने में कठिनाई या दूध उत्पादन में अचानक कमी दिखाई दे तो तुरंत पशु चिकित्सक से सलाह लेनी चाहिए। समय पर इलाज से बीमारी गंभीर नहीं होती और पशु जल्दी स्वस्थ हो जाता है। नियमित टीकाकरण, कृमिनाशन, परजीवी नियंत्रण, साफ-सफाई और संतुलित आहार अपनाकर पशुपालक अपने पशुओं को पूरे बरसात के मौसम में स्वस्थ रख सकते हैं। इससे डेयरी उत्पादन बढ़ता है और आर्थिक नुकसान की संभावना भी काफी कम हो जाती है।

मेरीखेती किसान पंचायत जुलाई 2026 का शानदार आयोजन

मेरीखेती किसान पंचायत जुलाई 2026

मेरीखेती द्वारा उत्तरप्रदेश के हापुड़ जनपद में डा. रविन्द्र पड़ारिया संयुक्त निदेशक (प्रसार), आईसीएआर-आईएआरआई की अध्यक्षता में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के सौजन्य से आयोजित कार्यक्रम में हुई मेरीखेती किसान पंचायत में खेती किसानी से संबंधित कई सारी महत्वपूर्ण सीजनल फसलों की तैयारी और समस्याओं पर किसान एवं कृषि वैज्ञानिकों के बीच विचार विमर्श किया गया। मेरीखेती किसान पंचायत के दौरान बहुत सारे वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक, कृषि विशेषज्ञ, कृषि क्षेत्र के उघोगपति एवं किसान उपस्थित रहे। चलिए जानते हैं, मेरीखेती की जुलाई 2026 में हुई मासिक किसान पंचायत में क्या कुछ खास रहा है। मेरीखेती किसान पंचायत के दौरान खरीफ फसलों के लिए उत्तम प्रबंधन पद्धतियों पर काफी व्यापक रूप से चर्चा हुई।

मेरीखेती किसान पंचायत में जिन प्रमुख

बातों पर चर्चा हुई वह निम्नलिखित हैं:-

खेत की तैयारी

खरीफ फसलों जैसे धान, मक्का और सोयाबीन की सफल खेती के लिए खेत की उचित तैयारी सबसे महत्वपूर्ण चरण है। मानसून की पहली अच्छी वर्षा के बाद मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई करनी चाहिए। इससे मिट्टी में हवा का संचार बढ़ता है, पुराने खरपतवार और पिछली फसल के अवशेष नष्ट हो जाते हैं तथा कीट एवं रोगों का प्रकोप कम होता है। इसके बाद कल्टीवेटर या हैरो चलाकर मिट्टी को भुरभुरी बनाना चाहिए ताकि बीजों का अंकुरण समान रूप से हो सके। खेत का समतलीकरण भी आवश्यक है, क्योंकि असमतल खेत में कहीं अधिक पानी भर जाता है तो कहीं नमी की कमी हो जाती है। विशेष रूप से मक्का और सोयाबीन जैसी फसलों के लिए खेत में उचित जल निकासी की व्यवस्था करना अत्यंत आवश्यक है, ताकि जड़ों में सड़न न हो और पौधों का विकास स्वस्थ रूप से हो सके।

प्रमाणित बीजों का चयन और बीज उपचार

अच्छी गुणवत्ता वाले प्रमाणित बीज अधिक उत्पादन की आधारशिला होते हैं। किसान हमेशा कृषि विभाग, कृषि विज्ञान केंद्र या अधिकृत संस्थानों से प्रमाणित बीज ही खरीदें। प्रमाणित बीजों में अंकुरण क्षमता अधिक होती है तथा रोगों और कीटों का प्रभाव अपेक्षाकृत कम होता है। बुवाई से पहले बीजों का उपचार करना भी अत्यंत आवश्यक है। बीजों को ट्राइकोडर्मा, कार्बेन्डाजिम या अन्य अनुशंसित फफूंदनाशकों से उपचारित करने से बीज जनित रोगों से सुरक्षा मिलती है। दलहनी फसलों के लिए राइजोबियम कल्चर तथा फास्फेट घुलनशील जीवाणु (पीएसबी) का उपयोग करने से पौधों की वृद्धि बेहतर होती है और नाइट्रोजन स्थिरीकरण में सहायता मिलती है। बीज उपचार से अंकुरण अच्छा होता है, पौधे स्वस्थ रहते हैं और उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

संतुलित पोषक तत्व एवं उर्वरक प्रबंधन

खरीफ फसलों में अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। सबसे पहले खेत की मिट्टी का परीक्षण कराना चाहिए, जिससे यह पता चल सके कि मिट्टी में कौन-कौन से पोषक तत्वों की कमी है। मृदा परीक्षण की रिपोर्ट के आधार पर ही नाइट्रोजन (N), फास्फोरस (P) और पोटाश (K) का संतुलित उपयोग करना चाहिए। सूक्ष्म पोषक तत्व जैसे जिंक, सल्फर और बोरॉन की कमी वाले क्षेत्रों में इनका प्रयोग भी आवश्यक होता है। रासायनिक उर्वरकों के साथ-साथ गोबर की सड़ी हुई खाद, वर्मीकम्पोस्ट तथा हरी खाद का उपयोग मिट्टी की संरचना और उर्वरता में सुधार करता है। जैविक खाद मिट्टी में लाभकारी सूक्ष्मजीवों की संख्या बढ़ाती है, जिससे पौधों को लंबे समय तक पोषक तत्व उपलब्ध होते रहते हैं और भूमि की उत्पादकता बनी रहती है।

जल प्रबंधन और वर्षा जल संरक्षण

खरीफ फसलें मुख्य रूप से मानसूनी वर्षा पर निर्भर करती हैं, इसलिए जल प्रबंधन का विशेष महत्व है। वर्षा के पानी को खेत में अधिक समय तक बनाए रखने के लिए मजबूत मेड़बंदी करनी चाहिए। इससे मिट्टी की नमी लंबे समय तक बनी रहती है और सिंचाई की आवश्यकता कम होती है। वहीं, अत्यधिक वर्षा की स्थिति में अतिरिक्त पानी को खेत से बाहर निकालने के लिए नालियों की व्यवस्था करना आवश्यक है।

धान को छोड़कर अधिकांश खरीफ फसलें जैसे मक्का, सोयाबीन और कपास जलभराव को सहन नहीं कर पातीं। इसलिए जल निकासी की उचित व्यवस्था पौधों की जड़ों को सुरक्षित रखती है और फसल को नुकसान से बचाती है। वर्षा जल संचयन एवं वैज्ञानिक जल प्रबंधन अपनाकर किसान कम लागत में बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।

खरपतवार नियंत्रण की वैज्ञानिक तकनीक

खरपतवार खरीफ फसलों के साथ पोषक तत्व, पानी

और प्रकाश के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं, जिससे उत्पादन में भारी कमी आती है। इसलिए समय पर खरपतवार नियंत्रण करना आवश्यक है। बुवाई के लगभग 15 से 20 दिन बाद पहली निराई-गुड़ाई करनी चाहिए, जिससे खरपतवार नष्ट हो जाते हैं और मिट्टी भुरभुरी बनती है। आवश्यकता पड़ने पर दूसरी निराई भी करनी चाहिए। मल्चिंग का उपयोग करने से खरपतवारों की वृद्धि कम होती है और मिट्टी की नमी भी सुरक्षित रहती है। यदि खरपतवारों का प्रकोप अधिक हो तो कृषि विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार उपयुक्त शाकनाशियों का प्रयोग करना चाहिए। वैज्ञानिक तरीके से खरपतवार नियंत्रण करने से पौधों को पर्याप्त पोषण मिलता है और फसल का विकास तेजी से होता है।

कीट एवं रोग प्रबंधन की समेकित पद्धति

खरीफ मौसम में अधिक नमी और तापमान के कारण कीट एवं रोगों का प्रकोप बढ़ जाता है। इसलिए समेकित कीट एवं रोग प्रबंधन (आईपीएम) अपनाना सबसे प्रभावी उपाय माना जाता है। खेत में पक्षियों के बैठने के लिए 'टी' या 'वाई' आकार की खूंटियां लगाने से हानिकारक कीटों की संख्या कम होती है। फेरोमोन ट्रैप और पीले स्टिकी ट्रैप का उपयोग भी कीटों की निगरानी और नियंत्रण में प्रभावी है। खेत का नियमित निरीक्षण करते रहना चाहिए ताकि रोगों और कीटों की पहचान शुरुआती अवस्था में ही हो सके। यदि कीटों का प्रकोप आर्थिक क्षति स्तर से अधिक हो जाए, तभी अनुशंसित कीटनाशकों जैसे इमिडाक्लोप्रिड आदि का निर्धारित मात्रा में छिड़काव करना चाहिए। संतुलित एवं वैज्ञानिक कीट प्रबंधन से लागत कम होती है और पर्यावरण भी सुरक्षित रहता है।

अंतरा फसलीकरण और फसल चक्र का महत्व

भूमि की उर्वरा शक्ति बनाए रखने और जोखिम कम करने के लिए अंतरा फसलीकरण तथा फसल चक्र अपनाना अत्यंत लाभदायक है। अंतरा फसलीकरण में एक मुख्य फसल के साथ दूसरी फसल निश्चित कतारों में लगाई जाती है, जैसे सोयाबीन के साथ अरहर या मक्का के साथ उड़द। इससे भूमि का बेहतर उपयोग होता है, खरपतवारों का दबाव कम होता है और किसानों को अतिरिक्त आय प्राप्त होती है। साथ ही, विभिन्न फसलों के कारण कीट एवं रोगों का प्रकोप भी कम होता है। लगातार एक ही फसल उगाने से मिट्टी में पोषक तत्वों की कमी हो जाती है, इसलिए फसल चक्र अपनाना आवश्यक है। फसल परिवर्तन से मिट्टी की उर्वरा शक्ति बनी रहती है, जैव विविधता बढ़ती है और दीर्घकालीन उत्पादन क्षमता में सुधार होता है।

वैज्ञानिक देखभाल से बंपर उत्पादन

खरीफ फसलों में अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए केवल बुवाई करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि पूरी फसल अवधि में वैज्ञानिक प्रबंधन अपनाना आवश्यक है। खेत की समय-समय पर निगरानी, संतुलित उर्वरक प्रबंधन, उचित जल निकासी, समय पर खरपतवार नियंत्रण और कीट-रोगों की रोकथाम से फसल स्वस्थ रहती है। किसानों को कृषि विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार आधुनिक कृषि तकनीकों, उन्नत बीजों और जैविक उपायों का अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए। साथ ही, मौसम की जानकारी के आधार पर कृषि कार्य करने से जोखिम कम होता है और उत्पादन में वृद्धि होती है। यदि किसान इन सभी वैज्ञानिक प्रबंधन पद्धतियों को समग्र रूप से अपनाते हैं, तो धान, मक्का, सोयाबीन तथा अन्य खरीफ फसलों से अधिक उपज प्राप्त कर सकते हैं, उत्पादन लागत कम कर सकते हैं और अपनी आय में उल्लेखनीय वृद्धि सुनिश्चित कर सकते हैं।

मेरीखेती किसान पंचायत में कौन-कौन उपस्थित रहा

मेरीखेती किसान पंचायत में शामिल हुए वैज्ञानिकों में पूसा के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ रविंद्र पडारिया, डॉ कुमार कांत सिंह, डॉ नफीस अहमद, डॉ श्रवण सिंह, डॉ इंदू चोपड़ा, डॉ बिष्णु एम बाशयाल, डॉ रेणु सिंह, डॉ रजना एस, डॉ अरविंद कुमार, डॉ हरित कुमार, डॉ गौरव प्रकाश, डॉ योगेंद्र कुमार आदि शामिल रहे। साथ ही, असरा, हापुड़ के ग्राम प्रधान श्री सोहनवीर सिंह सहित अन्य ग्राम पंचयतों के ग्राम प्रधान रोहित प्रधान, शिवलाल प्रधान, जय भगवान प्रधान शामिल रहे। वहीं, अश्वनी, नीरज, तेज सिंह, भूपेंद्र, रविंद्र, गिरधारी लाल जी, अरुण कुमार, जॉनी और कपिल आदि प्रगतिशील किसान भी मौजूद रहे।

MERIKHETI

किसानो की बात
मेरी खेती के साथ

www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501
Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010